وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا
اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ (نسآء ٩٤)

"अगर ये लोग जब उन्होंने अपने नफ़स पर ज़ुल्म कर लिया था, आपके पार आ जाते और आ कर अल्लाह जल्ल शानुहू से माँफ़ी मांग लेते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उनके लिये माफ़ी मांगते तो ज़रूर हक़ तआला शानुहू को तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला पाते।"

इसके बाद उस बद्दू ने कहा कि बेशक मैंने अपने नफ़स पर ज़ुल्म किया है और अब मैं आपके पास मग़्फ़िरत का तालिब बन कर हाजिर हुआ हूँ इस पर क़ब्रे अत्हर से आवाज़ आयी कि बेशक तुम्हारी मग़्फ़िरत हो गयी। *(हावी)*

18. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब दुश्मनों ने हज़रत उस्मान को महसूर कर रखा था, मैं उनकी ख़िदमत में सलाम के लिये हाज़िर हुआ तो फ़रमाने लगे कि भाई, बहुत अच्छा क्या आये। मैंने इस खिड़की में से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, उस्मान तुम्हें इन लोगों ने महसूर कर रखा है। मैंने अर्ज़ किया जी, कर रखा है। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हें प्यासा कर रखा है? (कि उन लोगों ने पानी अंदर जाना बंद कर दिया था) मैंने अर्ज़ किया जी हां, इस पर हुज़ूर सल्ल॰ ने एक डोल पानी का लटकाया, जिसमें से मैंने पानी पिया। इस पानी की ठंडक अब तक मेरे दोनों शानों और दोनों छातियों के दर्मियान महसूस हो रही है। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम चाहो तो इनके मुक़ाबले में तुम्हारी मदद की जाये और तुम्हारा दिल चाहे तो यहां हमारे पास ही आकर इफ़्तार कर लेना। मैंने अर्ज़ कर दिया कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िरी ही चाहता हूँ। उसी दिन शहीद कर दिये गये। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु॰ *(हावी)*

19. मक्का मुकर्रमा में एक बुज़ुर्ग, जिनको इब्ने साबित रह॰ कहा जाता था रहते थे। साठ साल तक हर साल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये भी हाज़िर हुआ करते थे और ज़ियारत करके वापस आ जाते।एक साल किसी आरिज़ की वजह से हाज़िर न हो सके। कुछ ग़ुनूदगी की हालत में अपने हुजरे में बैठे थे कि हुज़ूर सल्ल॰ की ज़ियारत की, हुज़ूर सल्ल॰

ने इर्शाद फ़रमाया कि, इब्ने साबित, तुम हमारी मुलाक़ात को न आये इस लिये हम तुमसे मिलने आये हैं।

(हावी)

20. हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माने में एक मर्तबा मदीना तैयबा में क़हत पड़ा। एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, आपकी उम्मत हलाक हो रही है। अल्लाह तआला से बारिश मांग दीजिये। उन्होंने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। इर्शाद फ़रमाया कि उमर (रज़ि॰) से मेरा सलाम कह दो और यह कह दो कि बारिश होगी और यह भी कह देना कि (अलैक अल् कैस अल् कैस) "होशमंदी और होशियारी को मज़बूत पकड़ें"। वह शख़्स हज़रत उमर रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पयाम पहुँचाया। हज़रत उमर रज़ि॰ सुन कर रोने लगे और अर्ज़ किया या अल्लाह, मैं अपनी क़ुदरत के बक़द्र तो कोताही नहीं करता।

(वफ़ाउल वफ़ा)

21. मुहम्मद बिन मुन्कदिर रह॰ कहते हैं कि एक शख़्स ने मेरे वालिद के पास अस्सी अशर्फ़ियां अमानत रखीं और यह कह कर जिहाद में चला गया कि अगर ज़रूरत पड़े तो ख़र्च कर लेना, मैं वापस आकर ले लूँगा। उनके जाने के बाद मदीना मुनव्वरा में ज़्यादा तंगी पेश आयी। मेरे वालिद ने वे ख़र्च कर डालीं। जब वह वापस आये तो उन्होंने अपनी रक़म तलब की। वालिद साहब ने कल का वायदा कर लिया और रात को क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर होकर आजिज़ी की। कभी क़ब्र शरीफ़ के क़रीब दुआ करते, कभी मिंबर शरीफ़ के मुत्तसिल तमाम रात यों ही गुज़र गयी। सुबह के क़रीब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर के क़रीब दुआ कर रहे थे कि अंधेरे में एक शख़्स की आवाज़ सुनी, वह कह रहे हैं, अबू मुहम्मद, यह ले लो, मेरे वालिद ने हाथ बढ़ाया तो उन्हें एक थैली दी, जिसमें अस्सी अशर्फ़ियां थीं।

(वफ़ा)

22. अबू बक्र बिन अल मुक़री रह॰ कहते हैं कि मैं और इमाम तबरानी और अबुश्शैख़ रह॰ मदीना तैयबा में हाज़िर थे, खाने को कुछ मिला नहीं, रोज़े पर रोज़ा रखा। जब रात हुई, इशा के क़रीब मैं क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, भूख, यह अर्ज़ करके मैं लौट आया। मुझ से अबुल क़ासिम रह॰ कहने लगे कि बैठ जाओ, या तो कुछ खाने को आयेगा या मौत आयेगी।

(तबरानी)

इब्ने मुन्कदिर रह॰ कहते हैं कि मैं और अबुश् शैख़ तो खड़े हो गये। तबरानी वहीं बैठे कुछ सोचते रहे, कि दफ़्अतन एक अलवी ने दरवाज़ा खटखटाया, हमने किवाड़ खोले तो उनके साथ दो गुलाम थे और उन दोनों के हाथ में एक एक बहुत बड़ी ज़ंबील थी, जिसमें बहुत कुछ था। हम तीनों ने खाया, ख़्याल था कि यह बचा हुआ ये गुलाम खायेंगे मगर वे सब कुछ वहीं छोड़ गये और वह अलवी कहने लगे कि तुम ने हुज़ूर सल्ल॰ से शिकायत की। मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने हुक्म फ़रमाया कि मैं तुम्हारे पास कुछ पहुंचाऊं? *(वफ़ा)*

23. इब्ने जिला रह॰ कहते हैं कि मैं मदीन तैयबा हाज़िर हुआ। मुझ पर फ़ाक़ा था। मैं क़ब्र शरीफ़ के क़रीब हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया हुज़ूर, मैं आपका मेहमान हूँ। मुझे कुछ गुनूदगी सी आ गयी तो मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझे एक रोटी मरहमत फ़रमायी, मैंने आधी खायी और जब मैं जागा तो आधी मेरे हाथ में थी। *(वफ़ा)*

इससे क़ब्ल नं॰ 8 पर शैख़ अबुल ख़ैर अक़्तअ् रह॰ का क़िस्सा इस जैसा गुज़र चुका, वह दूसरा क़िस्सा है।

24. सूफ़ी अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अबी ज़रआ रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं अपने वालिद और अबू अब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ रह॰ के साथ मक्का मुकर्रमा हाज़िर हुआ। बड़ी सख़्त तंगी थी, फ़ाक़ा बहुत सख़्त हो गया था, इसी हालत में हम मदीना तैयबा हाज़िर हुए और खाली पेट ही रात गुज़ारी। मैं उस वक़्त तक ना बालिग़ था। बार बार वालिद के पास जाता और भूख की शिकायत करता। मेरे वालिद उठ कर क़ब्र शरीफ़ के क़रीब हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मैं आज आप का मेहमान हूँ। यह अर्ज़ करके वहीं मुराक़बे में बैठ गये। थोड़ी देर बाद मुराक़बे से सर उठाया और सर उठाने के बाद कभी रोने लगते कभी हंसने लगते किसी ने इसका सबब पूछा तो कहने लगे कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। आपने मेरे हाथ में चंद दिरम रख दिये, हाथ खोला तो उसमें दिरम रखे हुए थे। सूफ़ी जी कहते हैं कि हक़ तआला शानुहू ने उनमें इतनी बरकत फ़रमायी कि हमने शीराज़ लौटने तक उसी में से ख़र्च किया। *(वफ़ा)*

25. शैख़ अहमद बिन मुहम्मद सूफ़ी रह॰ कहते हैं कि मैं जंगल में तेरह

माह तक हैरान व परेशान फिरता रहा। मेरे बदन की खाल भी छिल गयी। मैं उसी में मदीना तैयबा हाज़िर हुआ और रौज़ा-ए-अक़्दस पर हाज़िर होकर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में और हज़राते शैख़ैन की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया। इसके बाद मैं सो गया। मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। इर्शाद फ़रमाया अहमद, तुम आये, मैंने अर्ज़ किया जी हुज़ूर, हाज़िर हुआ हूँ और मैं भूखा भी हूँ, आप का मेहमान हूँ, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अपने दोनों हाथ खोलो। मैंने दोनों हाथ खोल दिये। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको दराहिम से भर दिया। मेरी जब आंख खुली तो दोनों हाथ दराहिम से भरे हुए थे। मैंने उसी वक़्त रोटी और फ़ालूदा ख़रीदा और खा कर जंगल चल दिया। *(वफ़ा)*

26. साबित बिन अहमद अबुल क़ासिम बग़दादी रह॰ फ़रमाते हैं कि उन्होंने एक मुअज़्ज़िन को देखा कि वह मदीना पाक में मस्जिदे नबवी में सुबह की अज़ान दे रहे थे। अज़ान में मुअज़्ज़िन ने कहा, "अस्सलातु ख़ैरूम् मिनन्नौ-मि" तो एक ख़ादिम ने आकर उनके थप्पड़ मार दिया वह मुअज़्ज़िन रोया और अर्ज़ करने लगा या रसूलल्लाह, आपकी मौजूदगी में मेरे साथ यह हो रहा है। उस ख़ादिम पर फ़ालिज गिर गया लोग उसको उठा कर उसके घर ले गये, और तीन दिन बाद वह मर गया। *(वफ़ा)*

27. सैय्यद अबू मुहम्मद अब्दुस्सलाम हुसैनी रह॰ कहते हैं कि मैं मदीना तैयबा में था। तीन दिन तक कुछ खाने की नौबत न आयी। मैंने मिंबर शरीफ़ के क़रीब जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ी इसके बाद मैंने कहा, दादा अब्बा, मुझे भूख लग रही है और मेरा दिल सरीद खाने को चाहता है। इसके बाद मैं सो गया। थोड़ी देर गुज़री थी कि एक शख़्स ने आकर मुझे जगाया और लकड़ी के एक प्याले में सरीद, उसमें खूब घी और गोश्त और बहुत सी खुश्बूएं पड़ी हुई थीं, मुझे दिया। मैंने पूछा कि यह कहां से आया है। वह कहने लगे कि मेरे बच्चे तीन दिन से इसका तक़ाज़ा कर रहे थे। आज मुझे कुछ मुक़द्दर से मिल गया था, इसलिये मैंने पकाया था। फिर पका कर मैं सो गया, तो मैंने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि तेरे एक भाई ने इसकी तमन्ना मुझ से की है, इसमें से उसको भी खिलाना। *(वफ़ा)*

28. शैख़ अब्दुस्लाम बिन अबिल क़ासिम सक़ली रह॰. कहते हैं कि मुझ से एक शख़्स ने यह बयान किया कि मैं मदीना तैयबा में हाज़िर था। मेरे पास कोई

चीज़ नहीं थी, जिससे मैं बहुत ज़ईफ़ हो गया। मैं हुजरा शरीफ़ा पर हाज़िर हुआ और हाज़िर होकर मैंने अर्ज़ किया, ऐ अव्वलीन व आख़िरीन के सरदार, मैं मिस्र का रहने वाला हूँ। मैं पांच महीने से ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हूँ। अल्लाह जल्ल शानुहू से और आप से सवाल करता हूँ कि किसी ऐसे शख़्स को मुतय्यन फ़रमा दीजिये जो मेरे खाने की ख़बर ले लिया करे या मेरे जाने का इंतिज़ाम कर दे। फिर मैंने और दुआयें मांगीं और मिंबर शरीफ़ के पास जाकर बैठ गया। दफ़्अतन मैंने देखा कि एक शख़्स हुजरा-ए-शरीफ़ा के पास हाज़िर हुए और कुछ बोल रहे हैं। उसमें ऐ मेरे दादे, ऐ मेरे दादे, भी कह रहे है। फिर वह साहब वहां से मेरे पास आये और मेरा हाथ पकड़ कर कहा, उठो। मैं उठ कर उनके साथ हो लिया। वह मुझे साथ लेकर बाबे जिब्रील से निकले और बक़ीअ् में से निकल कर बाहर एक ख़ेमे में ले गये। उसमें एक बांदी और एक ग़ुलाम थे। उनसे जाकर कहा उठो, अपने मेहमान के लिये खाना तैयार करो। ग़ुलाम ने लकड़ियां इकट्ठी करके आग जलायी और बांदी ने आटा पीस कर मलता (एक ख़ास क़िस्म की रोटी) तैयार की और मेज़बान ने इतनी देर मुझे बातों में लगाये रखा। जब वह तैयार हो गयी तो बांदी ने लाकर उसको आधी आधी करके दो जगह रखी, फिर घी का डिब्बा लाकर उन दोनों टुकड़ों पर बहा दिया। इसके बाद सैहानी खजूरें जो बहुत बड़ी बड़ी आला क़िस्म की खजूरें होती हैं, वे बहुत सी रखीं। फिर मुझसे कहा खाओ। मैंने खाया, उसने तक़ाज़ा किया कि और खाओ। मैंने और खाया। फिर उसने तक़ाज़ा किया, मैंने कहा मेरे सरदार, मैंने कई महीने से गेहूँ नहीं खाया था और नहीं खाया जाता, उसने मेरे पास से जो बचा था, वह भी और जो दूसरा टुकड़ा रखा हुआ था, वह एक ज़ंबील में रखा और दो साअ् ख़जूर जो तक़रीबन सात सेर पुख़्ता हुईं, उस जंबील में रखकर मुझसे दर्याफ़्त किया कि तुम्हारा नाम क्या है? मैंने नाम बताया कहने लगे, तुम्हें खुदा की क़सम, फिर कभी दादा अब्बा से शिकायत न करना, उनको इससे बहुत तक्लीफ़ होती है, जब तक तुम्हारे जाने की सूरत निकले, उस वक़्त तक जब तुम्हें ज़रूरत होगी, खाना वहीं तुम्हारे पास पहुँच जाया करेगा। यह कह कर अपने ग़ुलाम से कहा कि यह जंबील लेकर इनके साथ जाओ और इनको मय इस ज़ंबीज के हुजरा-ए-शरीफ़ा तक पहुँचा कर आओ। मैं ग़ुलाम के साथ चला। बक़ीअ् में पहुँच कर मैंने ग़ुलाम से कहा, कि बस मैं रास्ते पर पहुँच गया अब तुम वापस चले जाओ। ग़ुलाम ने कहा अल्लाहु वाहिद, मुझे इसकी क़ुदरत नहीं कि आपको हुजरा-ए-शरीफ़ा तक पहुँचाने से पहले वापस हूँ।

कभी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे सरदार को इस की न ख़बर कर दें। उसने मुझे हुजरा-ए-शरीफ़ा तक पहुँचाया। मैं चार दिन तक उस ज़ंबील से खाता रहा। जब वह ख़त्म हो गयी और मुझे भूख मालूम हुई तो वही गुलाम मुझे और खाना दे गया। इसी तरह होता रहा, यहां तक कि एक क़ाफ़िला यंबूअ् जाने वाला तैयार हो गया और मैं उसके साथ यम्बूअ् चला गया। *(वफ़ा)*

29. अबुल अब्बास बिन नफ़ीस मुक़री रह॰ जो नाबीना भी थे, कहते हैं कि मैं तीन दिन मदीना तैयबा में भूखा रहा, तो मैं क़ब्र शरीफ़ पर यह अर्ज़ करके कि हुज़ूर सल्ल॰ मैं भूखा हूँ। ज़ोअ्फ़ की हालत में सो गया। एक लड़की आयी और पांव से मुझे हरकत देकर जगाया और कहा चलो, मैं साथ हो लिया। वह अपने घर ले गयी और गेहूँ की रोटी और घी और खजूरें मेरे सामने रख कर कहने लगी कि अबुल अब्बास, खाओ, मुझे मेरे दादा ने इसका हुक्म फ़रमाया है और जब भूख लगा करे, यहां आकर खा जाया करो।

अबू सुलैमान दाऊद रह॰ इस क़िस्से को नक़ल करके लिखते हैं कि इस क़िस्म के वाक़िआत बहुत कसरत से नक़ल किये गये हैं और उनमें बकसरत यह देखा गया कि इस क़िस्म का हुक्म हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी शरीफ़ औलाद ही को ज़्यादातर फ़रमाया है बिलखुसूस जब कि खाने की क़िस्म की कोई चीज़ देने का इर्शाद हुआ हो, और करीमों की आदत भी यही होती है कि जब कोई शख़्स ज़ियाफ़त तलब करे तो अपने ही घर से इब्तिदा फ़रमाया करते हैं। इसी ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ आं हज़रत सल्ल॰ ने भी अक्सर खाने का हुक्म अपनी ही औलाद को फ़रमाया है। *(वफ़ा)*

30. बाज़री रह॰ ने "तौसीक़ु उरल इमान" में अबुन्नोमान रह॰ से नक़ल किया है कि ख़ुरासान के रहने वाले एक साहब हर साल हज को जाया करते और जब मदीना तैयबा हाज़िर होते तो सय्यद ताहिर अलवी रह॰ की ख़िदमत में भी नज़्राना पेश किया करते। एक साहब ने, जो मदीना ही के रहने वाले थे, इन ख़ुरासानी से एक मर्तबा यह कहा कि तुम ताहिर अलवी को जो कुछ देते हो, वह ज़ाया करते हो। वह उसको गुनाहों में ख़र्च कर देता है, ख़ुरासानी ने उस साल ताहिर साहब को कुछ न दिया और दूसरा साल भी ऐसे ही गुज़र गया कि वह अपनी आदत के मुवाफ़िक़ जो कुछ लेकर आये थे वह अहले मदीना को तक़्सीम कर गये और ताहिर साहब को कुछ न दिया। जब तीसरे साल वह हज के इरादे से अपने घर से चलने लगे तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

ज़ियारत ख़्वाब में हुई। हुज़ूरे सल्ल० ने तंबीह फ़रमायी कि तूने ताहिर अलवी के बारे में उसके मुख़ालिफ़ की बात का यक़ीन कर लिया और जो तू उस को दिया करता था, वह बंद कर लिया। ऐसा न करना चाहिये, जो वज़ीफ़ा उसका रूका हुआ है, वह भी दो और आइंदा जब तक जारी रख सको बंद न करो। वह खुरासानी बहुत ख़ौफ़ ज़दा नींद से उठे और एक थैली अलाहिदा उनके नाम की जिसमें छ: सौ अशर्फ़ियां थीं, अपने साथ ले ली और जब मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए तो सबसे पहले सय्यद ताहिर अलवी रह० के मकान पर पहुँचे, वहां महफ़िल भर रही थी। अलवी साहब ने उन खुरासानी का नाम लेकर कहा कि अगर तुमको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद न फ़रमाते तो तुम मुझ तक न आते। तुमने मेरे बारे में अल्लाह के दुश्मन की बात का यक़ीन कर लिया और अपना मामूल बंद कर लिया। जब हुज़ूर सल्ल० ने मलामत फ़रमायी और हुक्म फ़रमाया कि तीन साल का वज़ीफ़ा दो, जब लेकर आये हो, यह कह कर हाथ फैलाया और कहा लाओ छः सौ अशर्फ़ियां, यह सारी बात सुनकर खुरासनी को और भी दहशत हुई और वह कहने लगा कि वाक़िआ तो सारा इसी तरह है, मगर तुम्हें इस सारे वाक़िए की किस तरह ख़बर हुई। अलवी ने कहा कि मुझे सारा हाल मालूम है। पहले साल जब तुमने कुछ न दिया तो इससे मेरी मआशत पर असर पड़ा,जब दूसरे साल तुम आकर चले गये और मुझे तुम्हारे आने और जाने का हाल मालूम हुआ तो मुझे बहुत क़ैक़ हुई। मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तू रंज न कर। मैंने फ़लां खुरासानी को ख़्वाब में तंबीह कर दी और उससे कह दिया कि गुज़िश्ता का भी अदा करे। और आइंदा भी हत्तल मक़्दूर बंद न करे। मैंने इस ख़्वाब पर अल्लाह का शुक्र अदा किया। जब तुम सामने आये तो मुझे यक़ीन हो गया कि तुमने ख़्वाब देख लिया। यह सुनकर खुरासानी ने छ: सौ अशर्फ़ियों की थैली निकाली और उनको देकर उनकी दस्तबोसी की और अपनी कोताही की माफ़ी चाही कि मैंने तुम्हारे मुख़ालिफ़ की बात का यक़ीन कर लिया।

सैय्यद समहौवी रह० ने इस क़िस्से को नक़ल करने के बाद लिखा है कि यह ताहिर अलवी ताहिर बिन यहया बिन हुसैन बिन जाफ़र अलहुज्जः बिन उबैदुल्लाह बिन ज़ैनलु आबिदीन अली बिन अल इमाम हुसैन रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अज़मईन हैं। *(शिफ़ा)*

31. एक औरत हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुई और

दर्ख़्वास्त की कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अतहर की ज़ियारत करा दो। हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुजरा-ए-शरीफ़ा के उस हिस्से को, जिसमें क़ब्र शरीफ़ थी, परदा हटा कर खोला। वह औरत क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत करके रोती रही और रोते रोते वहीं इंतिक़ाल कर गयी। रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहा। *(शिफ़ा)*

32. ख़ालिद बिन मअ्दान रह॰ की बेटी अब्दह रह॰ कहती हैं कि मेरे वालिद का हमेशा यह मामूल था कि रात को जब सोने लेटते तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के शौक़ में बेचैन हो जाते और मुहाजिरीन और अंसार सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ का नाम लेकर याद करते और कहते या अल्लाह, यही हज़रात मेरे उसूल व फ़ुरूअ् हैं, मेरा दिल उनसे मिलने को बेताब है, मेरा इश्तियाक़ बढ़ता जा रहा है। या अल्लाह मुझे जल्दी से मौत अता फ़रमा कि उनसे मिलूँ। इसी में नींद आ जाती तो सो जाते। *(शिफ़ा)*

33. उस्मान बिन हुनैफ़ रज़ि॰ कहते हैं कि एक साहब हज़रत उस्मान रज़ि॰ के पास अपनी किसी ज़रूरत से बार बार हाज़िर होते थे। वह उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात न फ़रमा रहे थे, न उनकी ज़रूरत की तरफ़ तवज्जोह फ़रमा रहे थे। उन साहब ने इब्ने हुनैफ़ रह॰ से इसकी शिकायत की। उन्होंने यह तर्कीब बतायी कि तुम वुज़ू कर के मस्जिदे नबवी में जाओ और दो रकअत नफ़्ल पढ़ कर यह दुआ पढ़ो :-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيِّ
الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ اَنْ تَقْضِىَ حَاجَتِىْ

"अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क व अ-त-वज्जहु इलै-क बिनबिय्यिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल-म नबिय्यिर्रहमति या मुहम्मद् इन्नी अ-त-वज्जहु बि-क इला रब्बि-क अन् तुक़ज़ा हाज-ती॰"

और यह दुआ पढ़ कर अपनी हाजत को अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने पेश करो। उन्होंने इस के मुवाफ़िक़ किया। इसके बाद वह हज़रत उस्मान रज़ि॰ की ख़िदमत में गये। वहां पहुँचते ही दरबान आया और उनको हाथों हाथ ले गया। वहां पहुँचे तो हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने बहुत इक्राम किया, अपनी जगह बिठाया और उनकी ज़रूरत को ख़ुद दर्याफ़्त करके पूरा किया और इसकी माज़िरत फ़रमायी कि इस वक़्त तक तुम्हारी ज़रूरत को पूरा न कर सका और आइंदा के लिये इर्शाद

फ़रमाया कि जो ज़रूरत हुआ करे, बे तकल्लुफ़ कह दिया करें। यह साहब जब हज़रत उस्मान रज़ि॰ के पास से वापस आये तो इब्ने हुनैफ़ रह॰ से मिले और उनका बहुत शुक्रिया अदा किया कि तुम्हारी सिफ़ारिश से मेरा काम हो गया। हक़ तआला शानुहू तुम्हें इसकी जज़ा-ए-ख़ैर दे।

इब्ने हुनैफ़ रज़ि॰ ने कहा कि मैंने कोई सिफ़ारिश नहीं की। बल्कि बात यह है कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक नाबीना हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी बीनाई की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि सब्र करो और कहो तो मैं दुआ कर दूँ। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह कोई हाथ पकड़ने वाला भी मेरे पास नहीं है। इसकी बहुत तक्लीफ़ है। तो हुज़ूर सल्ल॰ ने यही तर्कीब उनको बतायी थी कि वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ें, फिर इस दुआ को पढ़ कर दुआ करें।

इब्ने हुनैफ़ रज़ि॰ कहते हैं कि थोड़ा अर्सा भी न गुज़रा था कि वह नाबीना ऐसे आये, गोया उनकी आंखों को कुछ नुक्सान ही न पहुँचा था।

अल्लामा सुब्की रह॰ कहते हैं कि इस क़िस्से में उस्मान बिन हुनैफ़ रज़ि॰ के फ़हम से इस्तिदलाल है कि वह हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर थे।

(वफ़ा)

यानी उन्होंने इस क़िस्से को उन नाबीना के साथ मख़्सूस नहीं समझा, बल्कि हर शख़्स के लिये इस दुआ से तवस्सुल को आम समझा। इन नाबीना का क़िस्सा आदाबे ज़ियारत के नं॰ 32 पर भी गुज़र चुका है।

34. अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह॰ फ़रमाते हैं कि मैंने इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ से सुना कि जब अय्यूब सुख़्तयानी रह॰ मदीना तैयबा में हाज़िर हुए तो मैं भी मदीना मुनव्वरा में हाज़िर था, मैंने दिल में सोचा कि मैं ग़ौर से देखूँ कि यह किस तरह क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर होते हैं, मैंने जाकर देखा कि वह हाज़िर हुए और क़िब्ले की तरफ़ पुश्त और हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मुंह करके खड़े हुए और बेतसन्नोअ् रोते रहे। *(वफ़ा)*

बे ज़बानी तर्जुमाने शौक़ बेहद हो तो हो,
वर्ना पेशे यार काम आती हैं तक़रीरें कहीं।।

गिरा कर चार आंसू हाले दिल सब कह दिया उनसे,
दिया मुझको ज़बां का काम चश्मे ख़ूं फ़शां तूने॥

35. अबू मुहम्मद इश्बेली रह० कहते हैं कि ग़र्नाता का एक शख़्स इस क़दर बीमार हुआ कि हद नहीं। अतिब्बा उसके इलाज से आजिज़ हो गये, ज़िन्दगी से मायूसी हो गयी।

वज़ीर अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अबी ज़ाल ने एक ख़त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में लिखा, उसमें चंद शेअ्र भी लिखे जो वफ़ा उल वफ़ा में मज़्कूर हैं। वह ख़त हुज्जाज के क़ाफ़िले में से एक शख़्स को दे दिया। उसमें बीमारी से सेहत की दुआ की दर्ख़्वास्त की थी, वह क़ाफ़िला जब मदीना पाक पहुँचा और वह ख़त क़ब्र शरीफ़ पर पढ़ा गया, उसी वक़्त वह बीमार अच्छा हो गया। जब वह शख़्स जिस के हाथ ख़त गया था, हज से वापस आया तो उसने देखा कि वह बीमार ऐसा था, गोया कभी कोई बीमारी उसको पहुँची ही नहीं। *(वफ़ा)*

36. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० बीमार हुए तो यह वसीयत फ़रमायी कि मेरे इंतिक़ाल के बाद मेरी लाश रौज़ा-ए-अक़्दस पर ले जाकर अर्ज़ कर देना कि यह अबू बक्र है। आप के क़रीब दफ़न होने की तमन्ना रखता है। अगर वहां से इजाज़त हो जाये तो मुझे वहां दफ़न कर देना और इजाज़त न हो तो बक़ीअ् में दफ़न कर देना, चुनांचे आपके विसाल के बाद वसीयत के मुवाफ़िक़ जनाज़ा वहां ले जाकर क़ब्र शरीफ़ के क़रीब यही अर्ज़ कर दिया गया, वहां से एक आवाज़ हमें आयी, आदमी कहने वाला कोई नज़र नहीं आता था कि एज़ाज़ व इक्राम के साथ अंदर ले आओ।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के विसाल का वक़्त क़रीब हुआ तो मुझे अपने सिरहाने बिठा कर फ़रमाया कि जिन हाथों से तुमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ग़ुस्ल दिया था, उन्हीं हाथों से मुझे ग़ुस्ल देना और ख़ुशबू लगाना और मुझे उस हुजरे के क़रीब ले जाकर जहां हुज़ूर सल्ल० की क़ब्र है, इजाज़त मांग लेना, अगर इजाज़त मांगने पर हुजरे का दरवाज़ा खुल जाये तो मुझे वहां दफ़न कर देना, वरना मुसलमानों के आम क़ब्रस्तान (बक़ीअ्) में दफ़न कर देना।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जनाज़े की तैयारी के बाद सबसे पहले

मैं आगे बढ़ा और मैंने जाकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, यह अबू बक्र यहां दफ़न होने की इजाज़त मांगते हैं, तो मैंने देखा कि एक दम हुजरे के किवाड़ खुल गये और एक आवाज़ आयी कि दोस्त को दोस्त के पास पहुँचा दो।

अल्लामा सुयूती रह॰ ने ख़साइसे कुबरा में इन दोनों को ज़िक्र किया है, मुहद्दिसाना हैसियत से इस रिवायत को मुन्कर बताया है, लेकिन तारीख़ी हैसियत तो बाक़ी है ही।

37. हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह॰ मशहूर ताबिई हैं, बड़े बड़े अजीब अजीब वाक़िआत उनकी इबादत, ज़ोहद और कलिमतुल् हक़्क़ कहने में किसी से न डरने के कुतुब में मौजूद हैं, पचास वर्ष तक कोई नमाज़ उनकी जमाअत से फ़ौत नहीं हुई, बल्कि तक्बीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई और चालीस वर्ष तक किसी नमाज़ की अज़ान ऐसी नहीं हुई कि यह अज़ान से पहले से मस्जिद में मौजूद न हों और पचास वर्ष तक सुबह की नमाज़ इशा के वुज़ू से पढ़ी। *(हुलिया)*

हुर्रा की मशहूर लड़ाई जो यज़ीद के लश्करों की अहले मदीना से सन् 63 हि॰ में हुई उसमें सब अहले मदीना ख़ौफ़ व हिरास और जंग की कसरत की वजह से कुछ मुंतशिर और कुछ अपने घरों में छुप गये थे। मस्जिदे नबवी में फ़ौजियों के घोड़े कूदते फिरते थे। सतरह सौ ऊँचे दर्जे के मुहाजिरीन व अंसार इस जंग में शहीद हुए और दस हज़ार से ज़्यादा आम मोमिनीन अलावा बच्चों और औरतों के। *(वफ़ा)*

उस ज़माने में कई दिन तक हज़रत सईद बिन मुसय्यिब तने तंहा मस्जिदे नबवी में पड़े रहे। वह कहते हैं कि कई दिन तक इतना दूसरे आदमी मस्जिद में आना शुरू नहीं हुए। मैं हर नमाज़ के वक़्त अज़ान और तक्बीर की आवाज़ क़ब्र शरीफ़ में से सुना करता था। *(ख़ंसाइसे कुबरा, क़ौले बदीअ)*

यह उश्शाक़ व जांनिसारों का नमूना था। इबरत के लिये तीन वाक़िआत मुख़ालफ़त के लिख कर इस मज़्मून को ख़त्म करता हूँ। ये वाक़िआत इस लिहाज़ से अहम हैं कि हाज़िरीन को ऐसी कोई हरकत ज़ाहिरी या बातिनी करने से एहतिराज़ करना चाहिये जो अदब के ख़िलाफ़ हो।

38. अमीरूल मोमिनीन हज़रत मुआविय: रज़ि॰ के ज़माने में उनके ईमा से या महज़ सुर्ख़ रूई और तक़र्रूब हासिल करने के लिये उनके ईमा के बग़ैर मर्वान ने, जो उनकी तरफ़ से मदीना मुनव्वरा का अमीर था, यह चाहा कि हुज़ूरे

अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मिंबर शरीफ़ जो मस्जिदे नबवी में है, उसको यहां से उखाड़ कर शाम में अमीर मुआविय: के पास भेज दिया जाये और इस ग़रज़ से उसको उखड़वाना शुरू किया। उसी वक़्त दफ़्अतन आफ़ताब गहन हो गया और मदीना मुनव्वरा में इस क़दर सख़्त अंधेरा हो गया कि सितारे नज़र आने लगे। मर्वान ने आकर लोगों से माज़िरत की और खुत्बे में इसका ऐलान किया कि इस क़िस्म का कोई इरादा नहीं है बल्कि अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने यह लिखा था कि उसको दीमक लग जाने का अंदेशा है, इसलिये उसके नीचे और सीढ़ियों का इज़ाफ़ा करके उसको ऊपर रखने का इरादा है, उसी वक़्त बढ़ई को बुलवा कर छ: सीढ़ियां बनवायीं और उनके ऊपर उस मिंबर शरीफ़ को रखा, जिसकी वजह से मिंबर शरीफ़ की कुल नौ सीढ़ियां हो गयीं वरना इससे क़ब्ल हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने से कुल तीन ही दर्जे थे, दो सीढ़ियां और एक ऊपर बैठने का।

(नुज़हत)

39. सुलतान नूरूद्दीन आदिल बादशाह मुत्तक़ी और साहिबे औराद व वज़ाईफ़ थे। रात का बहुत सा हिस्सा तहज्जुद और वज़ाइफ़ में ख़र्च होता था। 557 हि॰ में एक शब (रात) तहज्जुद के बाद सोये तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई कि हुज़ूर सल्ल॰ ने दो कैरी आंखों वाले आदमियों की तरफ़ इशारा फ़रमा कर सुलतान से इर्शाद फ़रमाया कि इन दोनों से मेरी हिफ़ाज़त करो। सुलतान की घबराहट से आंख खुली, फ़ौरन उठ कर वुज़ू किया और नवाफ़िल पढ़ कर दोबारा लेटे तो मअन् आंख लगी और यही ख़्वाब बेऐनिही दोबारा नज़र आया, फिर जागे और वुज़ू करके नवाफ़िल पढ़ीं, फिर लेटे और मअन् आंख लगने पर तीसरी मर्तबा फिर यही ख़्वाब नज़र आया तो उठ कर कहने लगे कि अब नींद की कोई गुंजाइश नहीं, फ़ौरन रात ही को अपने वज़ीर को जो नेक सालेह आदमी थे, जमालुद्दीन नाम बताया जाता है और इस नाम में इख़्तिलाफ़ भी है, बुलाया और सारा क़िस्सा सुनाया। वज़ीर ने कहा कि अब देर की क्या गुंजाइश है। फ़ौरन मदीना तैयबा चलिये और इस ख़्वाब का तज़्किरा किसी से न कीजिये, बादशाह ने फ़ौरन रात ही को तैयारी की और वज़ीर और 20 नफ़र मख़्सूस ख़ुद्दाम लेकर तेज़ रौ ऊंटनियों पर बहुत सा सामान और माल व मताअ् लदवा कर मदीना तैयबा को रवाना हो गये और रात दिन चलकर सोलहवें दिन मिस्र से मदीना तैयबा पहुँचे। मदीना तैयबा से बाहर ग़ुस्ल किया और निहायत अदब व एहतिराम से मस्जिद शरीफ़ में हाज़िर हुए और रौज़ा-ए-जन्नत में

रक्अत नफ़्ल पढ़ी और निहायत मुतफ़क्किर बैठे सोचते रहे कि क्या करें। वज़ीर ने ऐलान किया कि बादशाह ज़ियारत के लिये तशरीफ़ लाये हैं। और अहले मदीना पर बख़्शिश और अम्वाल भी तक़्सीम होंगे और बहुत बड़ी दावत का इंतिज़ाम किया, जिसमें सारे अहले मदीना को मद्ऊ किया। बादशाह अता के वक़्त बहुत गहरी निगाह से लोगों को देखते। सब अहले मदीना यके बाद दीगरे आकर अतायें लेकर चले गये। मगर वे दो शख़्स जो ख़्वाब में देखे थे नज़र न आये। बादशाह ने पूछा कि कोई और बाक़ी रहा हो तो उसको भी बुला लिया जाये। मालूम हुआ कि कोई बाक़ी नहीं रहा। बहुत ग़ौर व खौज़ और बार बार कहने पर लोगों ने कहा कि दो नेक मर्द मुत्तक़ी परहेज़गार मग़्रिबी बुज़ुर्ग हैं। वे किसी की कोई चीज़ नहीं लेते। खुद बहुत कुछ सदक़ात ख़ैरात अहले मदीना पर करते रहते हैं। सबसे यक्सू रहते हैं, गोशानशीन आदमी हैं। बादशाह ने उनको भी बुलवाया और देखते ही पहचान लिया कि यही वे दोनों हैं, जो ख़्वाब में दिखाये गये थे। बादशाह ने उनसे पूछा कि तुम कौन हो? कहने लगे कि मग़्रिब के रहने वाले हैं, हज के लिये हाज़िर हुए थे, हज से फ़रागत पर ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम के पड़ोस में पड़े रहने की तमन्ना हुई तो यहां क़ियाम कर लिया। बादशाह ने कहा, सही सही बता दो। उन्होंने जो पहले कहा था, उसी पर इसरार किया। बादशाह ने उनकी क़ियामगाह पूछी। मालूम हुआ कि रौज़ा-ए-अक़्दस के क़रीब ही एक रिबात में क़ियाम है। बादशाह ने उनको तो वहीं रोके रखने का हुक्म दिया और खुद उनकी क़ियामगाह पर गया। वहां जाकर बहुत तजस्सुस किया, वहां माल व मताअ् तो बहुत सा मिला और किताबें वग़ैरह रखी हुई मिलीं, लेकिन कोई ऐसी चीज़ न मिली, जिससे ख़्वाब के मज़्मून की ताईद होती। बादशाह बहुत परेशान और मुतफ़क्किर था। अहले मदीना बहुत कसरत से सिफ़ारिश के लिये हाज़िर हो रहे थे कि ये नेक बुज़ुर्ग दिन भर रोज़े रखते हैं, हर नमाज़ रौज़ा-ए-शरीफ़ा में पढ़ते हैं, रोज़ाना बक़ीअ् की ज़ियारत करते हैं,। हर शंबा को क़ुबा जाते हैं, किसी साइल को रद्द नहीं करते, इस क़हत के साल में अहले मदीना के साथ इंतिहाई हमदर्दी और ग़मगुसारी इन्होंने की है। बादशाह हालात सुनकर ताज्जुब करते थे और इधर उधर मुतफ़क्किर फिर रहे थे। दफ़्अतन (अचानक) ख़्याल आया कि उनके मुसल्ले को जो एक बोरिये पर बिछा हुआ था, उठाया उसके नीचे एक पत्थर बिछा हुआ था उसको उठाया तो उसके नीचे एक सुरंग निकली जो बहुत गहरी खोदी गयी थी और बहुत दूर तक चली गयी थी।

हत्ताकि क़ब्रे अत्हर तक पहुँच गयी थी। यह देख कर सब दंग रह गये। बादशाह ने उनको ग़ुस्से में कांपते हुए पीटना शुरू किया कि सही सही वाक़िआ बताओ। उन्होंने बताया कि वे दोनों नसरानी हैं और ईसाई बादशाहों ने बहुत सा माल उनको दिया है और बहुत ज़्यादा देने का वायदा किया है। वे हाजियों की सूरत बना कर आये हैं ताकि क़ब्रे अत्हर से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जसदे (जिस्मे) अत्हर को ले जायें। वे दोनों रात को उस जगह को खोदा करते और जो मिट्टी निकलती उसको चमड़े की दो मश्कें उनके पास मग़्रिबी शक्ल की थीं उनमें भर कर रात ही को बक़ीअ् में डाल आया करते थे। बादशाह इस बात पर कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने और उसके पाक रसूल सल्ल० ने इस ख़िदमत के लिये उनको मुन्तख़ब किया, बहुत रोये और दोनों को क़त्ल कराया और हुजरा-ए-शरीफ़ा के गिर्द इतनी गहरी खंदक़ खुदवायी कि पानी तक पहुँच गयी और उसमें रांग या सीसा पिघला कर भरवा दिया कि जसदे अत्हर तक किसी की रसाई न हो सके। *(वफ़ा अव्वल)*

40. शैख़ शम्सुद्दीन सवाब रह० जो ख़ादिमीने हरमे नववी के रईस थे, कहते हैं कि मेरे एक मुख़्लिस रफ़ीक़ थे, जो अमीरे मदीना के यहां बहुत कसरत से आते जाते थे और मुझे भी जिस क़िस्म के काम पेश आते, उन्हीं के ज़रिये से अमीर तक पहुँचाता था, एक दिन वह रफ़ीक़ मेरे पास आये और कहने लगे कि आज बड़ा सख़्त हादसा पेश आ गया। मैंने कहा, क्या हुआ? कहने लगे कि हलब के रहने वालों की एक जमाअत अमीर के पास आयी है और बहुत सा माल रिश्वत का अमीर को इसलिये दिया है कि वह हज़राते शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुबारक अज्साम को यहां से ले जाने पर मदद दे। अमीर ने उस को क़ुबूल कर लिया है, शैख़ सवाब रह० कहते हैं कि यह ख़बर सुनकर मेरे रंज की इंतिहा न रही। मैं इन्तिहाई फ़िक्र में था कि अमीर का क़ासिद मुझे बुलाने आ गया। मैं वहां गया। अमीर ने मुझसे कहा कि आज रात को कुछ लोग मस्जिद में आयेंगे, तुम उनसे तअर्रूज़ न करना और वे जो कुछ करें उनको करने देना, तुम किसी बात में दख़ल न देना। मैं बहुत अच्छा कह कर चला आया, मगर सारा दिन हुजरा-ए-शरीफ़ा के पीछे बैठे रोते हुए गुज़र गया। एक मिनट को आंसू न थमता था और किसी को ख़बर न थी कि मुझ पर क्या गुज़र रही है। आख़िर इशा की नमाज़ से फ़रागत पर जब सब आदमी चले गये और हमने किवाड़ वग़ैरह बंद कर लिये तो बाबुस्सलाम से कि यह दरवाज़ा अमीर के घर के क़रीब था, लोगों ने

दरवाज़ा खुलवा कर अंदर आना शुरू किया। मैं उनको एक एक करके चुपके चुपके गिन रहा था चालीस आदमी अंदर दाख़िल हुए। उनके साथ फावड़े और टोकरियां और जमीन खोदने के बहुत से आलात थे। वे अंदर दाख़िल होकर हुजरा-ए-शरीफ़ की तरफ़ को चले। ख़ुदा की क़सम ! मिंबर तक भी न पहुँचे थे कि एकदम उनको मय उनके सारे साज़ व सामान के ज़मीन निगल गयी और निशान तक भी पैदा न हुआ। अमीर ने बहुत देर तक उनका इंतिज़ार करके मुझे बुला कर पूछा कि सवाब, वे लोग अभी तक तुम्हारे यहां नहीं पहुँचे? मैंने कहा, हां आये थे और ये क़िस्सा उनके साथ गुज़रा। अमीर ने कहा देखो क्या कह रहे हो? मैंने कहा, बिल्कुल ऐसा ही हुआ है, आप चलें, मैं वह जगह बताऊँ जहां यह क़िस्सा गुज़रा। अमीर ने कहा, अच्छा बस यह बात यहीं तक रहे। अगर यह बात किसी और पर ज़ाहिर की गयी तो सर उड़ा दिया जायेगा। *(वफ़ा अव्वल)*

हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से वहां के आदाब के बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। और महज़ अपने लुत्फ़ व करम से बे अदबी के वबाल से महफ़ूज़ फ़रमाए।

तंबीह:- गुज़िश्ता वाक़िआत में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब वग़ैरह में ज़ियारत के मुतअद्दद क़िस्से गुज़रे। उनके मुताल्लिक़ एक ज़रूरी बात ज़ेहन नशीन कर लेना चाहिए कि जिस शख़्स ने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की, उसने हक़ीक़त में हुज़ूर सल्ल० ही की ज़ियारत की। इसमें तरद्दुद नहीं, इसलिये कि मुतअद्दद मशहूर और सही रिवायात में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह पाक इर्शाद वारिद हुआ है कि जिसने ख़्वाब में मुझे देखा, उसने हक़ीक़त में मुझ ही को देखा है, इसलिये कि शैतान को यह क़ुदरत नहीं दी गयी कि वह मेरी सूरत बना सके। लेकिन इसके बावजूद चूँकि देखने का आला और ज़रिया ख़ुद देखने वाले की ज़ात होती है और आले के फ़र्क़ की वजह से उस चीज़ में फ़र्क़ पड़ जाता है, जिसको देखा जाये, मसलन सुर्ख़ ऐनक, सब्ज़ ऐनक स्याह ऐनक, से जिस चीज़ को देखा जायेगा, वह ऐसी ही नज़र आयेगी जैसी ऐनक होगी, असल चीज़ के रंग में कोई फ़र्क़ न होगा जैसा कि दूरबीन, ख़ुर्दबीन के तफ़ावुत से चीज़ में तफ़ावुत मालूम होता है और भेंगी आंख एक के बजाए दो देखती है इसलिये अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत में कोई चीज़ शाने वाला के मुनासिब नज़र न आये तो वह नज़र का क़ुसूर

है। इसी तरह अगर शरीअते मुतह्हरा के ख़िलाफ़ कोई बात सुनने में आये तो वह सुनने का क़ुसूर होगा।

इब्ने अमीरूल हाज्ज रह० मदख़ल में लिखते हैं कि इससे बहुत एहतिराज़ करना चाहिये कि ख़्वाब में या ग़ैबी आवाज़ से जागते में किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ क़ल्ब को तमानीनत और सुकून हो, जो सदरे अव्वल के ख़िलाफ़ हो। इस तरह से ख़्वाब में देखने की वजह से किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ मानूस हो, जो सलफ़ के ख़िलाफ़ हो, इससे भी एहतिराज़ करना चाहिये जैसा कि बाज़ लोगों को पेश आ गया कि उनको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में किसी चीज़ के करने या न करने का हुक्म फ़रमाया और देखने वाले ने महज़ ख़्वाब की बिना पर उस पर अमल शुरू कर दिया और उसको किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह पर पेश करके नहीं जांचा, हालांकि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ

"और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ रद्द करने का मतलब उसकी किताब पर पेश करना है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ रद्द करने का मतलब आप की हयात में आपकी ज़ात पर पेश करना था और आपके विसाल के बाद आपकी सुन्नत पर पेश करना है। अगरचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद कि जिसने मुझे ख़्वाब में देखा उसने मुझ ही को देखा, बे तरद्दुद हक़ है, लेकिन हक़ तआला शानुहू ने ख़्वाब पर अमल का मुकल्लफ़ नहीं बनाया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तीन आदमी मर्फ़ू उल क़लम हैं उनमें :-

1. एक वह शख़्स है जो सो रहा हो, यहां तक कि जाग जाये।

(2. दूसरा बच्चा, 3. तीसरा मजनूं)

इसके अलावा यह भी वजह है कि इल्म और रिवायत उसी शख़्स से हासिल की जा सकती है जो मुतयक़्क़ज़[1] हो, हाज़िरूल अक़्ल हो, और सोने वाला ऐसा नहीं होता, इसी वजह से उलमा ने लिखा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई हुक्म या मुमानअत अगर ख़्वाब में देखी जाये तो

1. जागा हुआ

उसको किताब व सुन्नत पर पेश किया जाये। अगर उनके मुवाफ़िक़ हो तो ख़्वाब भी हक़ है और कलाम भी हक़ है और यह देखने वाले की तमानीनत के लिये बशारत के तौर पर है, और अगर उनके ख़िलाफ़ हो तो समझना चाहिए कि ख़्वाब तो हक़ है, लेकिन शैतानी असर से सुनने वाले के कान में ऐसी चीज़ पड़ी, जो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद नहीं फ़रमायी।

इमाम नववी रह० ने "तहज़ीबुल अस्मा-इ वल्लुग़ात" के शुरू में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़साइस में लिखा है कि जिसने आपको ख़्वाब में देखा, बेशक उसने आप ही को देखा कि शैतान आपकी सूरत नहीं बना सकता, लेकिन उसमें अगर कोई चीज़ ख़्वाब में अहकाम के मुताल्लिक़ सुनी तो उस पर अमल ज़ायज़ नहीं, न इस वजह से कि ख़्वाब में कोई तरद्दुद है, बल्कि इस वजह से कि देखने वाले का ज़ब्त मोअ्तमद नहीं।

साहिबे मदख़ल ने आगे भी इस में तवील कलाम किया है, बक़द्रे ज़रूरत नक़ल किया गया और इनके अलावा और भी बहुत से उलमा ने इसी की तसरीह फ़रमायी है, जो ऊपर गुज़रा।

दसवीं फ़स्ल

मदीना तैयबा के फ़ज़ाइल में

जिस शहर को अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने महबूबे दो जहां के सरदार की क़ियामगाह तज्वीज़ किया हो, उसके लिये इससे बढ़कर क्या फ़ज़ीलत होगी कि अल्लाह पाक ने अपने महबूब के रहने के लिये उसको पसंद किया और उसके बाद फिर किसी दूसरे शहर को उस पर क्या फ़ौक़ियत हो सकती है।

क़ाज़ी अयाज़ रह० फ़रमाते हैं कि वे मवाक़े जो वही के नुज़ूल के साथ आबाद हुए हों, क़ुरआन पाक उनमें नाज़िल होता रहा हो, हज़रत जिब्रील, हज़रत मीकाइल अलैहिमुस्सलाम बार बार उनमें हाज़िर होते रहे हों, मुक़र्रब फ़रिश्ते उनमें उतरते रहे हों, उनके मैदान अल्लाह के पाक ज़िक्र और तस्बीह से गूंजते रहे हों,

उनकी मिट्टी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे अतहर पर फैली हुई हो, अल्लाह के दीन और उसके पाक रसूल सल्ल० की सुन्नतें वहां से इस क़द्र कसीर मिक़्दार में जारी हुई हों, वहां फ़ज़ाइल और बरकात व ख़ैरात के मशाहिद हों, वहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खड़े होने के और चलने फिरने के मक़ामात हों, वे इस क़ाबिल हैं कि उनके मैदानों की ताज़ीम की जाये, उनकी ख़ुश्बुओं को सूँघा जाये, उस के दर व दीवार को चूमा जाये। *(शिफ़ा)*

अहादीस में भी इस पाक शहर और इसके बहुत से मवाज़े (मक़ामात) के फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं, जिनमें से चंद यहां ज़िक्र किये जाते हैं।

अहादीस

(١) عن جابر بن سمرةؓ قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ان الله تعالى سمى المدينة طابة رواه مسلم كذا فى المشكوة .

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानहू ने इस शहर मदीना का नाम ताबः रखा है।

फ़ायदाः– यानी हक़ तआला शानुहू ने वही के ज़रिये से इसका नाम ताबः रखा और एक रिवायत में तैयबा आया है, इसके मायने पाकी के भी हैं, और उम्दगी के भी, कि यह शिर्क की गंदगी से पाक है या यह कि इसकी आब व हवा उम्दा है, मोतदिल मिज़ाज वालों के मुवाफ़िक़ है और बाज़ ने कहा है कि इसके अंदर रहने वाले पाकीज़ा लोग हैं, उनकी वजह से ये नाम रखा गया। *(मनासिके नववी)*

इब्ने हजर मक्की रह० लिखते हैं कि मदीना तैयबा के तक़रीबन एक हज़ार नाम हैं, जिनमें से इमाम नववी रह० ने अपने मनासिक में मशहूर होने की वजह से पांच नाम ज़िक्र किये हैं :–

मदीना, ताबः, तैयबा, दार, यस्‌रिब।

इनमें से यस्‌रिब ज़मान-ए-जाहिलिय्यत का नाम है। हुज़ूर सल्ल० ने इसको पसंद नहीं फरमाया, चुनांचे सही हदीस में आया है कि लोग इसको यस्‌रिब

कहते हैं यह मदीना है जैसा कि दूसरी हदीस में आ रहा है, ग़ालिबन नापसंदीदगी की वजह यह है कि यसूरिब के मायने मलामत और हुज़्न के हैं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा बुरा नाम बदल कर बेहतर नाम रखने की थी, जैसा कि दूसरी हदीस के ज़ैल में मुफ़स्सल आ रहा है।

इमाम नववी रह॰ फ़रमाते हैं कि मदीना दीन से मुश्तक़ है, जिसके मायने ताअत के हैं, इसलिये यह नाम रखा गया कि इस शहर में अल्लाह की इताअत की जाती है।

साहिबे इत्तिहाफ़ ने बहुत से नाम मदीना तैयबा के नक़ल करके लिखा है कि नामों की कसरत भी शराफ़त पर दलालत करती है और उन सब में मशहूर नाम मदीना है।

(۲) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

امرت بقریۃ تاکل القری یقولون یثرب وھی المدینۃ تنفی الناس کما ینفی الکیر خبث الحدید متفق علیہ کذا فی المشکوۃ۔

2. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुझे एक ऐसी बस्ती में रहने का हुक्म दिया गया जो सारी बस्तियों को खा ले, लोग उस बस्ती को यस्रिब कहते हैं। उसका नाम मदीना है। वह बुरे आदमियों को इस तरह दूर कर देती है जिस तरह भट्ठी लोहे के मैल कुचैल को दूर कर देती है।

फ़ायदा:- इस हदीस शरीफ़ में कई मज़्मून ज़िक्र किये गये हैं :-

1. अव्वल यह कि मुझे ऐसी बस्ती में रहने का हुक्म किया गया जिससे मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल॰ का इस शहर में क़ियाम अपनी ख़्वाहिश और अपने इरादे से नहीं था, बल्कि अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से यहां क़ियाम का हुक्म किया गया था।

हज़रत उमर रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिये मदीने को पसंद किया। *(कंज़)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने वही भेजी है कि इन तीन बस्तियों में से जहां तुम क़ियाम करो, वहीं तुम्हारी हिजरत की जगह है, मदीना, बहरैन, किन्सरैन। *(कंज़)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुझे हिजरत की जगह

दिखायी गयी है जो एक शोर ज़मीन, दो कंकरीली ज़मीनों के दर्मियान है, यह जगह हिज्र हो (एक जगह का नाम है) या यसरिब हो। (कंज़)

इन रिवायात में कोई तआरूज़् नहीं है। अक़रब यह है कि अव्वल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसंदीदगी का इख़्तियार दिया गया हो, उसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने जब खुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दस से इस्तिख़ारा किया हो तो अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से मदीना पाक की तअ्यीन हो गयी हो।

तारीख़े ख़मीस में लिखा है कि अहले सियर ने कहा है कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले मदीना से बैअते उक़्बा कर ली और सहाबा-ए-किराम मुश्रिकीन की ईज़ा रसानी की वजह से मक्का मुकर्रमा में कियाम पर क़ादिर न रहे, तो उनको मदीना तैयबा हिजरत की इजाज़त फ़रमा दी। और बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया कि मुझे हिजरत की जगह दिखायी गयी, वह एक ज़मीन है जिसमें खजूर के दरख़्त हैं। मेरा ख़्याल हुआ कि यह जगह शायद यमामा है। बाद में मालूम हुआ कि वह यस्रिब है।

बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि अव्वल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी सिफ़त के साथ दिखाया गया जो मदीना पाक में और दूसरी जगहों में मुश्तरक थी, इसके बाद ऐसी सिफ़ात के साथ दिखाया गया जो मदीना मुनव्वरा के साथ मख़्सूस थीं, तो वह मुतअय्यन हो गया।

एक हदीस में आया है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी मदीना की तरफ़ हिजरत की इजाज़त चाही तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि ठहर जाओ, मुझे भी अंक़रीब इजाज़त होने को है।

एक और हदीस में है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ ने उन्हीं अय्याम में ख़्वाब देखा था कि आसमान से एक चांद मक्का मुकर्रमा में उतरा, जिसकी वजह से सारा मक्का रौशन हो गया, फिर वह चांद आसमान की तरफ़ चढ़ा और मदीना तैयबा में जा उतरा, जिसकी वजह से मदीना की सारी ज़मीन रौशन हो गयी।

यह तवील ख़्वाब है, इसी में आख़िर में है कि फिर वह चांद आइशा के घर में गया और उनके घर की ज़मीन शक़ हो गयी, जिसमें वह चांद पोशीदा हो गया।

कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ को फ़न्ने ताबीर से पहले ही से बहुत

मुनासबत थी। इस ख़्वाब से उन्होंने मदीने की हिजरत और आख़िर में हुज़ूर सल्ल० का हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में दफ़्न होना समझ लिया था। *(ख़मीस)*

2. दूसरा मज़्मून यह है कि इस बस्ती की सिफ़त यह बयान की गयी है कि सारी बस्तियों को खा ले।

उलमा ने इससे मदीना तैयबा की सारी बस्तियों से अफ़ज़ल होने पर इस्तिदलाल किया है और मुतअद्द अक़्वाल उसकी शरह में नक़ल किये गये।

बाज़ उलमा ने इसका मतलब ही यह लिखा है कि वह बस्ती यानी मदीना सारी बस्तियों से अफ़ज़ल है यानी उसकी फ़ज़ीलत इतनी ग़ालिब और बढ़ी हुई है कि और सब बस्तियों की फ़ज़ीलतें उसके मुक़ाबले में मग़्लूब और कल अदम (न होने के बराबर) हैं, गोया औरों की फ़ज़ीलतें उसके मुक़ाबले में मादूम हो गयीं, यही मुराद है खा लेने से। कहते हैं कि इस मतलब की ताईद तौरात शरीफ़ से भी होती है। उसमें अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया है:-

يا طابة يا مسكينة انى سارفع اجاجيرك على اجاجير القرى

"ऐ ताब:, ऐ मिस्कीन शहर, मैं तेरी छतों को सारी बस्तियों की छतों पर बुलंद करूँगा।"

और बाज़ उलमा ने लिखा कि इस बस्ती के रहने वाले दूसरे शहरों को फ़त्ह कर लेंगे और उन पर ग़ालिब हो जायेंगे जैसा कि कहते हैं कि फ़लाँ शख़्स ने फ़लां को खा लिया, यानी क़ुव्वत से उस पर ग़ालिब आ गया और बाज़ उलमा ने कहा है कि दोनों मायने मुराद हैं यानी इस बस्ती की फ़ज़ीलत दूसरी बस्तियों पर ग़ालिब होगी और इसके आदमी दूसरे शहरों के आदमियों पर फ़त्ह और ग़लबा हासिल करेंगे। *(ज़ुर्क़ानी मुवाहिब)*

साहिबे मज़ाहिरे हक़ ने लिखा है कि जो कोई इस शहर में रहता है, ग़ालिब होता है और फ़त्ह करता है और शहरों को।-यह ख़ासियत है इस शहरे अज़ीमुश्शान की कि जो इसमें आता है, अक्सर शहरों पर ग़ालिब होता है। पहले इसमें क़ौमे अमालिक़ा आयी, वह ग़ालिब हुई और शहरों और विलायतों को फ़त्ह किया, फिर यहूद आये वे ग़ालिब हुए अमालिक़ा पर, फिर अंसार पहुँचे वे ग़ालिब हुए यहूद पर, फिर सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुहाजिरीन आये उनको किस तरह ग़लबा हुआ कि मश्रिक़ से मग़्रिब तक ले लिया।

3. तीसरा मज़्मून यह है कि लोग उसको यस्रिब कहते हैं।, उसका नाम मदीना है। ज़माना-ए-जाहिलिय्यत में इस शहर का नाम यस्रिब था। इब्तिदा-ए-इस्लाम में भी इसी से ज़िक्र होता रहा।

साहिबे मज़ाहिरे हक़ ने लिखा है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इसको यस्रिब कहने से मना फ़रमाया, या तो इसलिये कि वह ज़माना-ए-जाहिलिय्यत का नाम है या इसलिये कि वह मुश्तक़ है सर्ब से, जिसके मायने हलाक और फ़साद के हैं या इसलिये कि यस्रिब असल में एक बुत का नाम था, उसके नाम पर शहर का नाम रखा गया, या इसलिये कि यस्रिब एक ज़ालिम शख़्स का नाम था।

और बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में एक हदीस लिखी है कि जो कोई एक बार यस्रिब कहे, चाहिये कि दस बार मदीना कहे ताकि तदारुक और तलाफ़ी हो। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़त्हुलबारी में लिखते हैं कि बाज़ उलमा ने इस हदीस से मदीना मुनव्वरा को यस्रिब कहने के मक्रूह होने पर इस्तिदलाल किया है। ये हज़रात यह फ़रमाते हैं कि क़ुरआन पाक में जो सूरः अहज़ाब में "या अह्-ल यसरि-ब ला मुक़ा-म लकुम्" वारिद हुआ है और उसमें इसको यस्रिब से ताबीर किया है, वह ग़ैर मुस्लिमों का क़ौल नक़ल किया है, इससे जवाज़ पर इस्तिदलाल नहीं होता।

और इमाम-अहमद ने हज़रत बरा रज़ि॰ की हदीस से हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया है कि जो मदीना को यस्रिब कहे, उसको इस्तिग़फ़ार करना चाहिये। उसका नाम ताबः है ताबः है।

और एक हदीस में हज़रत अबू अय्यूब से नक़ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने मदीना को यस्रिब कहने से मना किया, इसी वजह से ईसा बिन दीनार मालिकी रह॰ लिखते हैं कि जो मदीने को यस्रिब कहे, उस पर एक ख़ता लिखी जाती है और ना पसंदीदगी की वजह या तो यह है कि यह तस्रीब से है, जिसके मायने डांटने के और मलामत करने के हैं या सर्ब से है जिसके मायने फ़साद के हैं और दोनों मायने बुरे हैं और हुज़ूर सल्ल॰ की आदते शरीफ़ा थी कि बुरे नाम को बदल कर अच्छा नाम तज्वीज़ फ़रमाते थे और बाज़ ने कहा है कि यह नाम यस्रिब बिन क़ानिया बिन महल्-दील बिन ईल बिन ईस बिन इरम बिन साम बिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के नाम पर है कि वह इस जगह सबसे पहले आबाद हुआ। जिसके नाम पर यह नाम रखा गया और उसका भाई ख़ैबूर था, जिसके नाम पर उसके रहने की वजह से ख़ैबर रखा गया।

4. चौथा मज़्मून यह है कि बुरे आदमियों को इस तरह दूर कर देता है जैसा कि आग की भट्ठी लोहे के मैल को। इस का मतलब बाज़ उलमा ने लिखा है कि इब्तिदा-ए-इस्लाम में कुफ़्र व शिर्क का इससे बिल्कुल्लिया दूर हो जाना मुराद है।

(मज़ाहिर)

और बाज़ उमला ने लिखा है कि यह हुज़ूर सल्ल० के ज़माने के साथ ख़ास है।

एक हदीस में एक क़िस्सा भी आया है कि एक बद्दू जो मदीने में रहता था, उसको शिद्दत से बुख़ार आया, जिसकी वजह से उसने मदीने में रहने से घबरा कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मेरी बैअत तोड़ दीजिये। मैं यहां नहीं रहता। हुज़ूर सल्ल० ने बैअत तोड़ने से इंकार किया। फिर दोबारा सहबारा आकर इसरार किया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इंकार फ़रमाते रहे। मगर वह निकल गया। जिस पर हुज़ूर सल्ल० ने यह इर्शाद फ़रमाया कि मदीना भट्टी की तरह से है, बुरे को निकाल देता है, अच्छे को ख़ालिस करता है यानी निखारता है।

बाज़ उलमा ने कहा है कि आख़िर ज़माने में भी यही बात होगी, यानी दज्जाल के ज़माने में कि मदीना पाक से बुरे बुरे आदमी निकल जायेंगे। चुनांचे एक हदीस में आया है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक मदीना से बुरे बुरे आदमी न निकल जायें।

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में है कि हर शहर में दज्जाल का गुज़र होगा, मगर मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में उसका दाख़िला नहीं हो सकेगा। फ़रिश्ते इन दोनों शहरों की हिफ़ाज़त करेंगे। उस वक़्त मदीना मुनव्वरा में तीन मर्तबा ज़लज़ला आयेगा, जिससे हर काफ़िर और मुनाफ़िक़ उससे निकल पड़ेगा।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं कि हर वह शख़्स मुराद है जिसके ईमान में ख़ुलूस न हो।

5. पांचवां मज़्मून यह है कि इस हदीसे पाक से मदीना मुनव्वरा के सारे शहरों से अफ़ज़ल होने पर इस्तिदलाल किया गया, जैसा कि दूसरे मज़्मून में गुज़रा। मक्का मुकर्रमा के अलावा और जितने शहर हैं उन पर मदीना पाक की फ़ज़ीलत तो मुसल्लम है और इसमें कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है, लेकिन इसमें उलमा में इख़्तिलाफ़ हो गया कि मदीना पाक की फ़ज़ीलत मक्का मुकर्रमा पर भी है या

नहीं।

अक्सर उलमा ने मक्का मुकर्रमा को सबसे अफ़ज़ल शहर बताया है जैसा कि जम्हूर उलमा का मज़हब है और बाज़ हज़रात ने मदीना मुनव्वरा को मक्का मुकर्रमा से भी अफ़ज़ल फ़रमाया है, जैसा कि इमाम मालिक और दूसरे बाज़ उलमा से नक़्ल किया गया, जैसा कि क़रीब ही मुफ़स्सल आयेगा, लेकिन इससे क़ब्ल दो अम्र (बात) याद रखने के क़ाबिल हैं :-

(क) अव्वल यह कि मदीना तैयबा की वह ज़मीन जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक से मुत्तसिल है, उसमें कोई इख़्तिलाफ़ उलमा में नहीं है, वह बिल इत्तिफ़ाक़ सब उलमा के नज़दीक सब जगहों से अफ़ज़ल है। इब्ने असाकिर रह०, क़ाज़ी अयाज़ रह० वग़ैरह हज़रात ने इस पर सारी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ और इज्माअ् नक़्ल किया है कि यह हिस्सा ज़मीन का बैतुल्लाह शरीफ़ से भी अफ़ज़ल है, बल्कि क़ाज़ी अयाज़ रह० ने लिखा है कि अर्शे मुअल्ला से भी अफ़ज़ल है जिसकी वजह उलमा ने यह लिखी है कि आदमी जिस जगह दफ़्न होता है, उसी जगह की मिट्टी से इब्तिदा में वह पैदा किया जाता है, तो गोया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बदने मुबारक भी उसी मिट्टी से बना है। *(शर्हे मनासिके नववी)*

मुवाहिबे लदुन्निया में लिखा है कि यह इज्माई मसअला है कि जो ज़मीन का हिस्सा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक से मिला हुआ है, वह सारी दुनिया की ज़मीन से अफ़ज़ल है, हत्ता कि काबे शरीफ़ की ज़मीन से भी अफ़ज़ल है, बल्कि इब्ने अक़ील हंबली रह० से नक़्ल किया गया है कि वह जगह अर्श से भी अफ़ज़ल है ,बल्कि बाज़ उलमा ने तो इस वजह से कि हुज़ूर सल्ल० का बदने मुबारक ज़मीन में है, ज़मीन को आसान से अफ़ज़ल बताया है, लेकिन जम्हूर उलमा का मज़हब यह है कि आसमान ज़मीन से अफ़ज़ल है, इसलिये कि आसमान पर अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं होती, और ज़मीन पर कुफ़्र व शिर्क होता है, अलबत्ता वह जगह जो अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मुबारक बदनों से मुत्तसिल है, वह आमसानों से अफ़ज़ल है।

(शर्हे मुवाहिब)

अर्श से अफ़ज़ल होने की वजह यह है कि हक़ तआला शानुहू मकान से बे नियाज़ है और ज़मीन के उस हिस्से में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिस्मे मुबारक मौजूद है।

(ख) इसके बाद दूसरा अम्र यह भी ज़ेहन में रखने का है कि मक्का मुकर्रमा में काबा शरीफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ के अलावा दुनिया की सब जगहों से बिल इत्तिफ़ाक़ अफ़ज़ल है, इसमें भी किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है।

इब्ने हजर रह॰ शर्हे मनासिके नववी में लिखते हैं कि उलमा में जो इख़्तिलाफ़ मक्का या मदीना के अफ़ज़ल होने में है, वह काबा शरीफ़ के अलावा में है। काबा शरीफ़ बिल इत्तिफ़ाक़ मदीना मुनव्वरा से अफ़ज़ल है बजुज़ क़ब्र शरीफ़ के उस हिस्से के, जो हुज़ूर सल्ल॰ के बदने मुबारक से मिल रहा है कि वह काबा शरीफ़ से भी अफ़ज़ल है।

इन दो चीज़ों के बाद फिर इसमें इख़्तिलाफ़ है कि मक्का मुकर्रमा अफ़ज़ल है या मदीना तैयबा अफ़ज़ल है।

इमाम नववी रह॰ अपने मनासिक में लिखते हैं कि हमारे नज़दीक यानी शाफ़अिय्यः के नज़दीक मक्का मुकर्रमा अफ़ज़ल है, यही अक्सर फ़ुक़हा का मज़हब है और इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ का राजेह क़ौल भी यही है।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ कहते हैं कि यही मज़हब है इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद का।

इब्ने हजर रह॰ कहते हैं कि इब्ने अब्दुल बर्र रह॰ ने इसी को नक़ल किया। हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अबू दर्दा, हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हुम से, उन हज़रात की दलील यह है कि मक्का मुकर्रमा के बारे में जो सवाब आमाल का रिवायात में आता है, वह मदीना मुनव्वरा के सवाब से ज़्यादा है, यानी एक लाख नमाज़ों का सवाब कसरत से अहादीस में आया है, जैसा कि तीसरी फ़स्ल की हदीस नं॰ 1 में और छठी फ़सल की हदीस नं॰ 6 में गुजर चुका है, नीज़ इसी फ़स्ल की हदीस नं॰ 10 में गुज़रा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का मुकर्रमा को फ़रमाया कि तू अल्लाह की ज़मीन में सबसे बेहतर है और अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब है।

दूसरा क़ौल हज़रत इमाम मालिक रह॰ का है कि मदीना तैयबा मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल है। इमाम अहमद रह॰ का दूसरा क़ौल भी इसी के मुवाफ़िक़ है और हज़रत उमर रज़ि॰ का मज़हब भी यही नक़ल किया जाता है। पहले क़ौल

में भी हज़रत उमर रज़ि॰ का नामेनामी गुज़र चुका है, इसलिये उनके भी इस मसअले में दो क़ौल हो गये। इन हज़रात की दलील एक तो यही हदीस है, जिसका बयान हो रहा है, नीज़ एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि हर शहर तलवार से फ़त्ह हुआ, मगर मदीना तैयबा क़ुरआन से फ़त्ह हुआ। *(ज़र्क़ानी)*

नीज़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ियाम मदीना मुनव्वरा में इतना तवील है कि हिजरत से लेकर क़ियामत तक इसी शहर में क़ियाम है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक के यहां मौजूद होने की वजह से जिस क़दर अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमतें हर आन और हर वक़्त नाज़िल होती रहती हैं, उनका न शुमार हो सकता है न अंदाज़ा। नीज़ शरीअते मुतह्हरा की तक्मील और शरीअत के जितने अहकाम इस शहर में नाज़िल हुए, उतने न मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुए, न किसी और जगह। नीज़ इसी फ़स्ल के नं॰ 5 पर जो हदीस आ रही है उससे भी ये हज़रात इस्तिदलाल फ़रमाते हैं जो मदीना तैयबा को मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल बताते हैं। बंदे के नाक़िस ख़्याल में उस हदीस से भी इस्तिदलाल किया जा सकता है जो इस फ़स्ल के नं॰ 9 के ज़ैल में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद आ रहा है कि कोई ज़मीन ऐसी नहीं कि जो मुझे ज़्यादा महबूब हो, इस एतिबार से कि मेरी क़ब्र वहां हो, बजुज़ (सिवाए) मदीना के।

(٣) عن سعدؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انى احرم مابين لا بتى المدينة ان يقطع عضاهها او يقتل صيدها وقال المدينة خيرلهم لو كانوا يعلمون لا يدعها احد رغبة عنها الا ابدل الله فيها من هو خير منه ولا يثبت احد على لاوائها وجهدها الا كنت له شفيعا او شهيدًا يوم القيمة رواه مسلم كذا فى المشكوٰة وفى تحريم المدينة عن علىؓ عند الشيخين وفى الصبر على لاواء المدينة روايات كثيرة فى الصحاح.

3. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मदीना मुनव्वरा की दोनों जानिब जो कंकरीली ज़मीन है, इसके दर्मियानी हिस्से को मैं हराम क़रार देता हूँ। इस लिहाज़ से कि उसके ख़ारदार दरख़्त काटे जायें या उसमें शिकार किया जाये, और हुज़ूर सल्ल॰ ने यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मदीना मोमिनीन के क़ियाम के लिये बेहतरीन जगह है। अगर वे इसकी ख़ूबियों को जानें तो यहां का क़ियाम न छोड़ें और जो शख़्स यहां के क़ियाम को उससे बददिल

होकर छोड़ेगा, अल्लाह जल्ल शानुहू उसका नेअ्मल बदल यहां भेज देगा, और जो शख़्स मदीना तैयबा के क़ियाम की मुश्किलात को बर्दाश्त करके यहां क़ियाम करेगा, मैं क़ियामत के दिन उसका सिफ़ारिशी या गवाह बनूँगा।

फ़ायदा:- इस हदीस शरीफ़ में कई मज़्मून हैं। और हर मज़्मून बहुत सी मुख़्तलिफ़ रिवायात में वारिद हुआ है :-

1. अव्वल यह है कि मैं मदीने को हराम क़रार देता हूँ। मदीना मुनव्वरा के दोनों जानिब पथरीली ज़मीन है। इन दोनों के दर्मियानी हिस्से का मतलब यह है कि तमाम मदीना और उसके क़रीब की ज़मीन को हराम क़रार देता हूँ।

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में हज़रत अली रज़ि॰ से हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जबले और और जबले सौर के दर्मियानी हिस्से को हराम क़रार देता हूँ, जबले सौर जबले उहुद के क़रीब एक छोटा सा पहाड़ बताते हैं और हराम करने का मतलब यह है कि यह जगह मोहतरम और हरम के हुक्म में है, न इस जगह शिकार किया जाये, न यहां का ख़ुद रौ (ख़ुद उगने वाला) घास काटा जाये जैसा कि मक्का मुकर्रमा के हरम में ये चीज़ें ना जायज़ हैं, ऐसे ही हुज़ूर सल्ल॰ ने यहां के मुताल्लिक़ भी इर्शाद फ़रमाया, लेकिन दूसरी रिवायात की बिना पर हनफ़िय्य: के नज़दीक दोनों जगह के हुक्म में यह फ़र्क़ है कि मक्का मुकर्रमा के हरम में ये चीज़ें नाजायज़ हैं और अगर कोई ऐसा करेगा तो बदला देना वाजिब होगा और हरमे मदीना में ख़िलाफ़े औला हैं और बदला देना वाजिब न होगा। यह मुमानअत भी दोनों जगह मकान की फ़ज़ीलत के लिहाज़ से है, जैसा कि शाही महलों के आस पास की जगहें सारी दुनिया में मोहतरम और क़ाबिले अदब होती हैं, वहां शिकार वग़ैरह खेलने की भी इजाज़त नहीं होती और किसी को वहां की पैदावार में तसर्रूफ़ का भी हक़ नहीं होता, यह एक मारूफ़ चीज़ है।

2. दूसरा मज़्मून मदीना मुनव्वरा में क़ियाम के मुताल्लिक़ है। यह मज़्मून भी बहुत सी रिवायात में आया है।

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेशीनगोई के तौर पर फ़रमाया कि यमन फ़त्ह होगा। बाज़ लोग उसके हालात की तहक़ीक़ करेंगे फिर अपने अहल व अयाल को और जो लोग उनके

कहने में आ जायेंगे उनको लेकर वहां चले जायेंगे हालांकि मदीना उनके लिये बेहतर था, काश, वे यहां की बरकात को जानते और शाम फ़त्ह होगा, लोग वहां के हालात की ख़बरें सुनकर अपने अहल को और जो उनके कहने में आ जायेंगे, उनको लेकर वहां मुंतक़िल हो जायेंगे, हालांकि मदीना उनके लिये बेहतर था। काश, वे इसको जानते। इराक़ फ़त्ह होगा और लोग वहां के हालात मालूम करके वहां अपने अहल को और जो कहने में आ जायें, उनको लेकर वहां मुंतक़िल हो जायेंगे और मदीना उनके लिये बेहतर था, काश, वे इसको जानते।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं कि यह हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद इसी तरह पूरा हुआ और ये शहर इसी तर्तीब से फ़त्ह हुए। *(फ़त्ह)*

हज़रत अबू उसैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत हमज़ा रज़ि० शहीद हुए तो हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ हज़रत हमज़ा की क़ब्र पर थे और उनका कफ़न सिर्फ़ एक छोटी सी चादर थी जो बदन पर भी पूरी न आती थी। जब उससे उनके चेहरे को ढांका जाता तो पांव खुल जाते, और जब पांव पर खींची जाती तो चेहरा खुल जाता, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि चादर को मुंह की तरफ़ कर दो और पांव पर दरख़्त के पत्ते डाल दो। सहाबा-ए-किराम रज़ि० रो रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि एक ज़माना आने वाला है कि लोग शादाब ज़मीनों की तरफ़ निकलेंगे, वहां जाकर खाने और पहनने को खूब मिलेगा, कसरत से सवारियां मिलेंगी तो अपने घरवालों को लिखेंगे कि तुम हिजाज़ की क़हत ज़दा जमीन में पड़े हो, यहां आ जाओ, हालांकि मदीना उनके लिये बेहतर है, काश वे जानते इस अम्र को। *(तर्ग़ीब)*

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि अंक़रीब लोग दूसरे शहरों की सरवत और पैदावार को देख कर अपने क़रीबी रिश्तेदारों को वहां बुलावेंगे कि यहां बड़ी पैदावार है, यहां आ जाओ, लेकिन मदीने का क़ियाम उनके लिये बेहतर है। काश वे इसकी बेहतरी को जानते। *(ज़ुर्क़ानी अलल् मुवाहिब)*

और ज़ाहिर है कि दुनिया की सरवत या पैदावार जितनी भी ज़्यादा हो जाये, जो बात मदीना पाक में बरकात के एतिबार से है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पड़ोसी होने की जो सआदत वहां हासिल है और दीन की तरफ़ रग़बत के जो अस्बाब वहां हैं, वे किसी दूसरी जगह कहां मयस्सर आ सकते हैं, और इन क़ीमती मोतियों के मुक़ाबले में दुन्यावी माल व मताअ् लाखों का हो या करोड़ों का, कब मुक़ाबला कर सकता है।

मुस्नद बज़्ज़ार की एक हदीस में हज़रत जाबिर रज़ि॰ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि मदीना मुनव्वरा से बाज़ आदमी किसी शादाब ज़मीन की तरफ़ सरवत की तलाश में जायेंगे और वहां उनको सरवत और शादाबी मिल जायेगी तो वे अपने अहल व आयाल को भी वहां मुंतक़िल कर लेंगे, लेकिन अगर वे मदीना के फ़ज़ाइल से बा ख़बर होते तो यक़ीनन मदीना उनके लिये बेहतर था।

(ज़ुर्क़ानी)

3. तीसरा मज़्मून यह है कि जो शख़्स मदीना के क़ियाम को उससे ऐराज़ करके और बद दिल होकर छोड़ेगा। हक़ तआला शानुहू उसका नेअ्मल बदल यहां तज्वीज़ करेगा।

हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर्र रह॰ क़ाज़ी अयाज़ रह॰ वग़ैरह ने इसको हुज़ूर के ज़माने के साथ ख़ास बताया है, लेकिन इमाम नववी रह॰ और अल्लामा अबी मालिकी रह॰ वग़ैरह ने इसको हमेशा के लिये आम बताया है।

अल्लामा ज़ुर्क़ानी रह॰ लिखते हैं कि यह बात उन हज़रात के लिये है जो वहां के बाशिंदे हैं, वहां के मुस्तक़िल रहने वाले हैं और जो हज़रात दूसरी जगह के मुक़ीमीन महज़ ज़ियारत के लिये आये हैं वे इसमें दाख़िल नहीं हैं। लेकिन यह इश्काल होता है कि बाज़ हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी मदीना तैयबा के क़ियाम को तर्क करके दूसरी जगह को वतन बनाया है लेकिन हक़ीक़त में इश्काल नहीं है इसलिये कि इन हज़रात का तर्के वतन दर हक़ीक़त एक बड़ा मुजाहदा और ईसार था। अगर ये हज़रात हक़ तआला शानुहू उनकी क़ब्रों को अन्वार व बरकात से ख़ूब पुर करे, अपनी ज़ाती ग़रज़ और अपनी ज़ात के नफ़ा को मुक़द्दम फ़रमाते तो आज हिन्दुस्तान और दुनिया के दूसरे मुल्कों में इस्लाम कैसे फैलता। यह इन्हीं हज़रात की क़ुर्बानियों का समरा है कि दुनिया के हर ख़ित्ते में इस्लाम की रौशनी फैली हुई है। इन हज़रात का दूर दराज़ शहरों में जाकर क़ियाम फ़रमाना दीन की ख़ातिर था। इस्लाम की ख़ातिर था, अल्लाह की रिज़ा के वास्ते था और उसके पाक रसूल सल्ल॰ की मेहनत को फैलाने के वास्ते था, यह ख़ुद हुज़ूर ही की ख़ुश्नूदी के वास्ते अपनी दिलबस्तगी को छोड़ना था।

أُرِيدُ وِصَالَهُ وَيُرِيدُ هَجْرِي ۞ فَأَتْرُكُ مَا أُرِيدُ لِمَا يُرِيدُ

तर्जुमा:- "मैं महबूब का विसाल चाहता हूँ और वह मुझसे जुदाई पसंद करता है, इसलिये मैं अपनी ख़ुशी को उसकी ख़ुशी पर क़ुर्बान करता हूँ।"

इन हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के मदीना पाक छोड़ने पर वहां की बरकात से, वहां की नमाज़ों में अज्र व सवाव की ज़्यादती से, जो नुक़्सान वाक़ेअ हुआ, इंशाअल्लाह उससे करोड़ों दर्जा ज़ायद वह सवाब उनको मिलता रहेगा, जो उनकी बरकत से दुनिया में इस्लाम फैलने से उनके हिस्से में आया और क़ियामत तक आता रहेगा, इसलिये कि बहुत सी अहादीस में यह मज़्मून आया है कि जो शख़्स कोई नेक काम करे तो उसको उसका सवाब तो होगा ही लेकिन उसकी वजह से जितने आदमी उस नेक काम को करते रहेंगे, उन सब के करने का सवाब करने वालों को मुस्तक़िल मिलता रहेगा, और उस शख़्स को सब करने वालों के करने का सवाब मुस्तक़िल मिलता रहेगा। इस लिहाज़ से मदीना पाक के छूटने से जो इन हज़रात के आमाल के सवाबों में कुछ कमी हुई होगी, उससे बदरजहा ज़ायद क़ियामत तक जितने आदमी मुसलमान होते रहेंगे और नेक आमाल करते रहेंगे, उनके आमाल का सवाब उन हज़रात को इंशाअल्लाह होता रहेगा, जिनकी वजह से जहा जहां इस्लाम फैला, इसी वजह से अकाबिर तालीम व तब्लीग़ पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देते रहे कि आदमी अगर ख़ुद नेक आमाल करे तो उसका सवाब अपनी ज़िन्दगी तक है, लेकिन अगर दूसरों को नेक अमल पर लगा जाये, तो उन सबके आमाल का सवाब उस शख़्स को मिलता रहेगा, जिसकी सई और कोशिश से दूसरे लोगों ने कोई नेक अमल किया हो, मुफ़्त का सवाब है और गोया एक सरमाया है जो किसी तिजारत में लगा दिया और हमेशा उसका नफ़ा मिलता रहेगा या एक किराये की जायदाद है, जिसका किराया घर बैठे हमेशा वसूल होता रहेगा, इसलिये बहुत ज़्यादा कोशिश इसकी होना चाहिए कि अपनी कोशिश से जितने भी ज़्यादा से ज़्यादा आदमी दीन पर क़ायम हो जायें, दीन पर पुख़्ता हो जायें, नेक अमल करने लगें, वह ग़नीमत है।

4. चौथा मज़्मून इस हदीस में यह है कि जो शख़्स मदीना तैयबा की तकालीफ़ को बर्दाश्त करके, उन पर सब्र करके वहां क़ियाम करेगा, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं उसका सिफ़ारिशी या गवाह हूँगा। यह मज़्मून बहुत सी आहदीस में ज़िक्र किया गया है।

हर्रा की लड़ाई में जबकि मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई हो रही थी, एक

शख़्स हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ के पास आए और जंग की वजह से मदीना पाक में सख़्त गरानी और अपने कुंबे की कसरत का ज़िक्र करके कहीं बाहर जाने का मश्वरा करने लगे। हज़रत अबू सईद ख़ुदीर रज़ि॰ ने फ़रमाया, तेरा नास हो, मैं कभी भी तुझे किसी दूसरी जगह मुंतक़िल होने का मश्वरा नहीं दूँगा। मैंने ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ से सुना है कि जो शख़्स मदीना की सख़्ती और भूख पर सब्र करेगा, मैं उसका क़ियामत में सिफ़ारिशी या गवाह हूँगा।

बाज़ उलमा ने कहा यह रावी को शक है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने सिफ़रिशी का लफ़्ज़ फ़रमाया या गवाह का लफ़्ज़ फ़रमाया।

अल्लामा क़स्तलानी रह॰ फ़रमाते हैं कि यह लफ़्ज़ यानी सिफ़रिशी या गवाह हज़रत जाबिर, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस, हज़रत सफ़िया बिन्ते अबी उबैद रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन, सब की हदीसों में मौजूद है। यह बात बहुत दुश्वार है कि सब ही को शक हो गया, इसलिये ज़ाहिर यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सललम ने ख़ुद ही दोनों लफ़्ज़ इर्शाद फ़रमाये और यह आदमियों के इख़्तिलाफ़ की वजह से फ़रमाया कि बाज़ लोगों के लिये सिफ़ारिशी बनूँगा और बाज़ के लिये गवाह, मसलन गुनाहगारों के लिये सिफ़रिशी और मुत्तक़ी लोगों के लिये गवाह, या यह कि जिन हज़रात की वफ़ात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात में हुई, उनके लिये गवाह और जिनकी वफ़ात हुज़ूर सल्ल॰ के विसाल के बाद हुई, उनके लिये सिफ़ारिशी।

बाज़ रिवायात में "या" के बजाये "और" का लफ़्ज़ आया है कि मैं उनके लिये सिफ़रिशी और गवाह बनूँगा। इस रिवायत के मुवाफ़िक़ सब के लिये दोनों चीज़ें जमा हो गयीं और यह सिफ़ारिश और शहादत जो इन हज़रात के लिये होगी, वह आम मोमिनीन के लिये सिफ़ारिश और शहादत के अलावा ख़ुसूसी होगी जो अहले मदीना के एज़ाज़ व इक्राम पर दलालत करती है और बाज़ उलमा ने कहा है कि यह सिफ़ारिश ही ख़ास क़िस्म की होगी मसलन तख़्फ़ीफ़े हिसाब की सिफ़ारिश हो या किसी ख़ास नौअ् के इक्राम की सिफ़ारिश हो, मसलन अर्श के साया तले होने की या जन्नत में जल्दी दाख़िले की या ख़ुसूसी मिंबरों की, जैसा कि अहादीस में बाज़ लोगों के मुताल्लिक़ आता है कि वे नूर के मिंबरों पर होंगे या और कोई इसी क़िस्म के एज़ाज़ की, और जो शख़्स इन फ़ज़ाइल से वाक़िफ़

होगा, वह कैसे वहां की मशक़्क़तों पर रग़बत से राज़ी न होगा, बिलख़ुसूस जबकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ुर्ब हर वक़्त हासिल हो:-

पाए दर ज़ंजीर पेशे दोस्तां,
बह् कि बा बेगान्गां दर बोस्तां।।

"दोस्तों के साथ क़ैद में रहना भी ग़ैरों के साथ बाग़ मे रहने से बेहतर है।"

और इसके साथ ही वहां के क़ियाम में, जो हर अमल में सवाब में ज़्यादती है, वह मज़ीद बरआं, और यह तो जब है कि वहां मशक़्क़तें ज़ायद हों भी, वरना कौन सी जगह दुनिया में ऐसी है, जहां किसी न किसी नौअ् की तकालीफ़ नहीं हैं और ख़ुसूसन इस फ़ित्ने के ज़माने में तो हर जगह तकालीफ़ ही तकालीफ़ हैं, इसके बावजूद लोग जहां मुक़ीम हैं, उससे मुन्तक़िल होना खुशी से गवारा नहीं करते, तो फिर मदीना जैसी जगह के क़ियाम का क्या कहना।

(٤) عن ابی هریرةؓ ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال ان الایمان لیارز الی المدینة کما تارز الحیة الی جحرها رواه البخاری.

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बेशक ईमान मदीने की तरफ़ ऐसा खिंच कर आता है, जैसा कि सांप अपने सूराख़ की तरफ़ आ जाता है।

फ़ायदा:- बाज़ उलमा ने कहा है कि यह इब्तिदाई ज़माने के एतिबार से है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के ज़माने में, जिन लोगों के दिल में ईमानी जज़्बा था, वे जोक़ दर जोक़ मदीना तैयबा हुज़ूर सल्ल॰ की ज़ियारत और दीन के सीखने के वास्ते आते थे और बाज़ ने कहा है कि तमाम ज़मानों के लिये है कि ईमानी जज़्बा रखने वाले हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत और हुज़ूर सल्ल॰ की मस्जिद में नमाज़ और आपके और आपके सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के आसार की ज़ियारत के शौक़ में खिंचे चले जाते हैं, और बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि यह हुज़ूर सल्ल॰ ने आख़िर ज़माने का हाल बताया है कि सारी दुनिया में से दीन सिमट कर मदीना तैयबा में आ जायेगा, इसकी ताईद एक और हदीस से होती है, जिसको इमाम

तिर्मिज़ी रह० ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से नक़ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस्लाम की बस्तियों में सबसे आख़िरी बस्ती जो क़ियामत के दिन वीरान होगी, वह मदीना तैयबा होगा यानी उसकी वीरानी सारी आबादियों के बाद होगी। *(मिश्कात)*

(٥) عن انس عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اللّٰھمّ اجعل بالمدینۃ ضعفی ما جعلت بمکۃ من البرکۃ متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ

5. हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह दुआ नक़ल करते हैं कि ऐ अल्लाह तआला, जितनी बरकतें आपने मक्का मुकर्रमा में रखी हैं, उनसे दोगुनी बरकतें मदीना मुनव्वरा में अता फ़रमा।

फ़ायदा:- जो हज़रात मदीना तैयबा को मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल बताते हैं, वे इस हदीस से भी इस्तिदलाल करते हैं जैसा कि हदीस नं० 3 के ज़ैल में गुज़रा, और जो हज़रात मक्का मुकर्रमा को अफ़ज़ल बताते हैं वे फ़रमाते हैं कि इस हदीस शरीफ़ में बरकत से मुराद ख़ास तौर से रोज़ी में बरकत मुराद है।

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में यह मज़्मून ज़रा तफ़सील से आया है, जिसका तर्जुमा यह है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि० का मामूल यह था कि जब मौसम में कोई फल आता तो सबसे पहला फ़ल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया जाता। हुज़ूर सल्ल० उसको लेकर यह दुआ फ़रमाते कि ऐ अल्लाह, हमारे फलों में बरकत फ़रमा और हमारे शहर में बरकत फ़रमा और हमारे साअ् में बरकत फ़रमा और हमारे मुद्द में बरकत अता फ़रमा, ऐ अल्लाह, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तेरे बंदे थे, तेरे ख़लील थे, तेरे नबी थे और मैं भी तेरा बंदा हूँ और तेरा नबी हूँ। उन्होंने मक्का मुकर्रमा के लिये दुआ की, मैं वैसी ही दुआ मदीना तैयबा के लिये करता हूँ और उससे दोचंद की दुआ करता हूँ। इसके बाद किसी छोटे बच्चे को वह फल मरहमत फ़रमा देते।

इस हदीस शरीफ़ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ की तरफ़ इशारा फ़रमाया, जो क़ुरआन पाक में मज़्कूर है:-

فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِىٓ إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ

"कि ऐ अल्लाह, लोगों के दिल इस शहर(मक्का मुकर्रमा) में रहने वालों की तरफ़ माइल कर और उनको फल अता फ़रमा।"

एक हदीस में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ गोश्त और पानी में बरकत के मुताल्लिक़ वारिद हुई और हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी इस दुआ को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ पर मुरत्तब फ़रमाया, इसलिये ये हज़रात फ़रमाते हैं कि यह बरकत भी उन ही चीज़ों के मुताल्लिक़ है। साअ् और मुद्द दो पैमाने हैं, जिनसे ग़ल्ला नापा जाता है, उनमें बरकत के यह मायने हैं कि रिज़्क़ में फ़राख़ी हो।

उलमा ने लिखा है कि इस दुआ का क़ुबूल होना मुशाहदे में आता है कि जो मिक़्दार खाने की मदीना तैयबा में काफ़ी हो जाती है, उतनी मिक़्दार खाने की मदीना तैयबा से बाहर काफ़ी नहीं होती, वहां रहने में इसका तजुर्बा होता है।
(फ़त्ह)

और जो हज़रात मदीना तैयबा की अफ़ज़लियत के क़ायल हैं, वे फ़रमाते हैं कि बरकत के मायने ख़ैर में ज़्यादती के हैं जो दीन और दुनिया दोनों की ख़ैर को शमिल है, इसलिये हर नौअ् की ख़ैर में मक्का मुकर्रमा से दो चंद की दुआ है। (फ़त्ह)

एक हदीस में आया है कि, हज़रत अली रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल॰ के साथ जा रहे थे। जब मदीने से बाहर हर्रा में सुक़्या पर पहुँचे (एक जगह का नाम है मदीना की आबादी से बाहर) तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वुज़ू का पानी मंगाया और वुज़ू करके क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके खड़े हुए और अल्लाहु अक्बर कहने के बाद यह दुआ की, ऐ अल्लाह हज़रत इब्राहीम तेरे बंदे थे, तेरे ख़लील थे, उन्होंने मक्का वालों के लिये बरकत की दुआ की और मैं मुहम्मद हूँ, (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तेरा बंदा हूँ, तेरा रसूल हूँ। मैं तुझसे मदीना वालों के लिये दुआ करता हूँ कि तू उनके मुद्द में और उनके साअ् में ऐसी ही बरकत कर जैसी कि तूने अहले मक्का के लिये की और इसके साथ दो चंद बर्कतें ज़्यादा कर। (कंज़)

इस हदीस शरीफ़ में तीन गुना ज़्यादती की दुआ हुई। साहिबे तर्ग़ीब ने इस की सनद को उम्दा और क़वी बताया है।

हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मदीना तैयबा में गरानी बहुत

हो गयी और लोग सख़्त मशक़्क़त में पड़ गये तो हुज़ूर सल्ल॰ ने सब्र की तलक़ीन फ़रमायी और यह ख़ुशख़बरी दी कि मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे साअ् में और तुम्हारे मुद्द में बरकत की दुआ की है। यह भी इर्शाद फ़रमाया कि खाना अलाहिदा अलाहिदा न खाया करो, इकट्ठे होकर खाया करो। इस सूरत में एक का खाना दो को काफ़ी हो जाता है और दो का खाना चार को काफ़ी हो जाता है और चार का पांच छ: को काफ़ी हो जाता है। इकट्ठे खाने में बरकत होती है। जो शख़्स मदीना तैयबा की मशक़्क़त पर सब्र करेगा, मैं क़ियामत के दिन उसके लिये सिफ़ारिशी और गवाह बनूँगा और जो शख़्स मदीना से ऐराज़ करके यहां से जायेगा, हक़ तआला शानुहू उसका बेहतरीन बदल यहां कर देगा और जो मदीना वालों के साथ बुराई का इरादा करेगा, वह इस तरह पिघल जायेगा जैसा कि पानी में नमक पिघल जाता है। *(तर्ग़ीब)*

यह मज़्मून भी बहुत सी रिवायात में नक़ल किया गया, जैसा कि आइंदा हदीस के ज़ैल में आ रहा है।

(٦) عن سعدؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يكيد اهل المدينة احد الا انماع كما ينماع الملح فى الماء متفق عليه كذا فى المشكوٰة

6. हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो कोई भी मदीना मुनव्वरा में रहने वालों के साथ मक्र करेगा, वह ऐसा घुल जायेगा जैसा कि पानी में नमक घुल जाता है।

फ़ायदा:- यह मज़्मून बहुत सी अहादीस में बहुत मुख़्तलिफ़ उन्वानात से नक़ल किया गया, इससे पहली हदीस के ज़ैल में हज़रत उमर रज़ि॰ से भी हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद इस क़िस्म का नक़ल किया गया।

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि जो शख़्स मदीना वालों के साथ किसी क़िस्म की बुराई का इरादा करेगा तो हक़ तआला शानुहू उसको आग में इस तरह पिघला देंगे, जिस तरह आग में रांग पिघलता है या पानी में नमक घुल जाता है।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ ने एक मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया कि वह शख़्स बर्बाद हो जाये, जो अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को डराता है, उनके साहबज़ादे ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल॰ का विसाल हो चुका। हुज़ूर सल्ल॰ को कोई शख़्स किस तरह डरा सकता है, तो हज़रत जाबिर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो शख़्स मदीना वालों को डराता है, वह उस चीज़ को डराता है जो मेरे पहलू के दर्मियान है (यानी मेरे दिल को)।

एक दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स मदीना वालों को डराये अल्लाह जल्ल शानुहू उसको डराये।

हज़रत उबादा रज़ि॰ से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि ऐ अल्लाह, जो शख़्स मदीना वालों पर ज़ुल्म करे या उनको डराये, तू उसको डरा और उस पर अल्लाह की लानत, फ़रिश्तों की लानत और सारी दुनिया की लानत, न उनकी फ़र्ज़ इबादत मक़्बूल, न नफ़्ल इबादत मक़्बूल।

हज़रत साइब बिन ख़ल्लाद रज़ि॰ से भी हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद ऐसे ही नक़ल किया गया, जैसा कि हज़रत उबादा रज़ि॰ ने नक़ल किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मदीना वालों को तक्लीफ़ पहुँचाये, उसको अल्लाह तआला तक्लीफ़ पहुँचाये और उस पर अल्लाह की लानत, फ़रिश्तों की लानत, सारी दुनिया के आदमियों की लानत, न उसका फ़रीज़ा मक़्बूल, न नफ़्ल।

(तर्ग़ीब)

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने यह दुआ की है कि ऐ अल्लाह, जो मदीना वालों के साथ बुराई का इरादा करे, तू उसको ऐसा पिघला दे जैसा कि रांग आग में और नमक पानी में और चिकनाई धूप में पिघलती है। *(कंज़ुल उम्माल)*

और भी बाज़ सहाबा रज़ि॰ से इस क़िस्म के मज़ामीन नक़ल किये गये हैं। यह बड़ी सख़्त वईदें हैं जो लोग ज़ियारत के वास्ते वहां हाज़िर हों, वे इस का बहुत ज़्यादा ख़्याल और एहतिमाम रखें कि उन लोगों को अज़ीयत पहुँचायें, न ख़रीद और फ़रोख़्त में उनसे किसी क़िस्म की चालबाज़ी और मक्र करें, यहां रहते हुए भी वहां के रहने वालों के साथ इसका बहुत लिहाज़ रखें, जो मामला उनके साथ करें, वह निहायत सफ़ाई का होना चाहिय, किसी क़िस्म की दग़ा और फ़रेब उन लोगों के साथ करने से बहुत ज़्यादा एहतिराज़ करें।

(٧) عن انسؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم من صلّی فی مسجدی اربعین صلوۃ لا تفوتہ صلوۃ کتب لہ براءۃ من النار وبراۃ من العذاب وبریٔ من النفاق رواہ احمد والطبرانی فی الاوسط ورجالہ ثقات وروی الترمذی بعضہ کذا فی الترغیب

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें ऐसी तरह पढ़े कि एक नमाज़ भी उस की मस्जिद से फ़ौत न हो, तो उस के लिए आग से बराअत लिखी जाती है, अज़ाब से बराअत लिखी जाती है और वह शख़्स निफ़ाक़ से बरी है।

फ़ायदाः- बड़ी अहम फ़ज़ीलत है और बड़ी आसान। ज़ाइरीन को चाहिए कि कम अज़ कम आठ रोज़ का क़ियाम वहां ज़रूर करें और जाने से पहले ऊंट या मोटर वालों से आठ रोज़ का क़ियाम तै कर लें ताकि चालीस नमाज़ें पूरी हो जाएं और इस का एहतिमाम करें कि इस दर्मियान में कोई नमाज़ फ़ौत न होने पाए। अगर किसी जगह ज़ियारत वग़ैरह को जाना हो तो ऐसी सूरत तज्वीज़ करें कि सुबह की नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़ कर जाएं और ज़ुहर की नमाज़ वापसी में मस्जिद में मयस्सर हो जाए।

(٨) عن عائشةؓ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یقول للمریض بسم اللہ تربۃ ارضنا بریقۃ بعضنا یشفی سقیمنا رواہ البخاری بمعناہ مسلم و ابوداؤد وغیرھما

8. हज़रत आईशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरीज़ के लिए फ़रमाया करते थे-"बिस्मिल्लाहि तुर्ब-तु अर्ज़िना बिरीक़-ति बअ्ज़िना यश्फ़ी सक़ीम-ना॰

फ़ायदाः- इस दुआ का तर्जुमा यह है कि अल्लाह के नाम के साथ हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से बाज़ आदमियों के लब के साथ मिल कर हमारे बीमार को शिफ़ा देती है।

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जब कोई आदमी बीमार होता या उस के ज़ख़्म वग़ैरह होता तो हुज़ूर सल्ल॰ ऐसा करते।

इमाम नववी रह॰ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ उंगली को लब (होंट मुबारक) लगा कर ज़मीन पर लगाते ताकि उस को मिट्टी लग जाए और यह दुआ पढ़ते, फिर उस को उस जगह लगा देते जो माऊफ़ है।

बाज़ उलमा ने इसको आम कहा है, वह हर जगह की मिट्टी के मुताल्लिक़ ऐसा ही कहते हैं और इसकी वजह यह बताते हैं कि वतन की मिट्टी को मिज़ाज से मुनासबत में ख़ास दख़ल होता है, जैसा कि हाफ़िज़ रह॰ ने फ़त्हुल बारी में इस को तफ़्सील से नक़ल किया है और बाज़ उलमा ने इस को मदीना

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें ऐसी तरह पढ़े कि एक नमाज़ भी उस की मस्जिद से फ़ौत न हो, तो उस के लिए आग से बराअत लिखी जाती है, अज़ाब से बराअत लिखी जाती है और वह शख़्स निफ़ाक़ से बरी है।

फ़ायदा:- बड़ी अहम फ़ज़ीलत है और बड़ी आसान। ज़ाइरीन को चाहिए कि कम अज़ कम आठ रोज़ का कियाम वहां ज़रूर करें और जाने से पहले ऊंट या मोटर वालों से आठ रोज़ का क़ियाम तै कर लें ताकि चालीस नमाज़ें पूरी हो जाएं और इस का एहतिमाम करें कि इस दर्मियान में कोई नमाज़ फ़ौत न होने पाए। अगर किसी जगह ज़ियारत वग़ैरह को जाना हो तो ऐसी सूरत तज्वीज़ करें कि सुबह की नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़ कर जाएं और ज़ुहर की नमाज़ वापसी में मस्जिद में मयस्सर हो जाए।

(٨) عن عائشةؓ ان النبی صلی الله علیه وسلم کان یقول للمریض بِسمِ اللهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا بِرِیْقَةِ بَعْضِنَا یُشْفٰی سَقِیْمُنَا رواه البخاری بمعناه مسلم و ابوداؤد وغیرهما

8. हज़रत आईशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरीज़ के लिए फ़रमाया करते थे-"बिस्मिल्लाहि तुर्ब-तु अर्ज़िना बिरीक़-ति बअ़्ज़िना यश्फ़ी सक़ीम-ना॰

फ़ायदा:- इस दुआ का तर्जुमा यह है कि अल्लाह के नाम के साथ हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से बाज़ आदमियों के लब के साथ मिल कर हमारे बीमार को शिफ़ा देती है।

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जब कोई आदमी बीमार होता या उस के ज़ख़्म वग़ैरह होता तो हुज़ूर सल्ल॰ ऐसा करते।

इमाम नववी रह॰ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ उंगली को लब (होंट मुबारक) लगा कर ज़मीन पर लगाते ताकि उस को मिट्टी लग जाए और यह दुआ पढ़ते, फिर उस को उस जगह लगा देते जो माऊफ़ है।

बाज़ उलमा ने इसको आम कहा है, वह हर जगह की मिट्टी के मुताल्लिक़ ऐसा ही कहते हैं और इसकी वजह यह बताते हैं कि वतन की मिट्टी को मिज़ाज से मुनासबत में ख़ास दख़ल होता है, जैसा कि हाफ़िज़ रह॰ ने फ़त्हुल बारी में इस को तफ़्सील से नक़ल किया है और बाज़ उलमा ने इस को मदीना

पाक की मिट्टी के साथ ख़ास बताया है।

अल्लामा क़स्तलानी ने मुवाहिबे लदुन्निया में मदीना पाक की ख़ुसूसियात में लिखा है कि इस का ग़ुबार जुज़ाम और बर्स के लिए ख़ुसूसियत से शिफ़ा है।

अल्लामा ज़र्क़ानी कहते हैं कि यह न कोई तिब्बी चीज़ है न अक़्ली चीज़ है लेकिन मुन्किर को नफ़ा नहीं करती, अल्लामा ज़र्क़ानी ने बाज़ लोगों के हालात भी लिखे हैं जिन को बरस की बीमारी थी और मदीना पाक की मिट्टी मलने से वे अच्छे हो गए, अल्लामा क़स्तानी कहते हैं, बल्कि हर मर्ज़ के लिए शिफ़ा है।

अल्लामा ज़र्क़ानी रह॰ ने लिखा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा क़बीला बनूल हारिस के पास गये, वे लोग बीमार थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, क्या हाल है? कहने लगे, हुज़ूर ! हम लोग बुख़ार में मुब्तला हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तुम्हारे पास तो सईब मौजूद है। (यह मदीना की एक ख़ास जगह का नाम है जो वादी-ए-बुत्हान में है) उन्होंने अर्ज़ किया कि सईब को क्या करें? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, उस की मिट्टी लेकर पानी में डाल कर उस पर यह पढ़ कर लब डालो-

بِسْمِ اللّٰہِ تُرَابُ اَرْضِنَا بِرِیْقِ بَعْضِنَا شِفَاءٌ لِمَرِیْضِنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا

इन हज़रात ने उसका इस्तेमाल किया। अल्लाह के फ़ज़्ल से बुख़ार जाता रहा।

इस क़िस्से के नक़ल करने वाले एक रावी कहते हैं कि लोगों के उस जगह से मिट्टी उठाने की वजह से वहां गढ़ा भी पड़ गया, बहुत से लोगों ने इस का तजुर्बा किया।

अल्लामा सम्हूदी रह॰ कहते हैं कि यह जगह अब तक भी मौजूद है। लोग इस की मिट्टी बीमारों के वास्ते लाते हैं।

हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मदीने का ग़ुबार कोढ़ की बीमारी के लिए शिफ़ा है। *(ज़ुर्क़ानी)*

इस नाकारा का तजुर्बा तो यहां तक है कि मदीना तैयबा की मिट्टी इस दुआ के साथ ताऊन की गिलटी तक के लिए भी नाफ़ेअ हुई है और वफ़ाउल वफ़ा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल किया है कि उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस की मिट्टी में हर बीमारी का इलाज है।

(۹) عن ابن عمرؓ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من استطاع ان يموت بالمدينة فليمت بها فانى اشفع لمن يموت بها رواه الترمذى و ابن ماجه وابن حبان فى صحيحه والبيهقى ولفظ ابن ماجه فانى اشهد لمن مات بها كذا فى الترغيب۔

9. हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स इस की ताक़त रखता हो कि मदीना तैयबा में मरे, चाहिए कि वहीं मरे, इस लिए कि मैं उस शख़्स का सिफ़ारिशी हूंगा जो मदीना में मरेगा।

दुसरी हदीस में है कि मैं उसका गवाह बनूंगा।

फ़ायदाः- बहुत से सहाबा रज़ि॰ से यह मज़्मून नक़ल किया गया। हजरत सुमैता कहती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस की ताक़त रखता हो कि मदीना के सिवा कहीं न मरे, वह मदीना ही में मरे, इस लिए कि मैं उस के लिए गवाह बनूंगा जो मदीना में मरे। *(तर्ग़ीब)*

उलमा ने लिखा है कि शफ़ाअत से मुराद खास किस्म की शफ़ाअत है, वर्ना हुज़ूर सल्ल॰ की आम शफ़ाअत तो सारे ही मुसलमानों के लिए होगी, और ताक़त रखने का मतलब यह है कि इस की कोशिश करे कि वहां आख़िर तक रहे।

अल्लामा ज़र्क़ानी रह॰ कहते हैं कि यह तर्ग़ीब है वहां से बाहर न जाने की, कि मरने तक वहीं रहे।

इब्नुल हाज्ज रह॰ कहते हैं कि इस को ताक़त रखने से ताबीर किया, गोया इशारा है इस तरफ कि इस की इन्तिहाई कोशिश करे।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना अल-हाज सैय्यद अहमद साहिब फ़ैज़ाबादी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने जो मदरसा शरअिया मदीना तैयबा के बानी और हज़रत शेख़ुल अरब वल्अजम हज़रते अक़्दस मौलाना सैय्यद हुसैन अहमद साहिब मदनी के बड़े भाई थे, कई मर्तबा फ़रमाया कि हिन्दुस्तान के दोस्तों से मिलने के लिए जाने को तो एक मर्तबा दिल चाहता है, मगर बुढ़ापा आ गया, ऐसा न हो कि मदीने की मौत नसीब न हो।

मेरे आक़ा हज़रते अक़्दस मौलाना ख़लील अहमद साहिब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने मुल्तज़म पर जो दुआऐं कीं, मिनजुम्ला उन के यह भी थी कि हक़

तआला शानुहू मदीना पाक की मौत नसीब फ़रमाए।

और हज़रत उमर रज़ि॰ की दुआ तो मशहूर है-

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ بِبَلَدِ رَسُوْلِكَ

अल्लाहुम्- मर्ज़ुक़्नी शहाद-तन् फ़ी सबीलि-क वज्अल मौती बि ब-ल-दि-रसूलि-क

"ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत अता फ़रमा और अपने रसूल के शहर में मौत अता फ़रमा।

इन दोनों दुआओं का जमा होना बज़ाहिर दुश्वार था कि मदीना-ए-पाक दारुल इस्लाम, और कुफ़्र से ऐसा बईद हो चुका था कि शैतान भी उस से मायूस हो चुका था। ऐसी हालत से वहां शहादत बज़ाहिर दुश्वार थी, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू जिस काम का इरादा फ़रमा लें, तो उन को अस्बाब पैदा करने क्या मुश्किल हैं। ख़ास मस्जिदे नबवी में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बड़े मज्मे के दर्मियान ऐन नमाज़ की हालत में अबू लुअ्लुअ् काफ़िर के हाथ शहादत नसीब हुई।

यहया बिन सईद रह॰ कहते हैं कि एक मर्तबा एक क़ब्र खोदी जा रही थी और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां तशरीफ़ फ़रमा थे, एक साहब तशरीफ़ लाए और क़ब्र को देख कर कहने लगे कि मोमिन के लिए यह कैसी बुरी जगह है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम ने कैसी बुरी बात कही।

हुज़ूर सल्ल॰ की मुराद ग़ालिबन यह थी कि मोमिन की क़ब्र को बुरी जगह बताया, हालांकि वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

वह साहब कहने लगे, हुज़ूर सल्ल॰! मेरा मक़्सद तो यह था कि यहां मर गये, कहीं जाकर अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाते। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि शहादत के बराबर तो कोई चीज़ ही नहीं, लेकिन सारी ज़मीन पर कोई जगह ऐसी नहीं, ज़हां मुझे अपनी क़ब्र बनायी जानी पसन्दीदा हो, बजुज़ (सिवाए) मदीना तैयबा के। हुज़ूर सल्ल॰ ने तीन मर्तबा यही अल्फ़ाज़ फ़रमाए। *(मिश्कात)*

मदीना पाक की मौत ईमान के साथ किसी ख़ुशनसीब को मयस्सर हो जाए, इस से बढ़ कर मरने के वक़्त क्या दौलत हो सकती है कि जन्नतुल बक़ीअ् की मिट्टी नसीब हो जाए, जहां हुज़ूर सल्ल॰ के अहले बैत मद्फ़ून हैं, दो के

अलावा सारी अज़्वाजे मुतह्हरात मद्फ़ून हैं और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की कितनी बड़ी जमाअत मद्फ़ून है। हज़रत इमाम मालिक रह॰ से नक़ल किया गया है कि दस हज़ार सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम इस मक़्बरे में मद्फ़ून हैं। *(ज़ुर्क़ानी)*

इन पाक अर्वाह पर अल्लाह जल्ल शानुहू की किस क़दर रहमतें हर वक़्त नाज़िल होती होंगी, यह ज़ाहिर चीज़ है।

इब्ने नज्जार रह॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया है कि दो क़ब्रस्तान आसमान वालों के लिए ज़मीन पर ऐसे चमकते हैं जैसा कि ज़मीन वालों के लिए आसमान पर चांद और सूरज एक बक़ीअ् का क़ब्रस्तान, दूसर मक़्बरा अस्क़लान।

और कअब अहबार, जो तौरात के बड़े आलिम थे, फ़रमाते हैं कि तौरात में लिखा है कि जन्नतुल बक़ीअ् एक क़ुब्बा की तरह से है, जिस पर मुस्तक़िल फ़रिश्तों की जमाअत मुक़र्रर है कि जब वह पुर हो जाए, उसको जन्नत में उल्ट दें। *(ज़ुर्क़ानी)*

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि क़ियामत में सब से अव्वल मेरी क़ब्र शक़ होगी, मैं उस में से निकलूंगा, फिर अबूबक्र रज़ि॰ अपनी क़ब्र से निकलेंगे, फिर उमर, फिर मैं जन्नतुल बक़ीअ् में जाऊंगा और वहां जितने मद्फ़ून हैं, उन सब को अपने साथ लुंगा, फिर मक्का मुकर्रमा के क़ब्रस्तान वालों का इन्तिज़ार करूंगा, वे मक्का और मदीना के दर्मियान आ कर मुझ से मिलेंगे।

इमाम तिर्मिज़ी ने इस ्दीस को सहीह् बताया है। *(ज़ुर्क़ानी)*

(١٠) عن ابی ہریرةؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم مابین بیتی ومنبری روضۃ من ریاض الجنۃ ومنبری علی حوضی رواہ البخاری ومسلم وغیرھما وفی حدیث سعد ابن ابی وقاصؓ عند البزار بسند رجالہ ثقات وعند الطبرانی من حدیث ابن عمرؓ بلفظ القبر فعلی ھذا المراد بالبیت بیت عائشۃؓ الذی صارفیہ قبرہ کذا فی الفتح۔

10. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो जगह मेरे घर यानी मेरी क़ब्र और मेरे मिंबर के दर्मियान है, वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिंबर मेरे हौज़ पर है।

फ़ायदाः- इस हदीस शरीफ़ में दो मज़्मून वारिद हैं-

1. अव्वल यह कि मस्जिदे नववी का वह हिस्सा, जो क़ब्रे अत्हर और मिंवर शरीफ़ के दर्मियान है, वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। यह मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ है कि मेरे घर से मुराद हज़रत आईशा रज़ि॰ का घर है, जिस में वाद में हुज़ूर सल्ल॰ की क़ब्र शरीफ़ बनी।

बाज़ उलमा ने मेरे घर से आम मुराद लिया है यानी तमाम अज़्वाज के घर और ज़वाइदे मुस्नद अहमद की एक रिवायत से इस की ताईद की, जिस में वारिद हुआ है कि इन घरों के और मिंवर के दर्मियान एक बाग़ है जन्नत के बाग़ों में से। इस सूरत में अज़्वाजे मुतह्हरात के जो मकानात वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए हैं। वह सारा हिस्सा रौज़ा ही है। *(नुज़्हत)*

इस के मतलब में उलमा के तीन क़ौल हैं-

1. अव्वल यह कि अल्लाह की रहमतों के नाज़िल होने में यह हिस्सा ऐसा ही है जैसा कि जन्नत का बाग़ हो कि जिस तरह वहां हर वक़्त अल्लाह जल्ल शानूहू की रहमतें नाज़िल होती रहती हैं, इस तरह यहां भी हर वक़्त अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमतें नाज़िल होती हैं।

2. दूसरा क़ौल यह है कि इस जगह हक़ीक़त में जन्नत का एक टुकड़ा है, जो इस दुनिया में मुंतक़िल किया गया है और बेऐनिही यह टुकड़ा जन्नत में मुंतक़िल किया जाएगा।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़त्हुल बारी में फ़रमाते हैं कि इस हदीस से भी मदीना तैयबा के मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल होने पर इस्तिदलाल किया गया है, इस लिए कि इस हदीस से मालूम होता है कि यह हिस्सा जन्नत का टुकड़ा है और दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जन्नत का एक कमान के बक़द्र हिस्सा भी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, सब से अफ़ज़ल है।

अक्सर उलमा के नज़दीक यह तीसरा क़ौल राजेह है।

इब्ने हजर मक्की रह॰ शर्हे मनासिके नववी में लिखते है, सब से बेहतर क़ौल वह है जो इमाम मालिक रह॰ वग़ैरह से नक़ल किया गया कि यह हदीस अपने ज़ाहिर पर है और यह जगह जन्नत में मुंतक़िल हो जाएगी।

2. दूसरा मज़्मून हदीसे बाला में यह है कि मेरा मिंबर मेरे हौज़ पर होगा,

इस के मायने में भी उलमा के तीन क़ौल हैं-

1. अव्वल यह कि यह मिंबर शरीफ़ जो मस्जिद में है। यह बेऐनिही हौज़े कौसर पर मुंतक़िल हो जाएगा।

2. दूसरा क़ौल यह है कि यह हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम ने हौज़े कौसर का हाल बयान फ़रमाया कि उस पर मेरे लिए एक मिंबर होगा। इस सूरत में मस्जिद के इस मिंबर से कोई ताल्लुक़ नहीं।

3. तीसरे मायने यह हैं कि मस्जिद में जो मिंबर शरीफ़ है, उस के मुत्तसिल इबादत करने का समरा और असर यह है कि उस की बरकत से क़ियामत में हौज़े कौसर पर हाज़िरी नसीब होती है।

क़ाज़ी अयाज़ रह० ने शिफ़ा में लिखा है कि पहले मायने सब से ज़्यादा ज़ाहिर हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़तहुल बारी में फ़रमाते हैं कि अक्सर उलमा ने यही फ़रमाया है कि वही मिंबर मुराद है, जिस पर खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० ने यह इर्शाद फरमाया था।

और हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० की रिवायत से इसी की ताईद होती है। वे हुज़ूर सल्ल०. का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि मेरे मिंबर के पाए जन्नत में सतून बना दिए जाएंगे।

और भी बहुत से उलमा ने इसी मायने को तर्जीह दी है। इसी वजह से मस्जिदे नबवी के दर्मियान में ये दो जगह, एक रौज़ा, दूसरे मिंबर की जगह ख़ास तौर से अहम हैं। इन के अलावा और भी बाज़ मवाक़े ख़ुसूसी हैं, जिन के पास जाकर ख़ुसूसियत से दरूद व दुआ वग़ैरह करना चाहिए। हज की किताबों में उन को तफ़्सील से ज़िक्र किया है, उन में से चंद को यहां भी ज़िक्र किया जाता है।

मुल्ला अली क़ारी रह० फ़रमाते हैं कि जिन स्तूनों की ख़ास फ़ज़ीलत हैं और इसी तरह से उन के अलावा जो मुतबर्रक मक़ामात हैं, उन की ज़ियारत करना चाहिए और उन के पास ख़ुसूसियत से नवाफ़िल- दुआ वग़ैरह करना चाहिए, बिल ख़ुसूस मस्जिद का जो हिस्सा हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में मस्जिद था, वह ख़ास तौर से ज़्यादा अहम और ज़्यादा क़ाबिले एहतिमाम है और इस हिस्से में जितने सतून हैं, वे ख़ास तौर पर मुतबर्रक हैं कि बुख़ारी शरीफ की हदीस के मुवाफ़िक़ सहाबा-ए-किराम रज़ि० सतूनों के क़रीब कसरत से नमाज़ पढ़ा करते थे, उन में

से आठ सतून ख़ास तौर से अफ़्ज़ल और मुतबर्रक और मारूफ़ हैं।

1. उस्तुवाना-ए-मुख़ल्लक़: - यह जगह सब से ज़्यादा मुतबर्रक है। यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पढ़ने की जगह है, इसी को उस्तुवाना-ए-हन्नाना भी कहते हैं। इस जगह खजूर का वह तना था, जिस पर टेक लगा कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर बनने से पहले ख़ुत्बा पढ़ा करते थे जब मिंबर शरीफ़ तैय्यार हुआ और हुज़ूर सल्ल॰ ख़ुत्बे के लिए उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उसमें से बहुत ज़ोर से रोने की आवाज़ आयी।

एक रिवायत में है कि उस के रोने से मस्जिद गूंज गयी।

दूसरी रिवायत में है कि उस के रोने से और उस की हालत से मस्जिद वाले भी रोने लगे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के पास आए और उस पर दस्ते मुबारक रखा, जिस से उस का रोना बन्द हुआ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इस के क़रीब अल्लाह का ज़िक्र होता था, अब मिंबर बन जाने से यह उस से महरूम हो गया, इस की वजह से रो रहा है। अगर मैं उस पर हाथ न रखता तो क़ियामत तक इसी तरह रोता रहता, इस के बाद उस को दफ़्न कर दिया गया।

बहुत मशहूर क़िस्सा है। दस सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने इसको नक़ल किया है। हसन बसरी रह॰ जब इस का क़िस्सा नक़ल फ़रमाते तो रोने लगते और फ़रमाते कि अल्लाह के बंदो! खजूर के दरख़्त को तो हुज़ूर सल्ल॰ का इतना इश्तयाक़ हो, तुम तो इस से भी ज़्यादा शौक़ के अहल थे। *(शिफ़ा)*

एक हदीस में है कि जब मिंबर तैयार हो गया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के दिन उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यह सतून ऐसे ज़ोर से चिल्लाया, क़रीब था कि फट जाए। हुज़ूर सल्ल॰ मिंबर से उतरे और उसे अपने से लगाया, तो इस तरह सिसकियां ले रहा था जैसे बच्चा किया करता है, जिस वक़्त कि उस को रोते हुए को चुप किया जाए। *(बुख़ारी)*

इसी वजह से उस को उस्तुवाना-ए-हन्नान: कहते हैं, जिस के मायने रोने वाली ऊंटनी के हैं और मुख़ल्लक़: ख़लूक़ से, जो एक मुरक्कब ख़ुश्बू का नाम है, वह उस पर ख़ास तौर से मली जाती थी, अगरचे और सतूनों पर भी मली जाती थी और इस लिए और भी बाज़ सतूनों को मुख़ल्लक़ा कहा जाता था, मगर अक्सर इसी को कहा जाता है।

हज़रत इमाम मालिक रह० फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी में नमाज़ के लिए सब से अफ़्ज़ल जगह यही है। इसी जगह मेहराबुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम से मेहराब बना दी गयी, जो हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में न थी बल्कि वलीद बिन अबदुल मलिक के ज़माने में जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने बहैसियते अमीरे मदीना होने के मस्जिद की तामीर करायी है, उस वक्त से मेहराब बनी है। *(नुज़्हतुन्नाज़िरीन)*

2. उस्तुवाना-ए-आइशा:- जिस को उस्तुवानतुल मुहाजिरीन भी कहते हैं, इस लिए कि मुहाजिरीन की अक्सर नशिस्त इस जगह रहती थी। इब्तिदाअन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुसल्ला इसी जगह था। इस के बाद आगे के सतून की तरफ़, जो न० 1 में गुज़रा, तज्वीज़ हुआ। इस को उस्तुवानतुल क़ुरअ: भी कहते हैं, जिसकी वजह यह है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से नक़ल किया कि इस मस्जिद में एक जगह ऐसी है कि अगर लोगों को उस का हाल मालूम हो जाए तो उस के लिए हुजूम की वजह से क़ुरअ: डालना पड़े। लोगों ने हज़रत आइशा रज़ि० से पुछा कि वह कौन सी जगह है, तो उन्होंने उस वक़्त बताने से इन्कार फ़रमाया। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० के इसरार पर हज़रत आइशा रज़ि० ने उनको बताया। इसी लिए इस को उस्तुवाना-ए-आइशा कहते हैं कि उन की हदीस और उन की तअ्यीन से इस की तअ्यीन हुई। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० अक्सर इस के क़रीब नमाज़ पढ़ा करते थे। एक हदीस में आया है कि इस जगह दुआ क़ुबूल होती है।

3. उस्तुवानतुत्तौब: :- और इसको उस्तुवाना-ए-अबू लुबाब: भी कहते हैं। हज़रत अबू लुबाबा रज़ि० मश्हूर सहाबी हैं ग़ज़्वा-ए-बनी क़ुरैज़ा के वक़्त एक ग़लती उन से सरज़द हो गयी थी, वह यह कि जिस वक़्त यहूद बनी क़ुरैज़ा का मुहासरा हो रहा था, तो उन्होंने तंग आकर हथियार डालने का इरादा किया और अबू लुबाबा रज़ि० से ज़माना-ए-जाहिलिय्यत से बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ात थे, तो उन्होंने मश्वरे के लिए उन को बुलाया कि हुज़ूर सल्ल० का अिन्दिया उन से अपने मुताल्लिक़ मालूम करें। वह वहां तशरीफ़ ले गये। वे सब उन को देख कर बे-तहाशा रोने लगे। उन के रोने को देख कर उन का भी दिल भर आया और उन के दर्याफ़्त करने पर उन्होंने अपने हल्क़ की तरफ़ इशारा किया, गोया कि हुज़ूर सल्ल० का अिन्दिया क़त्ल करने का है, लेकिन इस के बाद मअन् तनब्बुह हुआ कि मुझ से बड़ी ग़लती हुई। वहां से वापस आकर अपने आप को उस जगह जो

खजूर का सतून था, उस से बाँध दिया कि जब तक मेरी तौबा क़ुबूल न होगी, अपने को न खोलूंगा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही खोलेंगे, तो इस जगह से रिहाई करूंगा। हुज़ूर सल्ल० को जब इत्तिला हुई तो आपने फ़रमाया कि अगर वह मेरे पास आ जाते, तो मैं अल्लाह जल्ल शानुहू से उन के लिए इस्तिग़फ़ार करता, मगर अब वह बराहे रास्त अपनी तौबा के क़ुबूल पर मदार रख चुके हैं, तो जब तक तौबा क़ुबूल न हो, मैं कैसे खोल सकता हूं। कई दिन इसी हाल में गुज़र गये कि न खाना, न पीना। भूख की वजह से आंखों के सामने अंधेरा हो गया। कानों से ऊंचा युनाई देने लगा। कई दिन के बाद एक शब में कि उस दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के मकान पर थे, तहज्जुद के वक़्त उनकी तौबा क़ुबूल हुई, हुज़ूर सल्ल० ने इसकी इत्तिला फ़रमाई सहाबा-ए-किराम रज़ि० ने उनको खोलना चाहा और क़ुबूले तौबा की बशारत दी, मगर उन्होंने कहा कि जब तक हुज़ूर सल्ल० ही अपने मुबारक हाथ से न खोलेंगे मुझे खुलना मन्ज़ूर नहीं, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० जब सुबह की नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए तो उन को खोला।

बाज़ उलमा ने कहा है कि ग़ज़्वा-ए-तबूक में जो हज़रात रह गये थे, उन में अबू लुबाबा रज़ि० भी थे और इस ग़ज़्वे में शिर्कत न होने के रंज व ग़म में उन्होंने अपने आप को इस सतून से बांध दिया था और इसी हाल में जब कई दिन गुज़र गये और आयते शरीफ़ा "व आख रू- नअ्-त-र-फ़ू बिज़ूनूबिहिम०" नाज़िल हुई तो उनको खोला गया। इस सतून के क़रीब क़िब्ले की जानिब हुज़ूर सल्ल० ने एतिकाफ़ भी किया है और अक्सर ज़ुअफ़ा मसाकीन वग़ैरह इस सतून के क़रीब बैठते थे, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह की नमाज़ के बाद तुलूए आफ़ताब तक उन के पास तशरीफ़ फ़रमा होते थे।

4. उस्तुवानतुस् सरीरः- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एतिकाफ़ के ज़माने में इसी जगह शब को आराम फ़रमाया करते थे, इस लिए यह नाम हुआ। सरीर के असल मायने तख़्त के हैं। हुज़ूर सल्ल० के आराम फ़रमाने के लिए कोई चीज़ इस जगह बिछायी जाती थी, जो लकड़ी की होगी।

5. उस्तुवाना-ए-अली :- जिस को उस्तुवानतुल मुहरिस और उस्तुवानतुल हुरस भी कहते हैं। हरस के मायने हिफ़ाज़त के हैं।

बाज़ सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम दरबानी के तौर पर इस जगह

तशरीफ़ फ़रमा होते थे और अक्सर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू तशरीफ़ रखते थे, इस लिए उस्तुवाना-ए-अली भी नाम हो गया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत आइशा रज़ि॰ के हुजरे से जब तशरीफ़ लाते थे, तो इस जगह को गुज़रते।

6. **उस्तुवाना-ए-वुफ़ूद** :- हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जो अरब के वफ़ूद आते थे, वे अक्सर इसी जगह बिठाए जाते थे। हुज़ूर सल्ल॰ इस जगह तशरीफ़ लाकर उन से गुफ़्तगू फ़रमाते, उन को अह्काम की तल्क़ीन फ़रमाते।

उलमा का इन दोनों स्तून न॰ 5 व न॰ 6 की तअ्यीन में इख़्तिलाफ़ है, जिस को "नुज़्हतुन्नाज़िरीन' वग़ैरह में ज़िक्र किया है।

7. **उस्तुवाना-ए-तहज्जुद**- कहते हैं कि अक्सर शब के वक़्त जब सब आदमी चले जाते तो इस जगह हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तहज्जूद के लिए एक बोरिया बिछाया जाता था और हुज़ूर सल्ल॰ यहां तहज्जुद अदा फ़रमाते थे।

बाज़ रिवायात से मालुम होता है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ानुल मुबारक में तीन रात जो नमाज़ पढ़ी है और बहुत मज्मा जमा हो जाता था और हुज़ूर सल्ल॰ ने तरावीह के फ़र्ज़ होने के ख़ौफ़ से फिर नहीं पढ़ी, वह इसी जगह पढ़ी गयी है, मगर अक्सर रिवायात में इस का मस्जिदे नबवी में होना मालूम होता है। *(नुज़्हत)*

और यह जगह उस वक़्त मस्जिदे नबवी में दाख़िल नहीं थी।

8. **उस्तुवाना-ए-जिब्रील** :- उलमा ने लिखा है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के आने की एक ख़ास जगह थी, लेकिन यह सतून इस वक़्त हुजरा-ए-शरीफ़ की तामीर के अन्दर आ गया है, बाहर से उस की ज़ियारत नहीं होती। ये आठ सतून उलमा ने ख़ास गिनवाए हैं। लेकिन यह ज़ाहिर बात है कि मस्जिदे नबवी का कौन-सा हिस्सा ऐसा होगा जहां हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमे मुबारक न पड़े हों और सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने नमाज़ें न पढ़ी हों और न सिर्फ़ मस्जिदे नबवी, बल्कि मदीना तैयबा के सारे शहर का कौन सा हिस्सा ऐसा होगा, जहां इन बा-बरकत हस्तियों के क़दम बारहा न पड़े हों, इस लिए कि वहां की हर जगह बा बरकत है। हक़ तआला उस की बरकत से इन्तिफ़ाअ् की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि असल तौफ़ीक़ ही है।

ख़ातमा

इस में सारे उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के बाद सिर्फ़ एक ही मर्तबा हज किया है। सन दस हिजरी में, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी का आख़िरी साल था और इस सफ़र में ऐसे वाक़िआत का हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से ज़ुहूर हुआ जैसा कि किसी से रूख़्सत होते वक़्त हुआ करते हैं। इसी वजह से इस का नाम हज्जतुल विदाअ् यानी रुख़्सत का हज पड़ गया कि गोया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हक़ तआला शानुहू के यहां जाने के लिए इस सफ़र के इज्तिमाअ् के वक़्त सारे मुसलमानों से जो हाज़िर थे, रुख़्सत हो गये। सफ़रे हज की इब्तिदा के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इरादे का ऐलान फ़रमाया, तो हज़ारों की मिक़्दार में सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने हमरिकाबी और मअिय्यत का फ़ख़्र हासिल करने के लिए हज का इरादा फ़रमा लिया और जो ख़बर सुनता गया, वह हमरिकाबी की कोशिश करता गया, इन में से एक बड़ी मिक़्दार मदीना तैयबा रवानगी से क़ब्ल पहुंच गयी और जो वहां हाज़िर न हो सके थे, वे रास्ते में मिलते रहे और जिन को इतना भी वक़्त न मिला, वे मक्का मुकर्रमा और बाज़ बराहेरास्त अरफ़ात पर पहुंचे, ग़रज़ बहुत कसीर मज्मा इस हज में हमरिकाब था, जिस की मिक़्दार एक लाख चौबीस हज़ार तक बतायी जाती है।

(लमआत हाशिया अबुदाऊद)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा में ज़ुहर की नमाज़ पढ़ कर रवाना हुए और असर की नमाज़ ज़ुल हुलैफ़ा में पहुंच कर अदा फ़रमायी इस में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है कि रवानगी की तारीख़ क्या थी, 24, 25, 26, ज़ीक़ादा, तीन क़ौल हैं और इसी तरह दिन के मुताल्लिक़ भी, पंजशंबा, जुमा, शंबा, तीन क़ौल हैं जिन में से जुमा का दिन जिन हज़रात ने कहा है, वह सही रिवायात के ख़िलाफ़ है, इस लिए कि रवानगी से क़ब्ल मदीना पाक में चार रक्अत ज़ुहर की पढ़ना मशहूर रिवायात में हैं।

इस नाकारा के नज़दीक 25 ज़ीक़ादा शंबा के दिन रवानगी रिवायात से

राजेह मालुम होती है। श्ब को ज़ुलहुलैफ़ा में क़ियाम फ़रमाया और तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात से, जो हमराह थीं सोहबत की। इसी वजह से उलमा के नज़दीक, अगर बीवी साथ हो तो एहराम से क़ब्ल सोहबत करना मुस्तहब है कि एहराम के तवील ज़माने में दोनों के लिए इफ़्फ़त का सबब है।

दूसरे दिन ज़ुहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहराम के लिए ग़ुस्ल किया और एहराम की चादरें ज़ैबे तन फ़रमायीं और ज़ुलहुलैफ़ा की मस्जिद में ज़ुहर की नमाज़ के बाद क़िरान का एहराम बांधा।

मुहक़्क़िक़ीन उलमा के नज़दीक हुज़ूर सल्ल॰ का एहराम शुरू ही से क़िरान का था। यहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ को इख़्तियार दे दिया कि जिस का दिल चाहे इफ़राद, तमत्तोअ्, क़िरान में से जौन-सा चाहे, बांध ले। ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़िरान का बांधा कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रात को तश्रीफ़ लाकर यह फ़रमाया था कि यह वादि-ए-अक़ीक़ मुबारक वादी है, आप इसमें नमाज़ पढ़ें और हज और उमरा दोनों का एहराम बांधें, इस के बाद मस्जिद से बाहर तश्रीफ़ लाकर ऊंटनी पर सवार हुए और ज़ोर से लब्बैक पढ़ा। चूंकि मस्जिद की आवाज़ क़रीब के लोगों ने सुनी थी और यहां ऊंटनी पर तश्रीफ़ रखने के बाद दूर तक आवाज़ गयी, इस लिए बहुत से हज़रात ने यह समझा कि उसी वक़्त हुज़ूर सल्ल॰ ने एहराम की इब्तिदा फ़रमायी। इस के बाद हुज़ूर सल्ल॰ की मुबारक ऊंटनी आप को अपनी पुश्त पर लेकर चली और बीदा की पहाड़ी पर चढ़ी, जो ज़ुलहुलैफ़ा के क़रीब है, चूंकि हाजी के लिए हर ऊंची जगह चढ़ते हुए लब्बैक ज़ोर से पढ़ना मुस्तहब है, इस लिए हुज़ूर सल्ल॰ ने यहां भी ज़ोर से लब्बैक पढ़ा, जिस की आवाज़ पहाड़ी का ऊंचान होने की वजह से और भी ज़्यादा दूर तक गयी। इस की वजह से सहाबा रज़ि॰ की एक बड़ी जमाअत इस जगह हुज़ूर सल्ल॰ का एहराम बांधना नक़्ल करती है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम ने लब्बैक पढ़ते हुए मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवानगी शुरू की, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर यह दर्ख़्वास्त की कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ को हुक्म फ़रमा दिजिए कि लब्बैक ज़ोर से पढ़ें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल॰ ने इस का हुक्म फ़रमा दिया।

रास्ते में जब वादी-ए-रौहा पर पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल॰ ने वहां नमाज़ पढ़ी

और यह फ़रमाया कि सत्तर नबियों ने इस जगह नमाज़ पढ़ी। हुज़ूरे अक्दस सल्ल० का सामान और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का सामान सब एक ऊंट पर था, जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ग़ुलाम की सपुर्दगी में था।

जब वादी-ए-अर्ज मे पहुंचे, तो देर तक ये हज़रात उनका इन्तिज़ार फ़रमाते रहे, बड़ी देर में वे आये और कहा कि ऊंट तो खो गया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन को मारा कि एक ही तो ऊंट था वह भी गुम कर दिया और हुज़ूर तबस्सुम फ़रमा कर इर्शाद फ़रमा रहे थे कि इन मुह्‌रिम को देखो, यह क्या कर रहे हैं यानी एहराम की हालत में मारते हैं। सहाबा रज़ि० को जब मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल० के सामान की ऊंटनी गुम हो गयी तो जल्दी से खाना तैयार करके लाए। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बुलाया कि आओ, अल्लाह तआला ने बेहतरीन ग़िज़ा अता फ़रमायी, मगर हज़रत अबूबक्र को ग़ुस्सा आ रहा था, हुज़ूर सल्ल० ने उन को फ़रमाया कि अबू बक्र ग़ुस्से को जाने दो। इस के बाद हज़रत सअ्द रज़ि० और हज़रत अबू क़ुबीस रज़ि० अपने सामान की ऊंटनी लेकर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल०! यह क़ुबूल फ़रमा लें, मगर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हें बरकत अता फ़रमाए। हमारी ऊंटनी अल्लाह के फ़ज़्ल से मिल गयी। जब वादी-ए-अस्फ़ान में, जो मक्का मुकर्रमा के क़रीब है, तश्रीफ़ फ़रमा रहे थे, तो हज़रत सुराक़ा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमें हज का तरीक़ा इस तरह बता दीजिए कि गोया हम आज ही पैदा हुए हैं, यानी इस पर इत्मीनान न फ़रमावें कि यह बात तो इन को पहले से मालुम होगी। हुज़ूर सल्ल० ने इन हज़रात को बताया कि मक्का में दाख़िल होकर क्या क्या करें। सरिफ़ में पहुंच कर हज़रत आइशा रज़ि० को हैज़ आने लगा। वह बहुत परेशान हुईं, रोने लगीं कि मेरा तो सफ़र ही बेकार हो गया। हज का वक़्त क़रीब आ गया और मैं नापाक हो गयी। हुज़ूर सल्ल० ने तसल्ली दी कि यह तो सारी ही औरतों को पेश आता है, फिर उन को बताया कि वह अब क्या करें और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को इर्शाद फ़रमाया कि जिन के साथ हुदी नहीं है, वे मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हो कर उमरा कर के अपना एहराम खोल दें।

मक्का मुकर्रमा के क़रीब जब वादी-ए-अज़्रक़ पर पहुंचे, तो इरशाद फ़रमाया कि मेरे सामने इस वक़्त वह मंज़र है, जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस जगह पर हज के लिए गुज़र रहे थे और कानों में उंगलियां देकर ज़ोर से लब्बैक पढ़ रहे थे। इस के बाद हुज़ूरे अक्दस ज़ूतुवा पहुंचे जो मक्का मुकर्रमा के बिल्कुल

क़रीब है और शब को यहां क़ियाम फ़रमाया और सुबह को मक्का मकुर्रमा में दाख़िल होने की गरज़ से ग़ुस्ल किया और चाश्त के वक़्त 4 ज़िलहिज्जा यक्शंबा (इतवार) की सुबह में मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए इस दिन और तारीख़ में उलमा का सब का क़रीब क़रीब इत्तिफ़ाक़ है कि मक्का मुकर्रमा में दाख़िले की यही तारीख़ और यही दिन था। बन्दे के नज़दीक ज़ीक़ादा का यह महीना उन्तीस दिन का था, इस लिए शंबा को चल कर नवें दिन मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए।

मक्का मुकर्रमा में पहुंच कर सब से अव्वल मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गये और हज्रे अस्वद को बोसा दिया और तवाफ़ किया, तहिय्यतुल मस्जिद भी नहीं पढ़ी। मस्जिद में दाख़िल होते ही तवाफ़ शुरू फ़रमा दिया। तवाफ़ से फ़रागत पर मक़ामे इब्राहीम पर दोगाना अदा किया जिस में सूरः काफ़िरून और सूरः इख़्लास पढ़ी। इस के बाद फिर हज्रे अस्वद को बोसा दिया और बाबुस्सफ़ा से निकल कर सफ़ा की पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गये और ऊपर चढ़े, यहां तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा, फिर बड़ी देर तक तक्बीर व तहमीद और दुआ करते रहे। इस के बाद सफ़ा व मर्वः के दर्मियान सात चक्कर पूरे फ़रमाए और मर्वः पर जब सई से फ़रागत फ़रमायी तो जिन हज़रात के साथ ह्दी नहीं थी, उनको एहराम खोलने का हुक्म फ़रमा दिया, इस के बाद क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले आए और चार दिन क़ियाम फ़रमाया।

आठ ज़िलहिज्जा पंजशंबा (जुमेरात) को चाश्त के वक्त मिना तशरीफ़ ले गये और सब सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ भी हज का एहराम बांध कर हमरिकाब थे। पांच नमाज़ें मिना में पढ़ीं। इसी श्ब में सूरः वल मुर्सलात हुज़ूर सल्ल॰ पर नाज़िल हुई। जुमा की सुबह को तुलूए आफ़्ताब के बाद अरफ़ात तशरीफ़ ले गये और नमरः में जो ख़ेमा हुज़ूर सल्ल॰ के लिए ख़ुद्दाम ने पहले से लगा लिया था, थोड़ी देर क़ियाम फ़रमाया। फिर ज़वाल के बाद अपनी ऊंटनी पर, जिस का नाम क़स्वा था, सवार होकर बत्ने ग़र्नः में, जो वहीं क़रीब है तशरीफ़ लाए और बहुत तवील ख़ुत्बा पढ़ा। इस ख़ुत्बे में ऐसे अल्फ़ाज़ भी थे, कि शायद तुम इस साल के बाद मुझे न देखो और यह कि इस साल के बाद कभी भी मेरा-तुम्हारा यहां इज्तिमाअ् न होगा, वग़ैरह-वग़ैरह।

ख़ुत्बे के बाद हज़रत बिलाल रज़ि॰ को तक्बीर का हुक्म फ़रमाया और ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें ज़ुहर ही के वक़्त में पढ़ायीं। नमाज़ से फ़रागत के बाद

अरफ़ात के मैदान में तश्रीफ़ लाए और मग़िरब तक अपनी ऊंटनी पर दुआ में बड़े एहतिमाम से मुश्गुल रहे। इसी दौरान में हज़रत उम्मे फ़ज़्ल रज़ि॰ ने यह मालुप करने के लिए कि आप का रोज़ा है या नहीं, एक प्याले में दूध भेजा, जिस को हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी ऊंटनी पर सारे मज्मे के सामने नोश फ़रमाया ताकि सब को मालुम हो जाए कि रोज़ा नहीं है। इसी दौरान में एक सहाबी ऊंट पर से गिर कर मर गये। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इन के एहराम के कपड़ों ही में इन को कफ़्ना दो, यह क़ियामत में लब्बैक ही पढ़ते हुए उठेंगे।

उस जगह नज्द की एक जमाअत बराहे रास्त पहुंची और हुज़ूर से एक आदमी के ज़रिए से आवाज़ देकर दर्याफ़्त कराया कि हज क्या है। हुज़ूर सल्ल॰ ने एक आदमी को हुक्म फ़रमाया कि ऐलान कर दो कि हज अरफ़े में ठहरने का नाम है। जो शख़्स 10 ज़िलहिज्जा की सुबह से पहले पहले याहं पहुंच जाए, उस का हज हो गया। *(अबू दाऊद)*

हुज़ूर सल्ल॰ मग़िरब तक उम्मत के लिए मग़्फिरत की दुआ बहुत ही इलहाह् व ज़ारी से मांगते रहे। हक़ तआला शानुहू के यहां से उम्मत के लिए मज़लिम के सिवा और सब चीज़ों की मग़्फ़िरत का वायदा हो गया, मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फिर भी इल्तिजा फ़रमाते रहे कि या अल्लाह ! यह भी हो सकता है कि मज़्लूमों को तू अपने पास से बदला अता फ़रमा दे और ज़ालिमों को माफ़ फ़रमा दे, इसी दौरान में आयते शरीफ़ाः-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ

नाज़िल हुई, जिस का बयान सब से पहली फ़स्ल में गुज़र चुका है। जिस वक़्त यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो वही के बोझ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी बैठ गयी, खड़ी न हो सकी।

ग़ुरूब के बाद नमाज़ से क़ब्ल हुज़ूर सल्ल॰ वहां से रवाना हुए। ऊंटनी ऐसे ज़ोरों पर थी। कि निहायत शिद्दत से उस की बाग खींच रखी थी। वह जोश में दौड़ना चाहती थी। जहाँ ज़रा चढ़ायी आती तो हुज़ूर सल्ल॰ ऊंटनी की बाग ज़रा ढीली फ़रमा देते थे, फिर उसको ज़ोर से खींच लेते, हत्ता कि उसका सर बाग से ज़्यादा खींचने की वजह से कजावे से लगा जा रहा था। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ के पीछे ऊंटनी पर थे। रास्ते में एक जगह मुज़्दलफ़ा के क़रीब हुज़ूर सल्ल॰ को पेशाब की ज़रूरत हुई. उतर कर पेशाब किया, वुज़ू किया। हज़रत

उसामा रज़ि॰ ने वुज़ू कराया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ का मामूल इत्तिबाअ् के शौक़ में हमेशा यह रहा कि जब हज करते तो इस मौक़े पर उतर कर वुज़ू किया करते और ज़ौक़ में कहा करते कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां वुज़ू किया था। हज़रत उसामा रज़ि॰ ने वुज़ू के बाद हुज़ूर सल्ल॰ से नमाज़ की याद देहानी की। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, आगे चलो। मुज़दलिफ़ा पहुंच कर सब से पहले हुज़ूर सल्ल॰ ने नये वुज़ू के बाद मग़िब और इशा की नमाज़ पढ़ायी, इस के बाद दुआ में मश्ग़ूल हुए। बाज़ रिवायात में आता है कि इस जगह मज़ालिम के बारे में हुज़ूर सल्ल॰ की दुआ क़ुबूल हो गयी । हुज़ूर सल्ल॰ ने बच्चों और औरतों को नीज़ ज़ुअफ़ा को हुजूम में तक्लीफ़ होने के ख़्याल से रात ही में मुज़्दलिफ़ा से मिना को रवाना फ़रमा दिया और ख़ुद तमाम रुफ़क़ा के साथ सुबहे सादिक़ के बाद सवेरे से नमाज़े पढ़कर तुलूए आफ़्ताब से क़ब्ल मिना के लिए रवाना हुए और उस वक़्त हज़रत उसामा रज़ि॰ तो पैदल चलने वालों में थे और हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ के पीछे ऊंटनी पर सवार थे। रास्ते में एक नौजवान लड़की ने हुज़ूर सल्ल॰ से अपने बाप के हज्जे बदल का मस्अला दर्याफ़्त किया। हज़रत फ़ज़्ल रज़ि॰ भी नौ-उम्र थे। उन की निगाह उस औरत पर पड़ी। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने दस्ते मुबारक से हज़रत फ़ज़्ल रज़ि॰ के चेहरे को दूसरी तरफ़ फेर दिया कि ना-महरम को न देखें और यह इर्शाद फ़रमाया कि आज का दिन ऐसा दिन है कि जो शख़्स इस में अपनी आंख, कान और ज़बान की हिफ़ाज़त करे उस की मग़्फ़िरत होती है।

रास्ते ही से हज़रत फ़ज़्ल रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ के लिए कंकरियां चुनीं, लोग मसाइल भी दर्याफ़्त करते जाते थे और हुज़ूर सल्ल॰ जवाब फ़रमाते जा रहे थे। एक साहब ने दर्याफ़्त किया, हुज़ूर सल्ल॰! मेरी वालिदा इतनी बुढ़ी हैं कि अगर सवारी पर उनको बांध कर बिठाया जाए तो उनकी मौत का अंदेशा है, क्या मैं उन की तरफ़ से हज कर सकता हूं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारी वालिदा के ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ होता, तो क्या तुम अदा न करते? ऐसे ही हज को भी समझो। जब हुज़ूर सल्ल॰ रास्ते में वादी-ए-मुहस्सिर पर पहुंचे, जहां हक़ तआला शानुहू ने अब्रहा के हाथी को हलाक किया था, जबकि उसने मक्का मुकर्रमा पर चढ़ाई की थी, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी ऊंटनी को तेज़ कर दिया कि जल्दी से इस अज़ाब की जगह से आगे बढ़ जाएं। मिना पहुंच कर सीधे

जमरा-ए-अ-क़बा पर पहुंचे और सात कंकरियां उस के मारीं और लब्बैक का पढ़ना जो एहराम के बाद से अब तक वक़्तन फ़वक़्तन होता रहता था, उस वक़्त बन्द कर दिया। उस के बाद मिना में क़ियामगाह पर तशरीफ़ लाए और बड़ा तवील वअ़ज़ फ़रमाया, जिस में बहुत से अहकाम का ऐलान किया और इस क़िस्म के मज़ामीन भी इर्शाद फ़रमाए जैसा कि अल-विदाअ् के वक़्त कहे जाते हैं, फिर क़ुर्बानी की जगह तशरीफ़ ले गये और अपनी उम्र के सालों के मुताबिक़ 63 ऊंट अपने दस्ते मुबारक से क़ुर्बानी किए, जिन में 6-7 ऊंट उमंड कर क़ुर्बान होने के लिए आगे बढ़ रहे थे, हर एक ज़बाने हाल से जल्दी क़ुर्बान होना चाहता था:-

दाग़ जाते तो हैं मक़्तल में पर अव्वल सब से,
देखिए वार करे वह सितम आरा किस पर।

63 के अलावा बाक़ी ऊंटों को हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने क़ुर्बान किया, कुल अदद 100 थे। क़ुर्बानी के बाद ऐलान फ़रमा दिया कि जिस का दिल चाहे, इनमें से गोश्त काट कर ले जाए। इस के बाद हज़रत अली रज़ि॰ से इर्शाद फ़रमाया कि हर ऊंट में से एक-एक बोटी लेकर सब को एक बर्तन में जोश दें। उस का शोरबा हुज़ूर सल्ल॰ ने पिया ताकि हर ऊंट को हुज़ूर सल्ल॰ के नोश फ़रमाने की सआदत हासिल हो, अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात की तरफ़ से गाय ज़िब्ह की। क़ुर्बानी से फ़राग़त के बाद हज़रत मामर रज़ि॰ या हज़रत ख़राश रज़ि॰ को बुलाया और उनसे हजामत बनवायी, सर मुंडाया, लबें बनवायीं, नाख़ुन तरशवाए और ये बाल और नाख़ुन जां-निसारों में तक़्सीम करा दिए। कहते हैं कि कहीं-कहीं जो बाल मुबारक मौजूद हैं, वे इन्हीं में का बक़ीया है। इस के बाद एहराम की चादरें उतार कर कपड़े पहने, ख़ुश्बू लगायी। इस दौरान में कसरत से सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ आकर हज के मुताल्लिक़ मसाइल दर्याफ़्त करते रहे। इस दिन में चार काम करने हैं, रमी, ज़िबह, सर मुंडाना, तवाफ़े ज़ियारत करना, यही तर्तीब इन की है। इस में बहुत-हज़रात से भूल वग़ैरह की वजह से तर्तीब में तक़द्दुम तअख़्ख़ुर हुआ। हर शख़्स आ कर अर्ज़ करता कि मुझ से बाजाए इस के ऐसे हो गया। हुज़ूर सल्ल॰ फ़रमाते, इस में कोई गुनाह नहीं हुआ, अल-बत्ता इस में गुनाह है कि किसी मुसलमान की आबरूरेज़ी की जाए, ज़ुहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तवाफ़े ज़ियारत के लिए मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गये और ज़ुहर की नमाज़ मक्का मुकर्रमा में पढ़ी या मिना वापस आ

कर कुंए पर तशरीफ़ ले गये और ख़ुद नहीं ख़ींचा, बल्कि यह फ़रमाया कि अगर मुझे यह डर न होता कि लोग तुम पर ग़लबा करने लगेंगे तो ख़ुद खींच कर पीता, लेकिन इन दोनों में कुछ इश्काल नहीं। ज़मज़म शरीफ़ का पीना बार-बार हुआ, इस लिए किसी मौक़े पर ख़ुद खींच कर पिया हो जब भीड़ न हो और किसी मौक़े पर भीड़ की वजह से ऐसा फ़रमा दिया हो, इस में इश्काल नहीं। आप ने ज़मज़म शरीफ़ खड़े हो कर पिया और फिर सफ़ा- मर्वः की दोबारा सई की या नहीं की, इस में इख़्तिलाफ़ है। हनफ़िय्या के क़वाइद के मुवाफ़िक़ तो की है, इस के बाद मिना वापस तशरीफ़ ले गये और तीन दिन वहां क़ियाम किया और रोज़ाना ज़वाल के बाद तीनों जमरात की रमी किया करते थे और बाज़ रिवायात में है कि उन अय्याम में, जब मिना में क़ियाम था, रोज़ाना रात को बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत और तवाफ़ के लिए तशरीफ़ लाते और मिना के क़ियाम में मुतअद्द वअ्ज़ भी हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाए, जिन में इस क़िसम के अलफ़ाज़ भी हैं कि मैं शायद तुम से फिर न मिल सकूं, मिना ही के क़ियाम में सूरः "इज़ा जा-अ नस्-रूल्लह" नाज़िल हुई। बाज़ रिवायात में है कि हज से क़ब्ल मदीना तैयबा ही में नाज़िल हो चुकी थी और मुतअद्द रिवायात में है कि इस सूरः के नाज़िल होने के बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इस सूरः में मेरी वफ़ात की ख़बर दी गयी है, मैं अन्क़रीब जाने वाला हूं।

इस के बाद 13 ज़िल हिज्जा सह-शंबा (मंगल) को ज़वाल के बाद आख़िरी रमी से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूर सल्ल॰ मिना से रवानां हुए और मक्का मुकर्रमा के बाहर मुहस्सब में जिस को बतहा और ख़ैफ़ बनी किनाना भी कहते है।, एक ख़ेमा में, जिसको हुज़ूर सल्ल॰ के ग़ुलाम हज़रत अबू राफ़िअ् रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ के यहां तशरीफ़ लाने से पहले ही इस जगह लगा रखा था, क़ियाम किया और चार नमाज़ें ज़ुहर से इशा तक वहां अदा फ़रमायीं और इशा के बाद थोड़ी देर इसमें आराम किया यह वही जगह है, जिस जगह कुफ़्फ़ार ने बैठ क़र इब्तिदा-ए-इस्लाम यानी नुबुव्वत के छठे वर्ष में यह मुआहदा किया था कि बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब का बायकाट कर दिया जाए कि न उन से लेन-देन किसी क़िस्म का किया जाए, न उनको खाने को दिया जाए, न उनसे कोई मुलाक़ात करे, न सुलह की बात करे, जब तक ये लोग नऊज़ु बिल्लाह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हमारे हवाले न कर दें, ताकि हम हुज़ूर सल्ल॰ को क़त्ल करें। यह मुआहदा उसी जगह लिखा गया था, जिस का क़िस्सा मशहूर है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज दो जहां का सरदार होने की हैसियत से यहां क़ियाम किया और इशा के बाद थोड़ी देर आराम फ़रमा कर तवाफ़े विदाअ् के लिए मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और इसी रात में हज़रत आइशा रज़ि० को उनके भाई के साथ उमरे का एहराम बांधने के लिए तन्ओम भेजा और उमरा कराया। हज़रत आइशा रज़ि० जब उमरा से फ़ारिग़ हो कर मुहस्सब पहुंच गयीं, तो हुज़ूर सल्ल० ने क़ाफ़िले को मदीना तैयबा की तरफ़ रवानगी का हुक्म फ़रमाया। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि इस हज के मौक़े पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर दाख़िल हुए या नहीं। दाख़िल होना तो मुहक़्क़क़ है, लेकिन बाज़ उलमा हज के अय्याम में दाख़िल होना बताते हैं और बाज़ हज़रात इस ज़मानो के बजाए फ़तहे मक्का के ज़माने में बताते हैं और तवाफ़े विदाअ् से फ़राग़त के बाद बाज़ रिवायात के मुवाफ़िक़ सुबह की नमाज़ मक्का मुकर्रमा में पढ़ा कर जिस्में सुरः वत्तूर हुज़ूर सल्ल० ने पढ़ी, 14 ज़िलहिज्जा सन 10 हि० चहार शंबा (बुध) की सुबह को मदीना तैयबा की तरफ़ मय ख़ुद्दाम जांनिसारान वापसी हुई और जब 18 ज़िलहिज्जा सन 10 हि० यक शंबा (इतवार) को ग़दीर ख़ुम पर जो जोहफ़ा के क़रीब एक जगह है, पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० ने एक ऊंची जगह मिंबर की शक्ल पर खड़े हो कर वअ्ज़ फ़रमाया जिस में हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के मनाक़िब भी इर्शाद फ़रमाए यही वह चीज़ है, जिस को राफ़ज़ियों ने बिगाड़ कर ईदे ग़दीर से मशहूर किया। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि मेरे बारे में दो जमाअतें हलाक होंगी- एक वह जो मुहब्बत के दावे में इफ़रात करें और दूसरे वह जो अदावत में इफ़रात करें।

(तारीख़ुलख़ुलफ़ा बरिवायतें हाकिम वग़ैरह)

यानी राफ़ज़ी और ख़ारिजी।

इसके बाद जब ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचे तो शब को वहां क़ियाम फ़रमाया और सुबह के वक़्त मुअर्रस के रासते से मदीना मुनव्वरा में यह दुआ पढ़ते हुए तशरीफ़ ले गये।

آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

आइबू-न ताइबू-न आबिदू-न लिरब्बिना हामिदू-न

हम लौटने वाले हैं, ऐसी तरह कि तौबा करने वाले है अपने गुनाहों से और अल्लाह तआला की इबादत करने वाले हैं और अपने रब की तारीफ़ करने

वाले हैं। फ़क़त।

इस नापाक ने सन 1342 हि॰ में एक रिसाला अरबी ज़ुबान में हज्जतुल विदाअ् में लिखा था ताकि हुज़ूर सल्ल॰ के हज की रिवायाते मुतफ़र्रिक़ा मुसलसल तरीक़े से मुस्तहज़र रहें। उसमें हर क़ौल का माख़ज़ और फ़िक़्ही मवाहिस भी लिखे थे और उसमें हर रिवायत का हवाला भी दर्ज किया था, उसी से यह वाक़िआ नक़ल किया है। उसमें हर वाक़िए का हवाला मौजूद है, अभी तक उसके तबा होने (छपने) का वक़्त नहीं आया, क्या बईद है, किसी वक़्त अल्लाह जल्ल शानुहू के फ़ज़्ल से आ जाए। इसके बाद दो माह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस आलम में तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर रफ़ीके आला के साथ जा मिले और हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-अव्वल हुए। पहले साल हज़रत उमर रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर भेजा और ख़ुद तशरीफ़ न ले जा सके, दूसरे साल ख़ुद अमीरुल हज बन कर तशरीफ़ ले गये और फिर वह भी इस आलम से रुख़्सत हो गये, तो हज़रत उमर रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-सानी हुए और ख़िलाफ़त के पहले साल में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर रवाना फ़रमाया और इसके बाद से दस साल तक मुसलसल ख़ुद अमीरुल हज बन कर तशरीफ़ ले गये और अपनी हयात (ज़िन्दगी) के आख़िरी साल में अज़्वाजे मुतह्हरात को ख़ुसूसियत के साथ अपने साथ हज कराया।

इसके बाद हज़रत उस्मान रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-सालिस हुए तो पहले साल यानी सन 24 हि॰ में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर रवाना फ़रमाया और 25 हि॰ से 34 हि॰ तक हर साल ख़ुद हज के लिए तशरीफ़ ले जाते रहे, इस के बाद महसूर कर दिए गए और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर रवाना फ़रमाया।

हज़रत सय्यिदुल मशारिक़ वल मग़ारिब अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ख़िलाफ़त से क़ब्ल तो ब-कसरत हज करते रहे, लेकिन ख़िलाफ़त के ज़माने में जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन वग़ैरह की वजह से ख़ुद तशरीफ़ ले जाने की नौबत न आ सकी।

(मुसामरात)

अब आख़िर में चंद क़िस्से अल्लाह वालों के हज के "रौज़ुर्रिया हीन" वग़ैरह से नक़ल करता हूं कि वे हज करने वालों के लिए नमूना और इब्रत हैं। इस के बाद इस रिसाले को ख़त्म कर दूंगा।

1. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कर रहा था लोगों की आंखें बतुल्लाह पर लग रही थीं, जिस से आंखों को सुकून मिल रहा था कि दफ़्अतन एक शख़्स बैतुल्लाह के क़रीब आये और यह दुआ करने लगे "ऐ मेरे रब तेरा मिस्कीन बन्दा, जो तेरे दरबार से धुतकारा हुआ है और तेरे दर से भागा हुआ है, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से वह चीज़ मांगता हूं जो सब चीज़ों से ज़्यादा क़रीब हो और वह इबादत मांगता हूं, जो सब से ज़्यादा तुझे महबुब हो ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे बर्गुज़ीदा बन्दों के तुफ़ैल और तेरे अंबिया के वसीले से यह मांगता हूं कि अपनी मुहब्बत की शराब का एक प्याला मुझे पिला दे और मेरे दिल पर से अपनी मअ्रिफ़त से जहल के परदे हटादे, ताकि मैं शौक़ के बाज़ुओं से उड़ कर तेरे तक पहुंच जाऊं और इर्फ़ान के बाग़ों में तेरे से सारगोशियां करूं।"

इसके बाद वह शख़्स इतने रोए कि आंसू टप-टप ज़मीन पर गिर रहे थे, फिर हंसे और चल दिए। ज़ुन्नून रह० फ़रमाते हैं कि मैं उन के पीछे चल दिया और मैं अपने दिल में सोच रहा था कि यह शख़्स या तो बड़ा कामिल है या कोई पागल है। वह मस्जिद से बाहर निकल कर एक वीराने की तरफ़ चल दिए। मैं पीछे-पीछे जा रहा था। वह मुझसे कहने लगे, तुम्हें क्या हुआ? क्यों चले आ रहे हो? अपना काम करो।

मैंने पूछा, अल्लाह तुम पर रहम करे, तुम्हारा क्या नाम है? कहने लगे अब्दुल्लाह । मैं ने कहा, यह तो ज़ाहिर है कि सब ही अल्लाह के बन्दे हैं और अल्लाह के बन्दों की औलाद हैं, तुम्हारा नाम क्या है? कहने लगे मेरे बाप ने मेरा नाम सअ्दून रखा था। में ने कहा, जो सअ्दून मजनूं के नाम से मशहूर हैं कहने लगे कि हां, वही हूं।

मैने पूछा वे कौन बर्गुज़ीदा लोग हैं, जिन के वसीले से तुमने दुआ की। कहने लगे, वे लोग हैं जो अल्लाह की तरफ ऐसे चलते है, जैसे वह शख़्स चलता है, जिसने इश्क़ को अपना नसबुल ऐन बना रखा हो और वे दुनिया से ऐसे अलग हो गये हैं, जैसा वह शख़्स हो जिस के दिल को किसी चीज़ ने पकड़ लिया हो। इसके बाद वह कहने लगे कि ज़ुन्नून। मैं ने सुना है, तुम यह कहते हो कि मैं अस्बाबे मअ्रिफ़त सुनना चाहता हूं। मैं ने कहा, आप के उलूम से तो नफ़ा पहुंचना ही चाहिए, तो उन्होंने दो शेअ्र अरबी के पढ़े, जिन का मतलब यह है कि आरिफ़ीन के दिल हर वक़्त मौला की याद में मुश्ताक़ रहते हैं, और इश्तियाक़ में

नाला करते रहते हैं, यहां तक कि उस के क़ुर्ब में मंज़िल बना लेते हैं, अपने मौला के इश्क़ में ऐसे ख़ुलूस से लगते हैं कि उस के इश्क़ से हटाने वाली उन के लिए कोई चीज़ नहीं रहती। *(रौज़)*

2. हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा तंहा हज को गया और मक्का मुकर्रमा में कुछ क़ियाम कर लिया। मेरी आदत थी कि जब रात का अंधेरा ज़्यादा हो जाता तो मैं तवाफ़ किया करता। एक मर्तबा मैंने एक नौ उम्र लड़की को देखा कि वह तवाफ़ कर रही है और ये अश्आर गा रही है-

(١) ابی الحب ان يخفی وکم قد کتمته فاصبح عندی قد اناخ وطنبا

(٢) اذا اشتد شوقی هام قلبی بذکره وان رمت قربا من حبيبی تقربا

(٣) ويبد وافافنی ثم احيا به له ويسعدنی حتی الذ واطربا

तर्जुमा:- 1. मैं ने अपने इश्क़ को कितना छुपाया, मगर अब वह किसी तरह मख़्फ़ी नहीं रहता। अब तो उस ने खुल्लम खुल्ला मेरे पास डेरा डाल दिया।

2. जब माशूक़ के शौक़ का मुझ पर ग़लबा होता है तो मेरा दिल उसके ज़िक्र से फड़कने लगता हैं और अगर मैं अपने महबूब से क़ुर्बत चाहती हूं तो वह फ़ौरन मुझ से तक़र्रुब करता है।

3. और जब वह हाज़िर होजाता है तो मैं उसमें फ़ना हो जाती हूं और फिर उसी के लिए उसी की बदौलत ज़िंदा हो जाती हूं और वह मेरी हाजत रवाई करता है, हत्ता कि मैं ख़ूब लज़्ज़त पाती हूं और मज़े में आ जाती हूं।

हज़रत जुनैद रह० फ़रमाते हैं, मैं ने उससे कहा ऐ लड़की ! तू अल्लाह से नहीं डरती, ऐसी बा-बरकत जगह ऐसे शेअ्र पढ़ती है। वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुई और कहने लगी कि जुनैद।

لولا التقی لم ترنی اهجر عن طيب الوسن

"अगर अल्लाह का डर न होता, तो तू मुझे न देखता कि मैं मीठी नींद को छोड़े फिरती हूं।"

ان التقی شردنی کماتری عن وطنی

"तू तो देख ही रहा है कि अल्लाह के ख़ौफ़ ही ने मुझ को मेरे वतन से धकेला और भगाया है।"

افر من وجدی به فحبه هيمنی

"उसी का इश्क़ मेरे साथ लगा हुआ है, जिसकी वजह से मैं भागी फिर रही हूं और उसी की मुहब्बत ने मुझे हैरान व परेशान कर रखा है।"

इस के बाद उसने पूछा कि जुनैद! तुम अल्लाह का तवाफ़ करते हो या बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हो? मैंने जवाब दिया कि मैं बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ़ करता हूं तो उसने अपना मुंह आसमान की तरफ़ किया और कहने लगी, सुब्हानल्लाह! आप की भी क्या अजीब मशिय्यत है, जो मख़्लूक़ ख़ुद पत्थर जैसी है, वह पत्थरों ही का तवाफ़ करती है। इसके बाद तीन शेअ्र और पढ़े, जिनका मतलब तह है कि।

"लोग पत्थरों का तवाफ़ कर के आप का क़ुर्ब ढूंढते हैं इन लोगों के दिल ख़ूद भी पत्थरों से ज़्यादा सख़्त हैं और अपने ख़्याल में तक़र्रुब के महल में उतरे हुए हैं। अगर ये लोग अपने इश्क़ में सच्चे होते तो उनकी सिफ़ात अपनी तो ग़ायब हो जातीं और अल्लाह की मुहब्बत की सिफ़ात उनमें पैदा हो जातीं।"

हज़रत जुनैद रह० फ़रमाते हैं कि मैं उसकी इस गुफ़्तगू से ग़श खा कर गिर गया। जब मुझे ग़शी से इफ़ाका हुआ तो वह लड़की जा चुकी थी।

3. हज़रत बिशर हाफ़ी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने अरफ़ात के मैदान में शाम के वक़्त एक शख़्स को देखा कि वह निहायत बेताबी से रो रहा है और बेचैनी से रोते हुए चंद शेअ्र पढ़ रहा है, जिन का तर्जुमा यह है कि वह कितनी पाक ज़ात है, वह हर ऐब से पाक है। अगर हम कांटों पर और गर्म सूइयों पर उसके सामने सज्दे में गिरें, तब भी उसकी नेमतों के हक़ का उश्रे अशीर भी अदा न हो, बल्कि उश्रे अशीर का उश्रे अशीर भी अदा न हो । इसके बाद उन्हों ने ये शेअ्र पढ़े:-

كم قد زللت فلم اذكرك فى ذللى   وانت يا مالكى بالعيب تذكرنى

كم اكشف الستر جهلا عند معصيتى   وانت تلطف بى حلما وتسترنى

तर्जुमा:- ऐ पाक ज़ात । मैं ने कितनी मर्तबा लग्ज़िशें कीं और कभी अपनी लग्ज़िश में तुझे याद न किया और मेरे मालिक ! तू मुझे ग़ायबाना हमेशा याद करता रहा। मैं अपनी जहालत से किनी मर्तबा गुनाहों के साथ अपनी परदादरी कर चुका हूं और तू अपने हिल्म के साथ मुझ पर लुत्फ़ व मेहरबानी करता है और मेरी परदा पोशी करता है।

हज़रत बिशर रह० कहते हैं कि फिर वह मेरी नज़रों से ग़ायब हो गये।

मैं ने लोगों से दर्याफ़्त किया कि यह कौन बुज़ूर्ग थे, तो मालुम हुआ कि वह हज़रत अबू उबैद ख़वास रह० थे, जो मुम्ताज़ बुज़ुर्गों में हैं। उन के मुताल्लिक़ मशहूर है कि सत्तर वर्ष तक आसमान की तरफ़ मुंह नहीं उठाया। किसी ने उनसे इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया कि मुझे शर्म आती है कि इतने बड़े मोहि्सन की तरफ़ इस स्याह मुंह को अठाऊं किस क़दर ताज्जुब की बात है कि अल्लाह के फ़रमांबरदार बन्दे तो इस क़दर आजिज़ी करें और अपनी हुस्ने इबादत के बावजूद अल्लाह जल्ल शानुहू से इस क़दर शर्माएं और गुनाहगार अपने गुनाहों पर न शर्माएं और नाज़ करें। या अल्लाह! अपने पाक चेहरे की तरफ़ नज़र करने से क़ियामत में हम को महरूम न कीजिए और अपने सालेह (नेक) बन्दों की बरकात से हमें भी मुन्तफ़अ् फ़रमा और दारैन में उनके ज़ेरे साया रख। *(रौज़ 57)*

4. हज़रत मालिक बिन दीनार रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज के लिए जा रहा था। रास्ते में एक नौजवान को देखा कि पैदल चल रहा है, न तो उस के पास सवारी, न तोशा, न पानी। मैं ने उसको सलाम किया, उसने सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा, जवान ! कहां से आ रहे हो? कहने, लगा, उसी के पास से। मैंने कहा, कहां जा रहे हो? कहा उसी के पास । मैंने कहा, तोशा कहां है? कहा उसी के ज़िम्मे है। मैं ने कहा, यह रास्ता बग़ैर तोशे और पानी के तै नहीं होगा, आख़िर तेरे साथ कुछ है भी? उसने कहा मैंने सफ़र के शुरू के वक़्त पांच हर्फ़ तोशे के लिए पकड़ लिए थे। मैंने पूछा वे पांच हर्फ़ कौन से हैं? उसने कहा, अल्लाह तआला का पाक इर्शाद "काफ़, हा, या, ऐन, साद"! मैं ने पूछा इस के क्या मायने हुए? कहने लगा कि काफ़ के मायने काफ़ी, किफ़ायत करने वाला, हा के मायने हादी, हिदायत करने वाला, या के मायने मूवी, ठिकाना देने वाला, ऐन के मायने आलिम, हर बात का जानने वाला, साद के मायने सादिक़, अपने वायदे का सच्चा। पास जिस शख़्स का साथी किफ़ायत करने वाला, हिदायत करने वाला जगह देने वाला, बा-ख़्बर और सच्चा हो वह बर्बाद हो सकता है? या उसको किसी बात का ख़ौफ़ हो सकता है? क्या वह शख़्स भी इसका मुहताज है कि तोशा और पानी लादे-लादे फिरे। हज़रत मालिक रह० फ़रमाते हैं कि मैंने उस की गुफ़्तगू सुन कर अपना कुरता उसको देना चाहा, उसने कुबूल करने से इन्कार कर दिया और कहा बड़े मियां ! दुनिया के कुरते से नंगा रहना अच्छा है। दुनिया की हलाल चीज़ों का हिसाब देना है और उसकी हराम चीज़ों का अज़ाब भुगतना है। जब रात का अंधेरा हुआ तो, उस जवान ने अपना मुंह आसमान की तरफ़ किया और यह कहा,

ऐ वह पाक! जिस को बन्दों की ताअत से ख़ुशी होती है और बन्दों के गुनाहों से उस का कुछ नुक़्सान नहीं होता, मुझे वह चीज़ अता फ़रमा, जिस से तुझे ख़ुशी होती है यानी ताअत और वह चीज़ माफ़ फ़रमा दे, जिस से तेरा कोई नुक़्सान नहीं यानी गुनाह। इसके बाद जब लोगों ने एहराम बांधा और लब्बैक कहा तो वह चुप था मैं ने कहा तुम लब्बैक नहीं पढ़ते? कहने लगा, मुझे यह डर है कि मैं लब्बैक कहूं और वहां से जवाब मिले "ला लब्बैक वला सअ्दैक" न तेरी लब्बैक मौतबर न सअ्दैक मोतबर, न मैं तेरा कलाम सुनता हूं, न तेरी तरफ़ इल्तिफ़ात करता हूं।

इसके बाद वह चला गया। उस के बाद मैंने सारे रास्ते उस को नहीं देखा, आख़िर में मिना में वह नज़र पड़ा और उसने चंद शेअ्र पढ़े, जिन का तर्जुमा यह है।

कि वह महबूब, जिसको मेरा ख़ून बहाना अच्छा मालूम होता है, मेरा ख़ून उसके लिए हरम में भी हलाल है, और हरम से बाहर भी। ख़ुदा की क़सम ! अगर मेरी रूह को यह पता चल जाए कि वह किस पाक ज़ात के साथ अटकी हुई है तो वह क़दम के बजाए सर के बल खड़ी हो जाए और मलामत करने वाले मुझे उसके इश्क़ में मलामत न कर, अगर तुझे वह नज़र आ जाए, जो मैं देखता हूं, तू कभी भी लब कुशाई न करे। लोग अपने बदन से बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हैं। अगर वे अल्लाह की पाक ज़ात का तवाफ करते, तो हरम से भी बे नियाज़ हो जाते। ईद के दिन लोगों ने तो भेड़-बकरी की क़ुर्बानी की, लेकिन माशूक़ ने मेरी जान की उस दिन क़ुर्बानी की। लोगों ने हज किया है और मेरा हज अपनी सुकून की चीज़ का है। लोगों ने क़ुर्बानियां की हैं, मैं तो अपने ख़ून की और अपनी जान की क़ुर्बानी करता हूं।

इसके बाद यह दुआ की, "ऐ अल्लाह! लोगों ने क़ुर्बानियों के साथ तेरा तक़र्रुब हासिल किया, मेरे पास कोई चीज़ क़ुर्बानी के लिए नहीं है, सिवाए अपनी जान के, मैं इसको तेरी बारगाह में पेश करता हूं, तू इस को क़ुबूल कर ले। इसके बाद एक चीख़ मारी और मुर्दा होकर गिर गया। इसके बाद ग़ैब से एक आवाज़ आयी कि यह अल्लाह का दोस्त है, ख़ुदा का क़तील है।

मालिक रह० कहते हैं कि मैंने उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन की और रात भर उसकी सोच में परेशान और मुतफ़क्किर रहा। इसी में आंख लग गयी, तो ख़्वाब में उस को देखा। मैंने पूछा, तुम्हारे साथ क्या मामला हुआ? कहने लगे कि

जो शुहदा-ए-बद्र के साथ हुआ, बल्कि उस पर भी कुछ ज़्यादा हुआ। मैंने पूछा कि ज़्यादा होने की क्या वजह? कहने लगे कि वह काफ़िरों की तलवार से शहीद हुए थे और मैं इश्क़े मौला की तलवार से।

इसका मतलब यह नहीं कि हर बात में उनसे ज़्यादती हो, किसी बात में ज़्यादती हो जाना काफ़ी है, वरना इन हज़रात के लिए सहाबी होने का जो फ़ज़्ल है, उसको ग़ैर-सहाबी कहां पहुंच सकते हैं

5. हज़रत ज़ुन्नून रह० फ़रमाते हैं कि हज के सफ़र में एक जंगल में मुझे एक नौ-जवान ख़ुबसूरत लड़का मिला, गोया चांदी का टुकड़ा है और इश्क़ उसके बदन में जोश मार रहा था, वह भी हज के लिए जा रहा था। मैंने उस को साथ ले लिया। मैंने उससे कहा कि बड़ा तवील सफ़र है, तो उसने एक शेअ्र पढ़ा जिसका तर्जुमा यह है कि काहिलों और उकता जाने वालों के लिए यह सफ़र बईद है, लेकिन मुश्ताक़ों के लिए कुछ भी दूर नहीं।

6. हज़रत शिबली रह० जब अरफ़ात पर पहुंचे तो, बिल्कुल चुप चाप रहे, कोई लफ़्ज़ भी ज़बान से नहीं निकाला। जब वहां से मिना की तरफ़ चले, हद्दे हरम के जो दो निशान हैं, उनसे आगे बढ़ गए, तो आंखों से आंसू बहने लगे और चंद अश्आर पढ़े जिनका तर्जुमा यह है:-

"मै चल रहा हूं इस हाल में कि मैंने अपने दिल पर तेरी मुहब्बत की मुहर लगा दी, ताकि इस दिल पर तेरे सिवा किसी का गुज़र न हो। काश मैं अपनी आंखों को ऐसी तरह बन्द करता कि तेरा दीदार नसीब होने तक किसी को भी न देखता। दोस्तों में बाज़ तो ऐसे होते हैं, जो एक ही के हो रहते हैं और बाज़ ऐसे होते हैं, जिन में दूसरों की भी शिर्कत होती है, लेकिन जब आंखों से आंसू निकल कर रुख़्सारों पर बहने लगते हैं, तब ज़ाहिर हो जाता है कि कौन वाक़ई रो रहा है और कौन बनावटी रोना रो रहा है।" *(रौज़)*

अदू में और मुझ में ग़ौर कर लो फ़र्क़ इतना है
कोई बनता है दीवाना, कोई होता है दीवाना।

7. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० अरफ़ात के मैदान में ग़ुरूब तक बिल्कुल चुप रहे और जब आफ़ताब ग़ुरूब हो गया, तो फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह ! अगरचे तूने माफ़ फ़रमा दिया, लेकिन मेरी बदहाली पर फिर भी अफ़सोस है। *(रौज़)*

8. इब्राहीम बिन मुह्लब रह० कहते हैं कि मैं तवाफ़ कर रहा था। मैंने एक बांदी को देखा कि वह काबा शरीफ़ का परदा पकड कर कह रही थी, ऐ मेरे सरदार! तुझे मुझ से मुहब्बत करने की क़सम ! मेरा दिल फेर दे। मैंने उस से पूछा कि ऐ लड़की ! तुझे किस तरह मालूम हुआ कि हक़ तअला शानुहू तुझ से मुहब्बत करते हैं। कहने लगी कि उस की शफ़क़तों से मालूम हुआ। मेरे पकड़ने के लिए इस्लामी लश्कर भेजे, उन पर कितने कितने माल ख़र्च किए, जब कहीं मुझे काफ़िरों के पंजे से निकाला, मुझे मुसलमान बनाया, अपनी मअ्रिफ़त अता फ़रमायी, हालांकि मैं उसको बिलकुल नहीं जानती थी। ऐ इब्राहीम! क्या यह उसकी मुहब्बत और शफ़क़त नहीं? कहने लगी, ज़्यादा से ज़्यादा और बड़ी से बड़ी जो चीज़ हो सकती हो। मैं ने पूछा, वह कैसी है? कहने लगी कि शराब से ज़्यादा लतीफ़ और गुलाब के अर्क़ से ज़्यादा दिल पसन्द। इस के बाद उसने तीन शेअ्र पढ़े जिनका मतलब यह है कि बेचैन आदमी सब्र व सुकून को नहीं जानता कि क्या होता है, उस के पास तो बहने वाली आंखें होती हैं, जिनको रोने ने बेकार कर दिया हो, और एक बदन होता है, जो इश्क़ के शोलों की वजह से दुबला हो गया हो और फ़रेफ़्ता की बीमारी का क्या इलाज हो सकता है और मुहब्बत का अंजाम बड़ा सख़्त है, बिलख़ुसूस जबकि मेहरबानी करने वाले उसकी तरफ़ नेज़ों से मेहरबानी करते हों। वह यह शेअ्र पढ़ते हुए चल दी। *(रौज़)*

9. मालिक बिन दीनार रह० कहते हैं कि मैं ने एक नौ-जवान को एक दफ़ा देखा कि क़ुबूलियत के आसार उसके चेहरे पर ज़ाहिर हैं और आंखों से आंसू लगातार रूख़्सारों पर बह रहे हैं। मैंने उस को देख कर पहचाना कि अर्सा हुआ, बसरा में एक ज़माने में उसको बड़ी नाज़ व नेमत में देख चुका था। उस वक़्त देख कर मैंने उसको पहचाना और उस की यह हालत देख कर मुझे भी रोना आ गया। उसने भी मुझे देख कर पहचान लिया और मुझे सलाम किया और कहने लगा, मालिक! तुम्हें ख़ुदा की क़सम! ख़ास वक़्त में मुझे याद रखना और मेरे लिए अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की दुआ मांगना। क्या बईद है अल्लाह जल्ल शानुहू मेरे हाल पर रहम फ़रमाए और मेरे गुनहों को माफ़ करदे और यह कह कर दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि:-

जब महबूब तेरी तरफ़ मुतवज्जह हो तो मेरा भी उस से ज़िक्र कर दीजियो और यह कह देना कि किसी वक़्त भी तेरी याद से उसका दिल ख़ाली नहीं होता, शायद वह जब मेरा नाम सुने तो यों पूछे कि फलां शख़्स पर क्या गुज़र रही है।

मालिक रह० कहते हैं कि ये शेअ्र पढ़ कर वह रोता हुआ चल दिया। इतने में हज का ज़माना आ गया मैं हज के लिए रवाना हुआ। इत्तिफ़ाक़ से मैं मस्जिदे हराम में बैठा था कि मैंने एक शख़्स के गिर्द मज्मा इकट्ठा देखा और वह शख़्स बेताब होकर रो रहा है और उस की तड़प और बेताबी से लोगों को तवाफ़ मुश्किल हो गया। मैंने जो उठ कर उसको देखा, तो वही जवान था। मैं उसको देख कर ख़ुश हुआ और मैं ने उससे कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने तेरी तमन्ना पूरी कर दी, तो उसने चंद शेअ्र पढ़े, जिन का तर्जुमा यह है कि:-

लोग बिला ख़ौफ़ व ख़तर मिना की तरफ चले और जब वे मिना में पहुंच गये, तो अपनी आरज़ुओं को पा लिया। लोगों ने अल्लाह तआला से आरज़ुएं मांगीं, अल्लाह ने उनको उनकी तमन्नाऐं अता कीं और उनकी ख़ालिस तौबा की बदौलत उनको फ़हश और बद-कारी से महफ़ूज़ रखा। उन के ऊपर साक़ी ने शराब का दौर चलाया और जब उन्हों ने पूछा कि साक़ी कौन है तो कहा कि:-

انا الله فادعونی انا الله ربکم لی المجد والعلیا والملك والثناء

"मैं हूं तुम्हारा माबूद, तुम मुझे पुकारो। मैं तुम्हारा रब हूं, मेरे ही लिए बुज़ुर्गी है, मेरे ही लिए बड़ाई है, मेरा ही मुल्क है और मेरे ही लिए सारी तारीफ़ें हैं।"

मालिक रह० कहते हैं कि मैं ने उस से कहा कि वल्लाह ! मुझे अपना हाल बताओ, क्या गुज़री? कहने लगा बड़ी अच्छी गुज़री, मुझे अपने फ़ज़्ल से यहां बुलाया। मैं हाज़िर हो गया और जो मैंने मांगा, वह मुझे मिला। फिर उसने चंद शेअ्र पढ़े, जिन का तर्जुमा यह है कि-

जब महबूब ने मुझे बुलाया, तो मैंने कहा मुबारक! मुबारक! क्या ही बेहतर है तेरा विसाल और कितनी शीरीं है तेरी मुहब्बत और कितना मज़ेदार है तेरा इश्क़! तेरे हक़ की क़सम ! तूही मत्लूब है तूही मक़्सूद है, तेरी ही आरज़ुएं हैं, लोग मुझे तेरी मुहब्बत में मलामत करते हैं, किया करें और जितनी चाहे मलामतें करें, मेरा दिल तेरे सिवा किसी चीज़ का मुश्ताक़ नहीं। लोग अपने-अपने माशूक़ों के शहरों को फ़लां फ़लां को याद करते हैं, किया करें मुझे तो जब किसी शहर का तज़्किरा आ जाए, तू ही याद आता है।

मालिक रह० कहते हैं कि यह कह कर वह तवाफ़ में मशग़ूल हो गया फिर मुझे ख़बर नहीं कहां गया।

10. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं एक साल सख़्त तरीन गर्मी के ज़माने में हज को चला, लू बड़ी शिद्दत से चलती थी। एक दिन जब कि मैं वस्ते हिजाज़ में पहुंच गया, इत्तिफ़ाक़न क़ाफ़िले से बिछड़ गया और मुझे कुछ ग़ुनूदगी-सी आ गयी। दफ़अतन आंख जो खुली तो मुझे उस जंगल बयाबान में एक आदमी नज़र आया तो मैं जल्दी-जल्दी उसकी तरफ़ चला, देखा तो एक कमसिन लड़का था, जिस के दाढ़ी भी न थी और इस क़दर हसीन कि गोया चौदहवीं रात का चांद, बल्कि दोपहर का सूरज उस पर नाज़ व नेमत के करिश्मे चमक रहे हैं, मैंने उसको सलाम किया। उसने कहा इब्राहीम! वअलैकुमुस्सलाम, मेरा नाम लेने पर मुझे इन्तिहाई हैरत हुई और मुझ से सुकून न हो सका। मैंने बड़े ताज्जुब से पूछा कि साहिब ज़ादे ! तुझे मेरा नाम किस तरह मालुम हुआ तूने मुझे कभी देखा भी नहीं! कहने लगा कि इब्राहीम जब से मुझे मअ्रिफ़त हासिल हुई मैं अंजान नहीं बना और जब से मुझे विसाल नसीब हुआ, कभी फ़िराक़ नहीं हुआ।

मैंने पूछा कि इस सख़्त गर्मी में इस जंगल में तुझे क्या मजबूरी खींच कर लायी? कहने लगा कि इब्राहीम ! उस के सिवा मैं ने कभी किसी से उन्स पैदा नहीं किया और न उसके सिवा कभी किसी को साथी और रफ़ीक़ बनाया। मैं उसकी तरफ़ बिल्कुल्लिया मुन्क़तअ् हो चुका हूं और उसके मअ्बूद होने का इक़रार कर चुका हूं। मैंने पूछा कि तेरे खाने पीने का ज़रिया क्या है? कहने लगा कि महबूब ने अपने ज़िम्मे ले रखा है। मैं ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! मुझे इन अवारिज़ की वजह से जो मैं ने ज़िक्र किए, तेरी जान के हलाक हो जाने का अन्देशा है, तो उसने रोते हुए कि उसकी आंखों से आसुओं की लड़ी मोतियों की तरह से उस के रूख़्सारों पर पड़ रही थी, चंद शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि:-

"कौन शख़्स डरा सकता है मुझ को जंगल की सख़्ती से, हालांकि मैं इस जंगल को अपने महबूब की तरफ चलकर क़तअ् कर रहा हूं और उस पर ईमान ला चुका हूं। इश्क़ मुझ को बेचैन कर रहा है और शौक़ उभारे लिए जाता है और अल्लाह का चाहने वाला कभी किसी आदमी से नहीं डर सकता। अगर मुझे भूख लगेगी तो अल्लाह का ज़िक्र मेरा पेट भरेगा और अल्लाह की हम्द की वजह से मैं प्यासा नहीं हो सकता और अगर मैं ज़ईफ़ हूं, तो उसका इश्क़ मुझे हिजाज़ से ख़ुरासान तक (यानी पूरब से पच्छिम तक) ले जा सकता है। तू मेरे बचपन की वजह से मुझे हक़ीर समझता है, अपनी मलामत को छोड़, जो होना था हो चुका।

मैंने पूछा तुझे ख़ुदा की क़सम ! अपनी सही-सही उम्र बता क्या है? कहने लगा कि तूने बडी सख़्त क़सम मुझ को दे दी, जो मेरे नज़दीक बहुत ही बड़ी है मेरी उम्र बारह वर्ष की है।

फिर वह कहने लगा कि इब्राहीम ! तुझे मेरी उम्र पूछने की क्या ज़रूरत पेश आयी? मैंने बता तो दी ही। मैंने कहा कि तेरी बातों ने हैरत में डाल दिया, कहने लगा कि अल्लाह का शुक्र है, उसने बड़ी नेमतें अता फ़रमायीं, और अल्लाह का फ़ज़्ल है कि उसने अपने बहुत से मोमिन बंदों से अफ़ज़ल बनाया।

इब्राहीम रह० कहते हैं कि मुझे उसकी हुस्ने सूरत, हुस्ने सीरत और उसके शीरीं कलाम पर बड़ा ही ताज्जुब हुआ। मैंने कहा कि सुब्हानल्लाह, हक़ तआला शानुहू ने कैसी कैसी सूरतें बनायी हैं। उसने थोड़ी देर नीचे को सर झुका लिया, फिर ऊपर की तरफ़ मुंह उठाकर बहुत तिरछी कड़वी निगाह से मुझे देखा और चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

"अगर मेरी सज़ा जहन्नम हो तो मेरे लिये हलाकत है। उस वक़्त मेरी यह रौनक़ और ख़ूबसूरती क्या बनायेगी। उस वक़्त मेरी सारी ख़ूबियों को अज़ाब ऐबदार बना देगा और जहन्नम में तवील अर्से तक रोना पड़ेगा और जब्बार जल्ल जलालुहू यह फ़रमायेगा, ओ बद् तरीन ग़ुलाम, तू मेरे नाफ़रमानों में है तूने दुनिया में मेरा मुक़ाबला किया, मेरी हुक्म उदूली की, क्या तू मेरे अहद व पैमान को (जो अज़ल में हुए थे) भूल गया था या मेरी (क़ियामत की) मुलाक़ात को भूल गया था। (ऐ इब्राहीम) तू उस दिन देखेगा कि फ़रमांबरदारों के मुंह चौदहवीं रात के चांद की तरह चमक रहे होंगे और हक़ तआला शानुहू अपने ऊपर से अन्वार के पर्दे हटा देंगे, जिसकी वजह से ये फ़रमांबरदार उस पाक ज़ात की ज़ियारत से ऐसे मब्हूत हो जायेंगे कि उसके मुक़ाबले में हर नेमत और हर राहत को भूल जायेंगे और हक़ तआला उन फ़रमांबरदारों को हैबत और ख़ुश्नूदगी का लिबास पहनायेंगे और उनके चेहरों को रौनक़ और शादाबी अता होगी।

ये अश्आर पढ़ कर कहने लगा ऐ इब्राहीम, मह्जूर वह है जो दोस्त से मुंक़तअ् हो गया हो और विसाल उसको हासिल है जिसने अल्लाह की इताअत से वाफ़र हिस्सा लिया, लेकिन इब्राहीम, अपने रूफ़क़ाए सफ़र से बिछड़ गये हो। मैंने कहा, हां मैं ऐसा ही रह गया।, तुझसे अल्लाह के वास्ते सवाल करता हूँ कि तू मेरे लिये दुआ कर कि मैं अपने साथियों से जा मिलूँ। मेरे इस कहने पर उस

लड़के ने आसमान की तरफ़ देखा और कुछ आहिस्ता आहिस्ता ज़बान से कहा कि मुझे उसके होंठ हरकत करते हुए मालूम हुए। उस वक़्त मुझे दफ़्अतन नींद का झोंका सा आया बेहोशी सी हुई। उससे जो मैंने इफ़ाक़ा पाया तो क़ाफ़िले के बीच में ऊँट पर अपने आपको पाया और मेरे ऊँट पर जो मेरा साथी था वह मुझ से कह रहा था, इब्राहीम, होशियार रहो, संभले रहो, ऐसा न हो कि ऊँट पर से गिर जाओ और उस लड़के का मुझे कुछ पता न चला कि वह आसमान पर उड़ गया या ज़मीन के अंदर उतर गया। जब हम सारा रास्ता तै कर के मक्का मुकर्रमा पहुँच गये और मैं हरम शरीफ़ में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ कि वह लड़का काबे शरीफ़ का परदा पकड़े हुए रो रहा है और चंद शेअ्र पढ़ रहा है, जिनका तुर्जमा यह है:-

तर्जुमाः- "मैं काबे का परदा पकड़ रहा हूँ और बैतुल्लाह की ज़ियारत भी कर रहा हूँ, लेकिन दिल में जो कुछ है, उसको और राज़ की बात को तू खूब जानता है। मैं बैतुल्लाह की तरफ़ पैदल चल कर आया हूँ, कहीं सवार नहीं हुआ, इसलिये कि मैं बावजूद अपनी कमसिनी के फ़रेफ़्ता आशिक़ हूँ, मैं बचपन ही से तुझ पर मरने लगा हूँ, जबकि मैं इश्क़ को जनता भी न था, और अगर लोग मलामत करें किसी बात पर तो मैं अभी इश्क़ का तिफ़्ले मक्तब हूँ, ऐ अल्लाह अगर मेरी मौत का वक़्त आ गया हो, तो शायद मैं तेरे वस्ल से बहरा याब हो सकूँ।

इसके बाद वह बे इख़्तियार सज्दे में गिर गया और मैं देखता रहा। उसके बाद मैं उसके पास गया और उसको हिलाया तो वह इंतिक़ाल कर चुका था। "रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु॰"

इब्राहीम रह॰ कहते हैं कि मुझे उसके इंतिक़ाल का बड़ा सख़्त सदमा हुआ। मैं वहां से उठकर अपनी क़ियामगाह पर आया और उसके कफ़न देने के लिये कपड़ा लिया और मदद के लिये एक दो आदमी साथ लिये और वहां पहुँचा, जहां उसको मुर्दा छोड़ कर आया था, तो उसकी लाश का कहीं पता न चला। वहां दूसरे हाजियों से दर्याफ़्त किया, मगर किसी को भी पता न था, न किसी ने उसको देखा, तो मैं समझा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने उसको लोगों की आंखों से पोशीदा फ़रमा रखा था।

मैं वहां से अपनी क़ियामगाह पर वापस आ गया और मुझे कुछ ग़ुनूदगी सी आ गयी, तो मैंने उसको ख़्वाब में देखा कि वह एक बहुत बड़े मज्मे में है

और सबसे पेशपेश है, और उस पर इस क़दर नूर चमक रहा है और ऐसे उम्दा जोड़े हैं कि उनकी सिफ़त बयान में नहीं आ सकती। मैंने उससे पूछा कि तू वही लड़का है? कहने लगा कि मैं वही हूँ। मैंने पूछा कि क्या तेरा इंतिक़ाल नहीं हुआ? उसने कहा कि हां हो गया है। मैंने कहा कि मैंने तो तुझे तज्हीज़ व तक्फ़ीन के लिये बहुत तलाश किया, कहीं पता न चला। कहने लगा, इब्राहीम, सुन जिसने मुझे मेरे शहर से निकाला और अपनी मुहब्बत में फ़रेफ़्ता किया और मेरे अज़ीज़ व अक़ारिब से जुदा किया, उसी ने मुझे कफ़न दिया और किसी दूसरे का मोहताज नहीं बनने दिया। मैंने पूछा, कि हक़ तआला शानुहू ने मरने के बाद तेरे साथ क्या मामला किया? उसने कहा कि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और फ़रमाया कि तू क्या चाहता है? मैंने अर्ज़ किया कि इलाही, तू ही मक़सूद है और तेरी ही मुझे आरज़ू है। फ़रमाया कि बेशक तू मेरा सच्चा बंदा है और जो तू मांगे उसके लिये कोई रूकावट नहीं है। मैंने अर्ज़ किया कि मैं यह चाहता हूँ कि मेरे ज़माने के तमाम आदमियों में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमा ले। इर्शाद हुआ कि उन सबके बारे में तेरी सिफ़ारिश मक़्बूल है।

इब्राहीम रह० कहते हैं कि इसके बाद उस लड़के ने ख़्वाब में मुझ से रूख़सती मुसाफ़ा किया और मैं नींद से बेदार हो गया। मैंने अपने हज के जो अर्कान बाक़ी थे, वे पूरे किये, लेकिन उस लड़के की याद से और उसके रंज से मेरे दिल को क़रार न था। मैं हज से फ़ारिग़ होकर वापस हुआ, लेकिन रास्ते में सारे क़ाफ़िले वाले यह कहते थे कि इब्राहीम, तेरे हाथ की महक से हर शख़्स हैरान है कि कैसी खुश्बू आ रही है और इस वाक़िए के नक़्ल करने वाले कहते हैं कि मरने तक इब्राहीम रह० के हाथों में से वह खुश्बू आती रही। *(रौज़)*

11. हज़रत इब्राहीम ख़्वास रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक साल हज के लिये जा रहा था, बहुत से रफ़ीक़ साथ थे। चलते चलते एक मर्तबा मुझे तंहाई का ग़लबा हुआ और यह दिल में तक़ाज़ा हुआ कि सब का साथ छोड़ कर अकेले चलूँ। मैंने उस रास्ते को छोड़ कर जिस पर सब चल रहे थे, एक दूसरा तंहाई का रास्ता इख़्तियार कर लिया और मैं तीन दिन और तीन रात बराबर चलता रहा। न तो मुझे उनमें खाने का ख़्याल आया, न पीने का, न कोई और हाजत पेश आयी। तीन दिन रात चलने के बाद मैं एक ऐसे जंगल में पहुँच गया, जो बड़ा शादाब सर सब्ज़ और हर क़िस्म के फल और फूल उसमें लगे हुए, जो बड़े महकदार थे और उसके बीच में एक चश्मा है, मुझे ये ख़्याल हुआ कि यह तो जन्नत है और मैं

सख़्त हैरत में पड़ गया। मैं इसी फ़िक्र व सोच में था कि एक जमाअत आती नज़र आयी, जिनके चेहरे तो आदमियों जैसे थे और उन पर मुरक़्क़ा चादरें और खुशनुमा लुंगियां थीं। उन लोगों ने आकर मुझको घेर लिया और सलाम किया। मैंने सलाम का जवाब दिया और कहा कि तुम कहां मैं कहां, फिर मुझे यह ख़्याल हुआ कि यह जिन्नात की क़ौम है। इतने में उनमें से एक ने कहा कि हममें एक मस्अले में इख़्तिलाफ़ हो रहा है और हम जिन्नात में से हैं, जिन्होंने बैअ़तुल उक़्बा की रात में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह का पाक कलाम सुना था। हुज़ूर सल्ल० के पढ़ने की आवाज़ ने हमें दुनिया के सारे कामों से छुड़ा दिया और यह जगह अल्लाह जल्ल शानुहू ने हमारे लिये मुज़य्यन फ़रमा दी। मैंनें पूछा कि इस जगह से वह जगह कितनी दूर है, जहां मैंने अपने सफ़र के साथियों को छोड़ा है। मेरे इस सवाल पर एक शख़्स ने उनमें से तबस्सुम करते हुए कहा कि अबू इस्हाक़, अल्लाह जल्ल शानुहू के यही अजीब भेद हैं, इस जगह तुम्हारी क़ौम का कभी कोई शख़्स बजुज़ एक आदमी के नहीं आया। एक जवान तुम्हारी जिंस से आया था, उसका यहां इंतिक़ाल हो गया था और यह देख उसकी क़ब्र है। उसकी क़ब्र मैंने देखी कि उस पानी के तालाब के किनारे थी, उसके गिर्द छोटा सा बाग़ीचा था, जिसमें ऐसे फूल लग रहे थे कि मैंने उस जैसे कभी नहीं देखे थे। फिर वह जिन्न कहने लगा कि उस जगह के और इस जगह के दर्मियान इतने इतने महीनों का या इतने इतने वर्षों का रास्ता है।

इब्राहीम रह० ने कहा कि अच्छा इस जवान का हाल मुझे बताओ, उनमें से एक ने सुनाया कि हम लोग इस चश्मे के किनारे बैठे हुए इश्क़ के बारे में बहस कर रहे थे कि इतने में एक जवान आया और उसने आकर सलाम किया, हमने सलाम का जवाब दिया और हमने पूछा कि जवान कहां से आये हो?

उसने कहा कि शहर नेशापूर से आया हूँ। हमने पूछा कि उस शहर को छोड़े हुए कितने दिन हुए? उसने कहा कि सात दिन हुए हैं। हमने कहा कि शहर से किस इरादे से चले थे? उस जवान ने कहा कि मैंने अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद सुना है :-

وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ○

तर्जुमा:- तुम अपने रब की तरफ़ रूजूअ़ करो और उस की फ़रमांबरदारी करो, क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब होने लगे, फिर उस वक़्त तुम्हारी किसी की

तरफ़ से भी कोई मदद न की जाये।'

हमने उस जवान से पूछा कि इनाबत क्या है? और अज़ाब क्या है, उसने बयान करना शुरू किया और जब अज़ाब बयान करना शुरू किया तो एक चीख़ मारी और मर गया। हम लोगों ने उसको क़ब्र में दफ़न कर दिया।

इब्राहीम रह० कहते हैं कि मुझे इस क़िस्से से बड़ी हैरत हुई। इसके बाद मैं उस जवान की क़ब्र के नज़दीक गया, तो उसके सिरहाने नर्गिस के फूलों का एक बहुत बड़ा गुलदस्ता रखा था, इतना बड़ा था जैसे बड़ी चक्की हो और उस की क़ब्र पर ये लफ़्ज़ लिखे हुए थे :-

هذا قبر حبيب الله قتيل الغيرة

"हाज़ा क़ब्रु हबीबिल्लाहि क़तीलल ग़ैर-ति"

(यह अल्लाह के दोस्त की क़ब्र है, जो ग़ैरत का क़तल किया हुआ है।)

और नर्गिस के एक पत्ते पर इनाबत की तफ़्सीर लिखी हुई थी। मैंने उसको पढ़ा। उन जिन्नात ने मुझसे इसका मतलब पूछा। मैंने उसका मतलब बतलाया तो वे बहुत खुश हुए और मज़े में लौटने लगे। जब इससे उन्हें सुकून सा हुआ तो कहने लगे कि हमारा वह मस्अला जिस में झगड़ा था, हल हो गया।

इब्राहीम रह० कहते हैं कि फिर मुझे कुछ ग़ुनूदगी सी आयी। इसके बाद जो मेरी आंख खुली तो मैं मस्जिदे आइशा के पास था, (जो तन्ईम के पास मक्का मुकर्रमा के क़रीब है) और मेरे कपड़ों में फूलों का गुलदस्ता था, जो एक साल तक मेरे पास रहा। एक साल तक उसमें कोई तग़य्युर न हुआ, उसके चंद अय्याम बाद वह खुद ब खुद गुम हो गया।

12. ताजिरों की एक जमाअत एक मर्तबा हज को गयी। रास्ते में जहाज़ टूट गया और हज का वक़्त तंग हो गया था। उनमें से एक शख़्स के साथ पचास हज़ार का माल था, वह उसको छोड़कर हज को चल दिया। साथियों ने उसको मश्वरा दिया कि अगर तू यहां ठहर जाये तो तेरा सामान कुछ निकल सकता है वह ताजिर कहने लगा कि खुदा की क़सम अगर सारी दुनिया का माल मुझे मिल जाये, तब भी हज के मुक़ाबले में उसको तर्जीह न दूं कि वहां की हाज़िरी में औलिया अल्लाह की ज़ियारत नसीब होगी और मैं इन हज़रात में जो कुछ देख चुका हूँ बस देख चुका हूँ (बयान से बाहर है) लोगों ने पूछा कि आख़िर तूने क्या देखा? उस ताजिर ने सुनाया कि हम एक मर्तबा हज को जा रहे थे कि प्यास की

शिद्दत ने सबको परेशान कर दिया और एक एक गिलास इतने इतने दामों में मिल रहा था। मैंने एक दिन प्यास की शिद्दत में सारे क़ाफ़िले को छान डाला, कहीं पानी का घूंट न क़ीमत से मिला, न किसी और तरह से, और प्यास की वजह से मेरा दम निकलने लगा। मैं चंद क़दम आगे चला तो एक फ़क़ीर जिसके साथ एक बरछा था और एक प्याला, उसने अपने बरछे को एक हौज़ की नाली में गाड़ दिया, उसके नीचे से पानी उबलने लगा और नाली के ज़रिये से हौज़ में जमा होने लगा। मैं हौज़ की तरफ़ गया और खूब सेर हो कर पानी पिया और अपना मश्कीज़ा भी भर लिया। इसके बाद क़ाफ़िले वालों को मैंने ख़बर की। सब क़ाफ़िले वाले उससे सेराब हुए और वह हौज़ उसी तरह लबरेज़ था। वह ताजिर कहने लगा, ऐसी जगह हाज़िरी से कोई बाज़ रह सकता है कि जहां ऐसे ऐसे बुज़ुर्ग जमा होते हों? (रौज़)

इब्ने अरबी रह० ने भी मुहाज़रात में इस क़िस्से को नक़ल किया है और लिखा है कि उसका तमाम माल पचास हज़ार अशर्फ़ियों का था, जिनमें एक मोती चार हज़ार अशर्फ़ियों का था।

13. अबू अब्दुल्लाह जौहरी रह० कहते हैं कि मैं एक साल अरफ़ात के मैदान में था। मेरी ज़रा सी आंख लगी, तो मैंने देखा कि दो फ़रिश्ते आसमान से उतरे। एक ने उनमें से अपने साथी से कहा कि इस साल कितने आदमियों ने हज किया? साथी ने जवाब दिया कि छः लाख आदमियों ने हज किया, लेकिन उनमें से सिर्फ़ छः आदमियों का हज क़ुबूल हुआ। मुझे यह बात सुनकर इस क़दर रंज हुआ, दिल चाहा कि अपने मुंह पर तमांचे मारूँ और अपनी हालत पर खूब रोऊँ। इतने में उस पहले फ़रिश्ते ने पूछा कि जिन लोगों का हज क़ुबूल नहीं हुआ, उनके बारे में अल्लाह जल्ल जलालुहू ने क्या मामला फ़रमाया? दूसरे फ़रिश्ते ने जवाब दिया कि करीम ने करम की निगाह फ़रमायी और मक़्बूलीन में से हर एक के तुफ़ैल एक एक लाख का हज क़ुबूल फ़रमा लिया और यह खुदा तआला का बड़ा फ़ज़्ल है। वह अपना फ़ज़्ल व इनाम जिसको चाहे बख़्श दे। (रौज़)

इस क़िस्म का एक वाक़िआ अली बिन मुवफ़्फ़क़ रह० का पहली फ़स्ल की हदीस नं० 6 के ज़ैल में भी गुज़र चुका है।

14. अली बिन मुवफ़्फ़क़ रह० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हरम शरीफ़ में बैठा हुआ था और उस वक़्त तक साठ हज कर चुका था। मेरे दिल में यह वस्वसा गुज़रा कि कब तक इन जंगल बयाबानों में फिरता रहूँगा (अब ख़त्म करूँ,

बहुतेरे हज कर लिये) मुझ पर दफ़्अतन नींद का ग़लबा हुआ, तो मैंने एक ग़ैबी आवाज़ देने वाले को देखा, वह कह रहा है, ऐ इब्ने मुवफ़्फ़क़, तू अपने घर उसी को बुलाता है, जिसके बुलाने से तेरा दिल खुश हो। मुबारक हैं वे लोग जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू चाहें और आला जगह बुलायें। इसके बाद उस आवाज़ देने वाले ने दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

मैंने ज़ियारत के लिये अपने से मुहब्बत रखने वालों को बुलाया है और उनके अलावा किसी को नहीं बुलाया, ये लोग मेरे घर की तरफ़ इक्राम के साथ आये हैं, पस मुबारक हैं ये करीम लोग भी और वह ज़ात भी जिसने इनको बुलाया। (रौज़)

15. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि मैंने एक नौजवान को काबा शरीफ़ के पास देखा कि दमादम रूकूअ् सज्दे कर रहा है। मैंने पूछा कि बड़ी कसरत से नमाज़ें पढ़ रहे हो। वह कहने लगा कि वापसी-ए-वतन की इजाज़त मांग रहा हूँ। इतने में मैंने देखा कि एक काग़ज़ का परचा ऊपर से गिरा, उसमें लिखा हुआ था कि यह अल्लाह जल्ल शानुहू जो बड़ी इज़्ज़त वाला, बड़ी मग़्फ़िरत वाला है, की तरफ़ से अपने सच्चे शुक्रगुज़ार बंदे की तरफ़ है कि तू वापस चला जा, इस तरह कि तेरे अगले पिछले गुनाह सब बख़्श दिये गये। (रौज़)

16. सहल बिन अब्दुल्लाह रह० फ़रमाते हैं कि किसी वली का लोगों के साथ मेल जोल रखना उसकी ज़िल्लत का सबब होता है और सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ लगाव उसकी इज़्ज़त का सबब होता है। मैं ने बहुत कम वली ऐसे देखे हैं, जो यकसू न रहते हों।

अब्दुल्लाह बिन सालेह रह० एक बुज़ुर्ग थे, जिन पर अल्लाह जल्ल शानुहू की ख़ास अताया थीं और बहुत इनामात थे, वे लोगों से भाग कर एक शहर से दूसरे शहर में फिरते रहते थे। इसी तरह आख़िर मक्का मुकर्रमा पहुँच गये और वहां बहुत तवील क़ियाम किया। मैंने उनसे कहा कि इस शहर में तो आपने बहुत ज़्यादा क़ियाम किया। कहने लगे कि मैं इस शहर में क्यों कर न ठहरूँ। मैंने ऐसा कोई शहर नहीं देखा, जिसमें इस शहर से ज़्यादा रहमतें और बरकतें नाज़िल होती हों। इस शहर में सुबह को और शाम को फ़रिश्ते उतरते हैं। मैंने इस शहर में बड़े बड़े अजाइबात देखे हैं। फ़रिश्ते मुख़्तलिफ़ सूरतों में बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हैं और यह सिलसिला ख़त्म नहीं होता। अगर मैं उन सब अजाइबात को बयान करूँ,

जो मैं ने यहां देखे हैं तो जिन का ईमान कामिल नहीं, उनकी अक़्लें उनको बरदाश्त भी न कर सकेंगी। मैंने दर्याफ़्त किया कि तुम्हें ख़ुदा की क़सम, कुछ अपने देखे हुए अजाइबात मुझे भी सुनाओ। कहने लगे कि कोई वली कामिल, जिसकी विलायत सही हो चुकी हो, ऐसा नहीं जो हर जुमा की शब में इस शहर में न आता हो, उन्हीं लोगों के देखने के वास्ते मेरा यहां क़ियाम है। मैंने उनमें से एक साहब को देखा, जिनका नाम मालिक बिन क़ासिम जबली रह० था, वह आये और उनके हाथ में से गोश्त की ख़ुश्बू आ रही थी। मैंने कहा कि तुम शायद अभी खाना खा कर आये हो। कहने लगे, अस्तग़िफ़रूल्लाह, मैंनें तो एक हफ़्ते से कुछ नहीं खाया, अलबत्ता अपनी वालिदा को खाना खिला कर आया हूँ। और जल्दी इसलिये की, ताकि मक्का मुकर्रमा में सुबह की नमाज़ में शिर्कत कर लूँ।

अब्दुल्लाह रह० कहते हैं कि जहां से मालिक आये थे, उस जगह का और मक्का मुकर्रमा का नौ सौ फ़र्सख़ का फ़ासिला है (एक फ़र्सख़ तीन मील का होता है तो सत्ताईस सौ मील हुए) इसके बाद अब्दुल्लाह ने मुझसे पूछा कि तुझे इस क़िस्से का यक़ीन आ गया? सह्ल रह० कहते हैं कि हां यक़ीन आ गया। कहने लगे अल्लाह का शुक्र है कि मुझे एक मोमिन आदमी मिला और बाज़ बुज़ुर्गों ने बयान किया कि उन्होंने काबा शरीफ़ के गिर्द फ़रिश्तों को और अंबिया को और औलिया को बसा औक़ात देखा और ज़्यादातर जुमा की शब में और दो शंबा (पीर) और पंजशंबा (जुमेरात) की शब में देखा, इसके बाद और आजाइब अंबिया की ज़ियारत के मुताल्लिक ज़िक्र किये। *(रौज़)*

17. कहते हैं कि हिशाम बिन अब्दुल मलिक, जबकि वह शाहज़ादा था और ख़ुद उस वक़्त तक बादशाह नहीं बना था, हज को गया और तवाफ़ करते हुए उसने हज्रे अस्वद को बोसा देने का इरादा किया और इंतिहाई कोशिश के बावजूद हुजूम की कसरत से इस पर क़ुदरत न हुई। इतने में हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अली बिन इमाम हुसैन रज़ि० तवाफ़ करते हुए हज्रे अस्वद पर पहुँचे तो एक दम सारा मज्मा ठहर गया और उनके रास्ते से इधर उधर हो गया। वह इत्मीनान से बोसा देकर चल दिये। किसी ने हिशाम से पूछा कि यह कौन शख़्स है (जिसका एज़ाज़ शाहज़ादे से भी ज़्यादा है) हिशाम ने कह दिया कि मैं नहीं जानता। उलमा ने लिखा है कि वह जान बूझ कर अंजान बन कर इंकार करता था, ताकि उसके मुसाहिबीन वग़ैरह जो शाम से उसके साथ आये हुए थे, उनके दिल में हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० की वक़्अत ज़्यादा पैदा न हो और यह बनू उमैया

अह्ले बैत की वक्अ़त को गवारा न करते थे। फ़र्ज़दक़ जो अरब का मशहूर शायर है, वह भी वहां खड़ा था, उसने कहा, मैं इनको जानता हूँ फिर उसने चंद शेअ्र पढ़े :-

هٰذَا ابْنُ خَيْرِ عِبَادِ اللهِ كُلِّهِمْ ۔ هٰذَا التَّقِيُّ النَّقِيُّ الطَّاهِرُ الْعَلَمْ

هٰذَا الَّذِىْ تَعْرِفُ الْبَطْحَاءُ وَطْاَتَهٗ ۔ وَالْبَيْتُ يَعْرِفُهٗ وَالْحِلُّ وَالْحَرَمُ

يَكَادُ يُمْسِكُهٗ عِرْفَانُ رَاحَتِهٖ ۔ رُكْنُ الْحَطِيْمِ اِذَا مَاجَآءَ يَسْتَلِمُ

مَاقَالَ لَا قَطُّ اِلَّا فِىْ تَشَهُّدِهٖ ۔ لَوْلَا التَّشَهُّدُ كَانَتْ لَآءُهٗ نَعَمُ

اِذَارَاَتْهُ قُرَيْشٌ قَالَ قَآئِلُهَا ۔ اِلٰى مَكَارِمِ هٰذَا يَنْتَهِى الْكَرَمُ

اِنْ عُدَّا اَهْلُ التُّقٰى كَانُوْآ اَئِمَّتَهُمْ ۔ اَوْقِيْلَ مَنْ خَيْرُ اَهْلِ الْاَرْضِ قِيْلَهُمْ

هٰذَا ابْنُ فَاطِمَةِ اِنْ كُنْتَ جَاهِلَهٗ ۔ بِجَدِّهٖ اَنْبِيَآءُ اللهِ قَدْ خُتِمُوْا

وَلَيْسَ قَوْلُكَ مَنْ هٰذَا بِضَآئِرِهٖ ۔ اَلْعُرْبُ تَعْرِفُ مَنْ اَنْكَرْتَ وَالْعَجَمُ

يُغْضِىْ حَيَآءً وَيُغْضٰى مِنْ مَّهَابَتِهٖ ۔ فَلَا يُكَلِّمُ اِلَّا حِيْنَ يَبْتَسِمُ

जिनका तर्जुमा यह है कि :-

1. यह अल्लाह के बंदों में से बेहतरीन की औलाद है, यह मुत्तक़ी पाक साफ़ और सरदार है।

2. यह वह शख़्स है जिसके क़दम को सारा मक्का जानता है, यह वह शख़्स है जिसको बैतुल्लाह जानता है, इसको हिल्ल व हरम पहचानते हैं।

3. यह वह शख़्स है कि जब हज्रे अस्वद का बोसा देने के लिये उस के क़रीब जाये तो उसके हाथों को पहचान कर क़रीब है कि हज्रे अस्वद का कोना उसके हाथों को पकड़ ले। इस सूरत में हाथों की ख़ुसूसियत इस वजह से है कि हज्रे अस्वद के बोसे के वक़्त दोनों हाथ इस कोने पर रखे जाते हैं। इस मतलब के मुवाफ़िक़ रूक्नुल हतीम से मजाज़न रूक्ने काबा मुराद होगा। और हो सकता है कि यह तर्जुमा किया जाये कि जब यह शख़्स तवाफ़ करते हुए हतीम की तरफ़ पहुँचता है तो क़रीब है कि हतीम वाला कोना उसके हाथों को पहचान कर उनको चूमने के लिये पकड़ ले। इस मतलब के मुवाफ़िक़ रूक्नुल हतीम अपने ज़ाहिर पर होगा और हाथों के पहचानने की ख़ुसूसियत अता और जूद की कसरत की तरफ़ इशारा होगा।

4. यह वह शख़्स है जिसने कभी ला नहीं कहा, ला के मायने नहीं के हैं, यानी कभी किसी मांगने वाले को इंकार नहीं किया और बजुज़ कलिमा-ए-तैयबा के कि इसमें "लाइला-ह" में ला कहना पड़ता है, उसकी मजबूरी है और वह हर अत्तहिय्यात में पढ़ा जाता है। अगर यह मजबूरी न होती तो उसकी ज़बान से ला कभी न निकलता।

5. जब क़बीला क़ुरैश जो करम में मशहूर क़बीला है, उसको देखता है तो कहने वाला बेसाख़्ता कह देता है कि उसके अख़्लाक़ पर करम का मुन्तहा है, यानी उससे ज़्यादा करीम कोई नहीं।

6. और जब कहीं अह्ले तक़्वा का शुमार होने लगे तो यही लोग उसमें भी मुक़्तदा होंगे और जब यह पूछा जाये कि दुनिया की बेहतरीन हस्तियां कौन हैं, तो इन्हीं लोगों की तरफ़ उंगलियां उठेंगी।

7. ओ हिशाम, अगर तू इससे जाहिल है तो सुन कि यह फ़ातिमा रज़ि॰ की औलाद है और इसी के दादा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नुबुव्वत ख़त्म कर दी गयी,

8. तेरा यह कहना कि यह कौन है, इसको ऐब नहीं लगाता, जिसके पहचानने से तूने इंकार कर दिया, इसको अरब जानता है, अजम जानता है।

9. यह वह शख़्स है जो शर्म की वजह से अपनी आंख नीची रखता है और सारी दुनिया उसकी अज़्मत और हैबत से आंख नीचे रखती है कोई शख़्स उसके सामने उस वक़्त तक रौअब की वजह से बात नहीं कर सकता, जब तक कि वह खंदापेशानी से पेश न आये।

अशआर का तर्जुमा ख़त्म हो गया।

साहिबे रौज़ ने इतने ही अशआर नक़ल किये हैं। यह क़सीदा बड़ा है और बहुत से अशआर शायर ने उनकी और उस ख़ानदान की फ़ज़ीलत में बरजस्ता कहे हैं, वफ़यातुल अअ्यान, मिरातुल जिनान, हयातुल हैवान वग़ैरह में इस क़सीदे को ज़िक्र किया है। दुररे नज़ीद इस क़सीदे की मुस्तक़िल शरह है। इसमें नक़ल किया है कि हिशाम ने इस क़सीदे को सुनकर ग़ुस्से में आकर फ़रज़दक़ को क़ैद करा दिया।

दर हक़ीक़त हज़रत जैनुल आबिदीन रह॰ की इबादत और जूद व करम इतने बढ़े हुए थे कि उनके वाक़िआत का इख़्तिसार भी दुश्वार है। रात दिन में एक

हज़ार रक्अत नफ़्ल पढ़ा करते थे और जब वुज़ू करते तो चेहरे का रंग ज़र्द हो जाता और जब नमाज़ को खड़े होते तो बदन पर कपकपी आ जाती। किसी ने इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया कि तुम्हें ख़बर नहीं कि किस पाक ज़ात के सामने खड़ा होता हूँ।

एक मर्तबा सज्दे में थे कि घर में आग लग गयी, लोगों ने शोर मचाया, ऐ रसूलुल्लाह के बेटे, आग लग गयी, आग, आग। मगर यह इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते रहे। जब फ़ारिग़ हुए तो आग बुझ बुझा चुकी थी। किसी ने उनसे पूछा, तो फ़रमाया कि इससे ज़्यादा सख़्त आग (यानी जहन्नम की आग) के ख़ौफ़ ने इसकी तरफ़ मुतवज्जह न होने दिया। आप का मामूल था कि रात को अंधेरे में पोशीदा लोगों के घरों पर जाकर उनकी इआनत फ़रमाया करते थे और बहुत से घराने ऐसे थे, जिनका गुज़ारा आप की इमदाद पर था और उनको यह भी पता न चलता था कि यह कौन शख़्स है? जब आप का इंतिक़ाल हुआ तो मालूम हुआ कि सौ घर मदीना तैयबा में ऐसे थे, जिन पर आप ख़र्च फ़रमाया करते थे।

(रौज़)

ऐसी हालत में फ़रज़्दक़ जो कहे, वह सही है।

हज़रत इमाम मालिक रह० का इर्शाद है कि ख़ानदाने नुबुव्वत में हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० जैसा शख़्स कोई भी न था। (यानी अपने ज़माने में)।

यह्या बिन सईद रह० कहते हैं कि हाशिमी ख़ानदान में जितने हज़रात का ज़माना मैंने पाया है, उनमें आप अफ़ज़ल तरीन शख़्स थे।

सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं कि आपसे ज़्यादा मुत्तक़ी मैंने नहीं देखा। इन हालात पर भी जब आप हज को तशरीफ़ ले गये और एहराम बांधने का वक़्त आया तो आप का चेहरा ज़र्द हो गया और लब्बैक न कह सके। लोगों ने पूछा कि आप लब्बैक नहीं पढ़ते, तो फ़रमाया कि मुझे ये ख़ौफ़ है कि कहीं जवाब में "ला लब्बैक" न कह दिया जाये। मगर जब लोगों ने इस्रार किया कि एहराम बांधने के वक़्त लब्बैक कहना ज़रूरी है तो आपने लब्बैक पढ़ा और बेहोश होकर सवारी पर से गिर पड़े और हज के ख़त्म तक यही सूरत रही कि जब लब्बैक कहते, यही हालत होती।

हज़रत इमाम मालिक रह० से नक़ल किया गया है कि जब हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० ने एहराम बांधा और लब्बैक कहने का इरादा किया तो बेहोश होकर

ऊँटनी पर से गिर गये और हड्डी टूट गयी। *(तह्ज़ीबुत्तह्ज़ीब)*

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० से बड़ी हिक्मत के इर्शादात किताबों में नक़ल किये गये। आपका इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत बाज़ लोग उसके ख़ौफ़ से करते हैं, यह ग़ुलामों की इबादत है (कि डंडे के ज़ोर से काम करें) और बाज़ लोग उसके इनामात के वास्ते करते हैं। यह ताजिरों की इबादत है। (कि हर काम में कमाई की फ़िक्र है।)

अह्रार की इबादत यह है कि उसके शुक्र में इबादत करें। आपके साहिबज़ादे हज़रत बाक़िर रह० फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे वालिद हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० ने वसीयत फ़रमायी है कि पांच क़िस्म के आदमियों के पास मत लगना, हत्ताकि रास्ता चलते भी उनका रफ़ीक़े सफ़र न बनना :-

1. एक फ़ासिक़ शख़्स कि वह एक लुक़्मे के बदले में तुझे बेच देगा, बल्कि एक लुक़्मे से कम में भी बेच देगा। मैंने अर्ज़ किया कि एक लुक़्मे से कम का क्या मतलब? फ़रमाया कि महज़ इस उम्मीद पर कि लुक़्मा किसी से मिल जाये, फिर वह उसकी उम्मीद पूरी भी न हो।

2. दूसरे, बख़ील के पास न लगना कि वह तेरी सख़्त हालत के वक़्त भी तुझसे किनारा कशी करेगा,

3. तीसरे, झूठ बोलने वाला शख़्स बमंज़िला उस बालू के है, जो दूर से पानी मालूम होता हो, वह क़रीब आने वालों को दूर बतायेगा, दूर होने वाली चीज़ को क़रीब करके बताएगा।

4. चौथे बेवक़ूफ़, अहमक़ से दूर रहना कि वह नफ़ा पहुँचाने का इरादा करेगा और नुक़्सान पहुँचायेगा। इसी वजह से कहा गया है कि समझदार दुश्मन, नादान दोस्त से बेहतर है।

5. पांचवे उससे दूर रहना, जो अपने रिश्तेदारों से क़ता-रहमी करता हो, इसलिये कि मैंने ऐसे शख़्स को क़ुरआन पाक में तीन जगह मलऊन पाया। *(रौज़)*

18. हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० के साहिबज़ादे हज़रत इमाम बाक़िर मुहम्मद बिन अली रह० जब हज को तशरीफ़ ले गये और बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़ी तो इतने ज़ोर से रोये कि चीख़े निकल गयी। लोगों ने कहा कि सब लोगों की नज़रें इधर लग गयीं, आप चीख़ें न मारें। फ़रमाया कि शायद अल्लाह

जल्ल शानुहू मेरे रोने की वजह से रहमत की नज़र फ़रमा ले, जिसकी वजह से कल क़ियामत के दिन कामियाब हो जाऊँ। इसके बाद तवाफ़ किया और तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम पर जा कर नफ़्लें पढ़ीं, तो सज्दे की जगह आंसुओं की वजह से भीग गयी थी। आपने अपने एक साथी से फ़रमाया कि मुझे सख़्त रंज है और मेरा दिल सख़्त फ़िक्र में मश्गूल है। किसी ने पूछा कि आप को किस चीज़ का रंज है फ़रमाया कि जिसके दिल में अल्लाह का ख़ालिस दीन दाख़िल हो जाये, वह उसको अल्लाह के मा सिवा से ख़ाली कर देता है और दुनिया इन चीज़ों के अलावा और क्या चीज़ है? यही सवारी है, जिस पर सवार होकर आये हो, यही कपड़ा है, जिसको पहन रखा है। यही बीवी है जो मिल गयी, यही खाना है जो खाया है। *(रौज़)*

19. हज़रत लैस बिन सअ्द रह० कहते हैं कि मैं सन् एक सौ तेरह (113) हिजरी में पैदल हज को गया जब मैं मक्का मुकर्रमा पहुँच गया तो अस्र की नमाज़ के वक़्त जबले अबू क़ुबीस पर चढ़ गया, वहां मैंने एक साहब को बैठे देखा कि वह दुआयें मांग रहे हैं और "या रब्बि या रब्बि" इतनी मर्तबा कहा कि दम घुटने लगा, फिर उन्होंने "या रब्बाहु, या रब्बाहु" इसी तरह कहा कि दम निकलने लगा। फिर इसी तरह "या अल्लाहु या अल्लाहु" कहते रहे कि दम घुटने लगा, फिर इसी तरह "या हय्यु या हय्यु" लगातार कहते रहे, फिर इसी तरह "या रहमानु या रहमानु" फिर "या रहीमु या रहीमु" इसी तरह कहा कि दम घुटने लगा, फिर "या अर्हमुर्राहिमीन" भी इसी तरह कहा सात मर्तबा कि दम घुटने लगा। इसके बाद वह कहने लगे "या अल्लाहु" मेरा अंगूरों को जी चाह रहा है, वह अता फ़रमा और मेरी चादरें पुरानी हो गयीं।

लैस रह० कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम, उनकी ज़बान से ये लफ़्ज़ पूरे निकले भी नहीं थे कि मैंने एक टोकरी अंगूरों से भरी हुई रखी देखी, हालांकि उस वक़्त रूए ज़मीन पर कहीं अंगूर का निशान भी न था और दो चादरें रखी हुई देखीं। उन्होंने अंगूर खाने का इरादा किया, तो मैंने कहा कि मैं भी इनमें आपका शरीक हूँ। फ़रमाया कि कैसे? मैंने कहा कि जब आप दुआ कर रहे थे तो मैं आमीन आमीन कह रहा था। फ़रमाने लगे, आओ, खाओ, लेकिन इसमें से कुछ साथ न ले जाना। मैं आगे बढ़ा और उनके साथ ऐसी अजीब चीज़ खायी कि उम्र भर ऐसी चीज़ न खायी थी। वे अजीब क़िस्म के अंगूर थे कि उनमें बीज भी न था। मैंने ख़ूब पेट भर कर खाए, मगर उस टोकरी में कुछ कमी न हुई। फिर उन्होंने

फ़रमाया कि इन दोनों चादरों में जौन सी तुम्हें पसंद हो ले लो। मैंने कहा कि चादर की मुझे ज़रूरत नहीं है। फिर फ़रमाने लगे कि ज़रा सामने से हट जाओ। मैं इनको पहन लूँ। मैं परे को हट गया तो उन्होंने एक चादर लुंगी की तरह बांध ली, दूसरी ओढ़ ली और जो चादरें पहले से पहने हुए थे उनको हाथ में लेकर पहाड़ से नीचे उतरे। मैं पीछे हो लिया। जब सफ़ा मर्वः के दर्मियान पहुँचे तो एक साइल ने कहा कि रसूलुल्लाह के बेटे! यह कपड़ा मुझे दे दीजिये। अल्लाह जल्ल शानुहू आप को जन्नत का जोड़ा अता फ़रमाये। वे दोनों चादरें उसको दे दीं। मैंने उस साइल के क़रीब जाकर उससे पूछा कि यह कौन हैं? उसने कहा कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ हैं, फिर उनके पास वापस आया कि उनसे कुछ सुनूं, मगर कहीं पता न चला। *(रौज़)*

यह हज़रत इमाम बाक़िर रह० के साहिबज़ादे हैं। हज़रत इमाम मालिक रह० फ़रमाते हैं कि मैं बारहा उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने हमेशा तीन इबादतों में से किसी न किसी में मश्ग़ूल पाया, नमाज़ या तिलावत या रोज़ा, और बग़ैर वुज़ू के हदीस नक़ल न करते थे। *(तह्ज़ीबुत्तह्ज़ीब)*

सुफ़ियान सोरी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत जाफ़रे सादिक़ रज़ि० से सुना, फ़रमाते थे कि इस ज़माने में सलामती कमयाब हो गयी और अगर वह कहीं मिल सकती है तो गोशा-ए-ग़ुमनामी में है और अगर इसमें नहीं (यानी यह मयस्सर न हो सके) तो फिर यकसूई और तंहाई में तलाश की जाये। लेकिन तंहाई गुमनामी के बराबर नहीं हो सकती। और अगर वहां भी न हो सके, तो फिर चुप रहने में और चुप रहना तंहाई की बराबरी नहीं कर सकता और अगर ख़ामोशी में भी न हो सके, तो फिर सलफ़े सालेह के कलाम में और सईद शख़्स वह है, जो अपने नफ़्स में ख़लवत और यकसूई पाये।

हज़रत जाफ़र रह० अपने बाप दादा की रिवायात से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स पर अल्लाह जल्ल शानुहू का कोई इनाम हो उसको ज़रूरी है कि उसका शुक्र अदा करे और जिस पर रिज़्क़ में तंगी हो, वह इस्तिग़फ़ार की कसरत करे और जिसको कोई परेशानी लाहिक़ हो, वह लाहौ-ल पढ़ा करे। *(रौज़)*

20. हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० फ़रमाते हैं कि मैं सन एक सौ उन्नचास (149) हिजरी में हज को जा रहा था, रास्ते में कादसिया (एक शहर का नाम

है) में उतरा। मैं लोगों की ज़ेब व ज़ीनत और उनका हुजूम और कसरत देख रहा था। मेरी नज़र एक नौजवान ख़ूबसूरत पर पड़ी कि उसने कपड़ों के ऊपर एक बालों का कपड़ा पहन रखा था, पांव में जूता भी था और सबसे अलाहिदा बैठा था। मैंने ख़्याल किया कि यह लड़का सूफ़ी क़िस्म के आदमियों में से मालूम होता है कि रास्ते में दूसरों पर बोझ ही बनेगा, मैं उसको जाकर फ़हमाइश करूँ, इस ख़्याल से मैं उसके क़रीब गया, जब उसने मुझे अपनी तरफ़ आते देखा, कहने लगा ऐ शक़ीक़:-

اِجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ (حجرات)

"इज्तनिबू कसीरम-मिनज़्ज़न्नि इन्-न बअ्ज़ज़्ज़न्नि इस्मुन्॰" *(हुजुरात)*

(बदगुमानी से बचो। बाज़ गुमान गुनाह होते है) और यह कह कर मुझे छोड़ कर चल दिया। मैंने सोचा कि यह तो बड़ी मुश्किल बात हो गयी, मेरा नाम लेकर (हालांकि मुझको जानता भी नहीं) मेरे दिल की बात कह कर चल दिया। यह तो कोई वाक़ई बुज़ुर्ग आदमी है मैं उसके पास जाकर अपने गुमान की माफ़ी कराऊँ। मैं जल्दी जल्दी उसके पीछे चला, मगर वह मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया पता न चला। जब हम वाक़्सा पहुँचे तो दफ़्अतन उस पर नज़र पड़ी कि वह नमाज़ पढ़ रहा है और उसका बदन कांप रहा है और आंसू बह रहे हैं। मैंने उसको पहचान लिया और उसकी तरफ़ बढ़ा ताकि अपने उस गुमान की माफ़ी कराऊँ। मगर मैं ने उसकी नमाज़ से फ़राग़त का इंतिज़ार किया और जब वह सलाम फेर कर बैठा तो मैं उसकी तरफ़ बढ़ा। जब उसने मुझको अपनी तरफ़ बढ़ते हुए देखा तो कहने लगा, ऐ शक़ीक़ पढ़ो) :-

وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى (طٰهٰ ع ٤)

"और बिला शुबह मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ, ऐसे लोगों का जो तौबा कर लें और ईमान ले आयें और फिर सीधे रास्ते पर क़ायम रहें।"

यह आयत पढ़ कर वह फिर चल दिया। मैंने कहा कि यह शख़्स तो अब्दाल में से मालूम होता है। दो मर्तबा मेरे दिल की बात पर मुतनब्बेह कर चुका। फिर जब हम ज़ियाला में पहुँचे तो दफ़्अतन मेरी नज़र उस जवान पर पड़ी कि वह एक कुएं पर खड़ा है। एक बड़ा सा प्याला उसके हाथ में है और कुएं से पानी लेने का इरादा कर रहा था कि वह प्याला कुएं में गिर पड़ा। मैं उसकी तरफ़ देख रहा था, उसने आसमान की तरफ़ देखा और एक शेअ्र पढ़ा जिसका तर्जुमा यह

है कि "तू ही मेरा परवरिश करने वाला है, जब मैं प्यासा हूँ पानी से और तू ही मेरी रोज़ी (का ज़रिया) है, जब मैं खाने का इरादा करूँ," इसके बाद उसने कहा, ऐ मेरे अल्लाह, तुझे मालूम है ऐ मेरे माबूद, मेरे आक़ा, कि इस प्याले के सिवा मेरे पास कुछ नहीं है, पस इस प्याले से मुझे महरूम न फ़रमाईये।

शक़ीक़ रह० कहते हैं कि खुदा की क़सम, मैंने देखा कि कुएं का पानी ऊपर को आ गया। उसने हाथ बढ़ाया और प्याला पानी से भर कर निकाल लिया, अव्वल वुज़ू किया और चार रक्अत नमाज़ पढ़ी। इसके बाद रेत इकट्ठा करके एक एक मुट्ठी भर कर उस प्याले में डालता जाता था और उसको हिला कर पी रहा था। मैं उसके क़रीब गया और सलाम किया। उसने सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा अल्लाह ने जो नेअ्मत तुम्हें अता की है, उसमें से कुछ अपना बचा हुआ मुझे भी खिला दीजिये। कहने लगा कि शक़ीक़ अल्लाह जल्ल शानुहू की ज़ाहिरी और बातिनी नेअ्मतें हम पर रही हैं। अपने रब के साथ नेक गुमान रखो। यह कह कर वह प्याला मुझे दे दिया। मैंने जो उसको पिया तो खुदा की क़सम! उसमें सत्तू और शकर घुली हुई थी। उससे ज़्यादा खुश ज़ायक़ा और उससे ज़्यादा खुश्बूदार चीज़ मैंने कभी नहीं खायी थी। मैंने खूब पेट भर पिया, जिसकी बरकत से कई दिन तक न तो मुझे भूख लगी, न प्यास लगी। इसके बाद मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने तक मैंने उसको नहीं देखा। जब हमारा क़ाफ़िला मक्का मुकर्रमा पहुँच गया तो मैंने क़ुब्बतुश शराब के क़रीब एक मर्तबा आधी रात के क़रीब नमाज़ पढ़ते देखा। बड़े खुशूअ् से नमाज़ पढ़ रहा था और खूब रो रहा था। सुबह तक इसी तरह नमाज़ पढ़ता रहा। जब सुबह सादिक़ हो गई तो वह उसकी जगह बैठा तस्बीह पढ़ता रहा उसके बाद सुबह की नमाज़ पढ़ी और फिर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया, फिर वह बाहर जाने लगा तो मैं उसके पीछे लग गया। बाहर जाकर देखा, तो रास्ते में जिस हालत पर देखा था, उसके बिल्कुल ख़िलाफ़ बड़े हशम व ख़दम गुलाम उसके मौजूद हैं, चारों तरफ़ से उसको घेर रखा है। सलाम करके हाज़िर हो रहे हैं। मैंने एक शख़्स से जो मेरे क़रीब था, दर्याफ़्त किया कि यह बुज़ुर्ग कौन है? उसने बताया कि यह हज़रत मूसा बिन जाफ़र रह० यानी हज़रत जाफ़रे सादिक़ रह० के साहिब ज़ादे हैं। मुझे ताज्जुब हुआ और मैंने ख़्याल किया कि ये अजाइब वाक़ई ऐसे ही सैय्यद के होने चाहियें। *(रौज़)*

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह.० ने तहज़ीब में लिखा है कि हज़रत मूसा काज़िम के मनाक़िब बहुत हैं। इन हज़रात का तो पूछना ही क्या है कि यह उस ख़ानदान

के चांद सूरज और सितारे हैं। हक़ तआला शानुहू ने इस ख़ानदान ही में वह ख़ुसूसी जौहर और अख़्लाक़ का कमाल रखा है, जहां तक हम जैसों की परवाज़ भी नहीं है सय्यिदों के ख़ानदान का मामूली से ममूली आदमी भी कोई अजीब आदत अपने अंदर रखता है–

"ईं ख़ाना हमा आफ़्ताब अस्त"

21. हज़रत अबू सईद ख़ज़्ज़ाज़ रह० फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिदे हराम में गया तो मैंने एक फ़क़ीर को देखा कि उस पर दो फटे हुए कपड़े हैं और लोगों से सवाल कर रहा है। मैंने अपने दिल में सोचा कि ऐसे ही लोग आदमियों पर बोझ होते हैं, उसने मेरी तरफ़ देखा और यह आयत पढ़ी :-

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ (بقره ع ٣٠)

"इसका यक़ीन रखो कि अल्लाह जल्ल शानुहू जानता है उस चीज़ को जो तुम्हारे दिलों में है, पस उससे डरते रहो"। *(बक़र:, रूकूअ 30)*

अबू सईद कहते हैं कि मैंने अपने दिल में अपनी बद गुमानी से तौबा की तो उसने मुझे आवाज़ दी और यह आयत पढ़ी:-

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ (شورى ع ١٣)

"और वह ऐसी पाक ज़ात है, जो अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है और तमाम गुनाहों को माफ़ कर देता है। *(रौज़)*

22. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं एक क़ाफ़िले के साथ जा रहा था, रास्ते में मैंने एक औरत को देखा कि क़ाफ़िले से आगे आगे जा रही है मैंने ख़्याल किया कि यह ज़ईफ़ा इसलिये क़ाफ़िले से आगे चल रही है कि कहीं क़ाफ़िले का साथ न छूट जाये। मेरे साथ चंद दिरम थे, वह मैं जेब से निकाल कर उसको देने लगा और उससे मैंने कहा कि जब क़ाफ़िला मंज़िल पर ठहरे तो मुझे तलाश कर के मिल लेना। मैं क़ाफ़िला वालों से कुछ चंदा करके तुम्हें दे दूँगा। उससे सवारी किराये पर कर लेना, उसने अपना हाथ ऊपर को किया और मुट्ठी में कोई चीज़ ली, तो वे दिरम थे, वे उसने मुझे दे दिये और यह कहा कि तूने जेब से लिये हमने ग़ैब से लिये। इसके बाद मैंने एक औरत को देखा कि वह ख़ाना-ए-काबा का पर्दा पकड़े हुए चंद अश्आर पढ़ रही है, जिनका तर्जुमा यह है :-

"ऐ दिलों के महबूब, मेरे लिये तेरे सिवा कोई नहीं, आज तू रहम कर

दे, उस पर जो तेरी ज़ियारत को हाज़िर हुई, मेरा सब्र जाता रहा और तेरा इश्तियाक़ बहुत बढ़ गया और दिल को इससे इंकार है कि वह तेरे सिवा किसी से भी मुहब्बत करे तू ही मेरा सवाल है, तू ही मेरा मत्लूब है, तू ही मेरी मुराद है। काश मुझे यह मालूम हो जाता कि तेरी मुलाक़ात कब हो सकेगी, मुझे जन्नत से उसकी नेअ्मतें मक़्सूद नहीं! मुझे जन्नत इस लिये मत्लूब है कि उसमें तेरा दीदार होगा। *(रौज़)*

23. अबू अब्दुर्रहमान ख़फ़ीफ़ रह० कहते हैं कि मैं हज के इरादे से चलता हुआ बग़दाद पहुँचा और मेरे दिमाग़ में सूफ़ियाना घमंड था यानी अक़ीदत की पुख़्तगी, मुजाहदे की शिद्दत और अल्लाह के मासिवा को पसे पुश्त डाल देना, मैंने चालीस दिन तक कुछ नहीं खाया न पिया और हज़रत जुनैद बग़दादी रह० की ख़िदमत में भी हाज़िर न हुआ और मैं हर वक़्त बा वुज़ू रहता। इसी हालत में बग़दाद से भी चल दिया। मैंने जंगल में एक कुएं पर एक हिरनी को पानी पीते हुए देखा, मुझे भी प्यास शिद्दत की लग रही थी। जब मैं कुएं के क़रीब पहुँचा तो वह हिरनी मुझे देख कर चली गयी और कुएं का पानी जो मन तक आ रहा था और हिरनी उससे पी रही थी, वह भी कुएं के अंदर नीचे उतर गया मैं आगे चल दिया और मैंने अर्ज़ किया, ऐ मेरे सरदार, मेरी क़द्र तेरे यहां इस हिरनी के बराबर भी नहीं, तो मैंने अपने पीछे से एक आवाज़ सुनी, वह यह थी कि हमने तेरा इम्तिहान किया था, तूने सब्र न किया (शिकवा शुरू कर दिया) जा कुएं पर लौट जा पानी पी ले। हिरनी बग़ैर प्याला और रस्सी के आयी थी, तेरे पास प्याला भी था और रस्सी भी थी। मैं जब कुएं पर लौटा तो वह लबरेज़ था। मैंने अपना प्याला भर लिया, उसी में से मैं पानी भी पीता रहा और वुज़ू भी करता रहा, मगर वह पानी ख़त्म न हुआ, यहां तक कि मैं मदीना तैयबा पहुँच गया, इसके बाद हज से फ़ारिग़ होकर जब मैं बग़दाद पहुँचा और जामए बग़दाद में गया तो हज़रत जुनैद रह० की नज़र मुझ पर पड़ी, फ़रमाने लगे कि अगर तू सब्र करता तो पानी तेरे क़दमों के नीचे से उबलने लगता।

24. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि वह जंगल में जा रहे थे, उनको एक फ़क़ीर मिले जो नंगे पाव नंगे सर जा रहे थे, दो पुराने कपड़े उनके पास थे, एक को लुंगी बांध रखी थी और एक चादर की जगह ओढ़ रखा था, न उनके साथ कोई खाने की चीज़ थी, न प्याला, मैंने अपने दिल में कहा कि अगर इनके पास पानी का बर्तन और रस्सी ही होती तो अच्छा था। जब पानी की ज़रूरत होती तो

पानी खींच कर वुज़ू वग़ैरह कर लेते। मैं उनके साथ ही लग लिया, गर्मी बड़ी सख़्त पड़ रही थी मैंने उस फ़क़ीर से कहा कि जवान, अगर यह चादर जो कांधे पर ओढ़ रहे हो, सर पर डाल लो तो अच्छा है, धूप से बचाव हो जायेगा, उसने कुछ जवाब न दिया, ख़ामोश चलता रहा। थोड़ी देर बाद मैंने उनसे कहा कि तुम नंगे पांव चल रहे हो, अगर राय हो तो मेरा जूता पहन लो। थोड़ी देर में नंगे पावं चल लूँ, थोड़ी देर तुम नंगे पावं चल लो। वह कहने लगे, तुम तो बड़े फ़ुज़ूल गो आदमी हो, तुमने हदीस नहीं पढ़ी? मैंने कहा पढ़ी है। कहने लगे तुमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नहीं पढ़ाः-

مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَالَا يَعْنِيْهِ

"आदमी के इस्लाम की खूबी में से बेकार बात का छोड़ देना है"

यह कह कर वह चुप हो गया और हम चलते रहे। इतने में मुझे प्यास लगी और हम समुन्दर के किनारे पर चल रहे थे। वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा कि तुम्हें प्यास लग रही है। मैंने कहा नहीं।

उसके बाद हम आगे चलते रहे, मगर मुझे प्यास की इतनी शिद्दत हुई कि दम घुटने लगा। वह फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा कि प्यास लग रही है? मैंने कहा हां, प्यास तो लग रही है मगर तुम ही इस वक़्त क्या कर सकते हो? उसने मेरे हाथ से प्याला लिया और समुन्दर में घुस गया और पानी भर कर मुझे लाकर दिया कि लो पी लो। मैंने जो उसको पिया तो दरिया-ए-नील के पानी से ज़्यादा मीठा और ज़्यादा साफ़ था और उसमें कुछ घास सा भी था। मैंने अपने दिल में कहा कि यह तो कोई बड़े वलियुल्लाह हैं अब तो मैं कुछ नहीं कहता, जब मंज़िल पर पहुँचूंगा तो इनसे दरख़्वास्त करूँगा कि मुझे भी अपने साथ रखें। वह वहीं खड़ा हो गया और कहने लगा कि तुम्हें कौन सी सूरत पसंद है? या तो तुम आगे आगे चलो या मैं चलूँ? मैंने अपने दिल में ख़्याल किया कि अगर यह आगे चल दिया तो ऐसा न हो कि मैं साथ न लग सकूँ और यह मुझसे फ़ौत हो जाये, इसलिये मैं आगे बढ़ जाऊं और चलते चलते किसी जगह बैठ जाऊंगा जब यह वहां पहुँचेगा तो मैं इससे दरख़्वास्त करूँगा कि मुझे अपना रफ़ीक़े सफ़र बना लें, मुझे यह ख़्याल आया ही था कि वह कहने लगा अबू बक्र, या तो तुम आगे बढ़ जाओ मैं यहां बैठ जाता हूँ या तुम बैठ जाओ मैं जाता हूँ। मेरा तुम्हारा साथ नहीं हो सकता। यह कह कर वह जा, वह जा।

मैं एक मंज़िल पर पहुँचा, वहां मेरा एक दोस्त था। उन लोगों के यहां एक शख़्स बीमार पड़ा था। मैंने अपना प्याला उनको दिया कि इसमें से ज़रा सा पानी उस बीमार पर छिड़क दो। उन्होंने छिड़का वह अल्लाह के फ़ज़्ल से उसी वक़्त अच्छा हो गया। इसके बाद मैंने उन लोगों से उस फ़क़ीर के मुताल्लिक़ दर्याफ़्त किया, किसी को भी उसका हाल मालूम न था, सब ने कह दिया कि हमने तो उसको नहीं देखा। *(रौज़)*

25. शैख़ फ़त्ह मूसली रह० कहते हैं कि मैंने जंगल में एक नाबालिग़ लड़का देखा कि वह पैदल चल रहा है और उसके होंठ हरकत कर रहे हैं। मैंने उसको सलाम किया। उसने सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा साहिबज़ादे, कहां जा रहे हो? कहने लगा कि बैतुल्लाह शरीफ़ जा रहा हूँ। मैंने पूछा कि तुम्हारे होंठ हरकत कर रहे थे? कहने लगा कि क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था। मैंने कहा अभी तो तुम मुकल्लफ़ भी नहीं बने। कहने लगा कि मैं देखता हूँ कि मौत मुझ से कम उम्र वालों को भी पकड़ लेती है मैंने कहा, तुम्हारे क़दम छोटे हैं और रास्ता बहुत दूर है। कहने लगा कि मेरा काम क़दम उठाना है और अल्लाह जल्ल शानुहू का काम मक़्सूद पर पहुँचाना है। मैंने कहा, कोई तोशा, कोई सवारी? कहने लगा कि मेरा तोशा यक़ीन है और मेरी सवारी पांव है। मैंने कहा कि मैं तो रोटी और पानी पूछता हूँ। कहने लगा चचा जान, अगर कोई आदमी तुम्हें बुलाये तो तुम्हें यह ज़ेबा है कि उसके घर खाने के वास्ते अपना खाना ले जाओ? मैंने कहा नहीं, कहने लगा कि मेरे आक़ा ने अपने बंदों को अपने घर बुलाया है और ज़ियारत की इजाज़त दी है। उन लोगों के ज़ोअ्फ़े यक़ीन ने उनको मजबूर कर रखा है कि अपने तोशे साथ लिये जा रहे हैं। मुझे तो यह बात बहुत ना पसंद हुई और मैंने उसके एहतिराम का लिहाज़ किया। ऐसी हालत में तुम्हारा ख़्याल है कि वह मुझे ज़ाया कर देगा। मैंने कहा, हरगिज़ नहीं। हाशा व कल्ला। इसके बाद वह बच्चा मुझ से ग़ायब हो गया मैंने फिर उसको मक्का मुकर्रमा में देखा, जब उसकी निगाह मुझ पर पड़ी तो कहने लगा कि या शैख़, तुम अब तक भी अपने उसी ज़ोअ्फ़े यक़ीन पर हो। इसके बाद उस बच्चे ने चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है।

सारे जहानों का मालिक, मेरी रोज़ी का ज़िम्मेदार है, फिर मैं क्यों मख़्लूक़ को अपनी रोज़ी की तक्लीफ़ दूँ। मेरे मालिक ने जो कुछ मेरा नफ़ा और नुक़्सान है, मेरे पैदा होने से पहले मेरे मुक़द्दर में लिख दिया है, वह मेरी फ़राख़ी की हालत में बड़ी बख़्शिश वाला, अता करने वाला है और मेरी तंगदस्ती में मेरी नेक नीयती

मेरी साथी है, जैसा कि मेरा आजिज़ और बेवकूफ़ होना मेरी रोज़ी को नहीं हटा सकता, ऐसे ही मेरी ज़हानत मेरी रोज़ी को नहीं खींच सकती। (रौज़)

26. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं हिजाज़ के जंगल में कई दिन तक इस हालत में रहा कि कुछ न खाया, एक दिन मेरा दिल रोटी और गरम गरम बाक़िल्ला (अरब का मशहूर सालन लोबिये की क़िस्म का होता है) को चाहा। मैंने सोचा कि मैं जंगल बयाबान में हूँ और यहां से इराक़ तक की मुसाफ़त बहुत दूर है यहां गरम गरम बाक़िल्ला कहां? मैं इसी सोच में था कि एक बद्दू आवाज़ लगाता मिला, ले लो रोटी गरम बाक़िल्ला। मैं उसकी तरफ़ बढ़ा। मैंने पूछा गरम है? कहने लगा, हां है और अपनी लुंगी बिछायी, उस पर रोटी और गरम गरम बाक़िल्ला रखा और कहा कि लो खाओ। मैंने खाया, कहने लगा और खाओ, मैनें और खाया, फिर तीसरी मर्तबा उसने तक़ाज़ा किया, मैंने और भी खा लिया फिर चौथी मर्तबा उसने जब तक़ाज़ा किया तो मैंने उससे पूछा कि उस ज़ात के हक़ की क़सम। जिसने तुझे मेरे लिये इस जंगल बयाबान में भेजा है मुझे यह बता कि तू कौन है ? कहने लगे कि मैं ख़ाज़िर हूँ। यह कह कर वह ग़ायब हो गये। (रौज़)

27. हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० कहते हैं कि मुझे मक्का मुकर्रमा के रास्ते में एक अपाहिज मिला, जो घिसट कर चल रहा था। मैंने पूछा कि तुम कहां से आये हो? कहने लगा कि समरक़ंद से। मैंने पूछा कि वहां से चले हुए कितना अर्सा गुज़रा? कहने लगा, दस वर्ष से ज़्यादा हो गये। मैं बड़े ताज्जुब और हैरत से उसको देखने लगा, वह कहने लगा, शक़ीक़ क्या देख रहे हो? मैंने कहा कि तुम्हारे ज़ोअ्फ़ और सफ़र की दराज़ी से ताज्जुब में पड़ गया। कहने लगा कि शक़ीक़, सफ़र की दूरी को मेरा शौक़ क़रीब कर देगा और मेरे ज़ोअ्फ़ का मुतहम्मिल मेरा मौला है। ऐ शक़ीक़ तुम एक ज़ईफ़ बंदे से ताज्जुब कर रहे हो, जिसको उसका मालिक उठाये लिये जा रहा है। फिर उसने दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

"मेरे आक़ा, मैं आपकी ज़ियारत को जा रहा हूँ और इश्क़ की मंज़िल कठिन है, लेकिन शौक़ उस शख़्स की मदद किया करता है, जिसकी माल मदद नहीं करता, जिसको रास्ते की हलाकत का ख़ौफ़ हो जाये, वह आशिक़ नहीं है, हरगिज़ नहीं है और न वह आशिक़ है, जिसको रास्ते की सख़्ती इरादे से रोक दे। (रौज़)

"राह याबम या न याबम आरज़ूए मी कुनम,
हासिल आयद या न आयद जुस्तुजूए मी कुनम॥

28. शैख़ नज्मुद्दीन अस्फ़हानी रह० मक्का मुकर्रमा में एक बुज़ुर्ग के जनाज़े में शरीक हुए। जब लोग उनको दफ़्न कर चुके तो तल्क़ीन करने वाले ने क़ब्र के पास बैठकर तल्क़ीन की। शैख़ नज्मुद्दीन रह० हंसने लगे और उनकी आदत हंसने की बिल्कुल नहीं थी। बाज़ ख़ुद्दाम ने हंसी की वजह पूछी तो शैख़ ने झिड़क दिया। कई दिन बाद फ़रमाया कि मैं इसलिये हंसा था कि जब तल्क़ीन करने वाला क़ब्र पर तल्क़ीन के लिये बैठा तो मैंने उन बुज़ुर्ग को, जो दफ़्न किये गये थे यह कहते हुए सुना, देखो जी, हैरत की बात है कि एक मुर्दा ज़िंदा को तल्क़ीन कर रहा है। *(रौज़)*

अरब में बाज़ अइम्मा के मज़हब के मुवाफ़िक़ यह दस्तूर है कि जब मय्यित को दफ़्न कर देते हैं तो एक शख़्स उसकी क़ब्र के पास बैठकर कलिमा-ए-तैयिबा वग़ैरह पढ़ता है और मुन्किर नकीर के सवाल जवाब दोहराता है, उसको तल्क़ीन कहते हैं। इन बुज़ुर्ग का यह इर्शाद कि मुर्दा ज़िंदा को तल्क़ीन कर रहा है, ज़ाहिर है कि मरने वाला अल्लाह के इश्क़ की वजह से ज़िंदा है और जो तल्क़ीन कर रहा था, वह इस दौलत से ख़ाली होगा।

29. शैख़ मुज़्नी रह० फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में मुक़ीम था। मुझ पर एक घबराहट बहुत शिद्दत से सवार हुई। और मैं मदीना पाक की हाज़िरी के इरादे से मक्का मुकर्रमा से चल दिया। जब बीरे मैमूना पहुँचा तो एक नौजवान को पड़ा हुआ पाया कि उसकी नज़अ् की हालत है। मैंने उसके क़रीब पहुँच कर कहा कि ला इला-ह इल्लल्लाह पढ़ो। उसने फ़ौरन आंखें खोल दीं और एक शेअ्र पढ़ा जिसका तर्जुमा यह है कि अगर मैं मर जाऊँ तो मेरा दिल इश्क़े मौला से भरा हुआ है और करीम लोग इश्क़ की बीमारी में मरा करते हैं। यह कह कर वह मर गया। मैंने उसको ग़ुस्ल दिया, कफ़नाया, जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और जब उसको दफ़ना चुका तो वह घबराहट, जो मुझ पर सवार थी, जिसकी वजह से मैंनें सफ़र का बे इख़्तियार इरादा किया था, वह भी जाती रही, मैं उसको दफ़ना कर मक्का मुकर्रमा वापस आ गया। *(रौज़)*

30. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था, हमारे क़रीब एक नौजवान रहा करता था, उसके पास पुरानी चादरें थीं, वह न हमारे पास आता

जाता न कभी पास बैठता। मेरे दिल में उसकी मुहब्बत घर कर गयी। मेरे पास एक जगह से बहुत हलाल ज़रिये से दो सौ दिरम आये। मैं वे लेकर उस जवान के पास गया और मैंने उसके मुसल्ले पर उनको रख कर कहा कि बिल्कुल हलाल ज़रिये से मुझे मिले हैं, इनको तुम अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर लेना। उस जवान ने मुझे तिरछी और तेज़ तुर्श निगाह से देखा और यह कहा कि अल्लाह पाक के साथ यह हमनशीनी (पास बैठना) मैंने सत्तर हज़ार अशर्फ़ियां नक़द, जो मेरे पास थीं, अलावा जायदाद के और किराये के मकानात के इन सबसे अपने को फ़ारिग़ करके ख़रीदा है। तू इन दराहिम के साथ मुझे धोखे में डालना चाहता है। यह कह कर अपना मुसल्ला झाड़ कर खड़ा हो गया, जिस इस्तिग़ना से वह उठ कर जा रहा था और मैं बैठा उन दराहिम को चुन रहा था, उस वक़्त की, उसकी सी इज़्ज़त और अपनी सी ज़िल्लत मैंने उम्र भर किसी की नहीं देखी। *(रौज़)*

यानी उस वक़्त उसकी इज़्ज़त जितनी मेरी निगाह में थी, उतनी इज़्ज़त कभी किसी की नहीं हुई और जितनी उस वक़्त दिरम चुनते हुए मुझे अपनी ज़िल्लत महसूस हो रही थी, उतनी ज़िल्लत कभी अपनी या किसी और की मुझे महसूस नहीं हुई।

31. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं मदीना तैयिबा में हाज़िर था। रौज़ा-ए-मुक़द्दस पर मैं हाज़िर हुआ, तो मैंने एक अजमी शख़्स को देखा जो रौज़े पर अल विदाई सलाम कर रहा था। जब वह जाने लगा तो मैं भी उसके पीछे हो लिया। जब वह ज़ुल हुलैफ़ा पहुँचा तो नमाज़ पढ़ी और एहराम बांधा। मैंने भी नमाज़ पढ़ी और एहराम बांध लिया और जब वह चलने लगा तो उसके पीछे हो लिया। वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा, तुम्हारा क्या मक़्सद है? मैंने कहा, तुम्हारे साथ जाना चाहता हूँ। उसने इंकार कर दिया। मैंने ख़ुशामद और आजिज़ी की। उसने कहा, अगर यही करना है तो मेरे क़दम पर क़दम रखते चले आओ। मैनें कहा अच्छा वह ग़ैर मारूफ़ रास्ते पर चल दिया। और मैं क़दम ब क़दम उसके पीछे हो लिया। थोड़ी ही रात गुज़री थी कि चिराग़ नज़र आये। मुझे कहने लगा कि यह मस्जिदे आइशा रज़ि० है (जो मक्का मुकर्रमा से तीन मील तन्‌ईम पर है) या तो तुम आगे बढ़ जाओ या मैं आगे बढ़ जाऊँ। मैंने कहा कि जैसे तुम्हारी राय हो, वह आगे बढ़ गये और मैं वहां सो गया। जब सहरी का वक़्त हुआ, मैं मक्का मुकर्रमा पहुँचा और तवाफ़ और सई के बाद शैख़ अबू बक्र कत्तानी रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उनकी ख़िदमत में बहुत से मशाइख़ तशरीफ़ रखते

थे। वे फ़रमाने लगे, कब आये? मैंने अर्ज़ किया, अभी हाज़िर हुआ। फ़रमाया, किधर से आ रहे हो। मैंने अर्ज़ किया मदीना तैयिबा से। कहने लगे मदीना से कब चले थे, मैंने अर्ज़ किया गुज़िश्ता रात वहीं था। वे मशाइख़ जो हाज़िरे मज्लिस थे, एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

शैख़ कत्तानी रह० ने कहा कि किसके साथ आये हो, मैंने अर्ज़ किया कि एक बुज़ुर्ग के साथ आया हूँ जिनके ये हालात और यह क़िस्सा गुज़रा। शैख़ कत्तानी रह० ने कहा कि यह शैख़ अबू जअ्फ़र दामग़ानी रह० हैं और तुमने जो हालात सुनाये वे उनके अहवाल में से बहुत मामूली चीज़ हैं। इसके बाद शैख़ कत्तानी रह० ने अपने साथियों से कहा चलो, शैख़ दामग़ानी की तलाश करें, कहां हैं और मुझसे फ़रमाया कि तुम्हारा यह हाल नहीं था कि एक शब में यहां पहुँच जाओ। (इसलिये मैंने तफ़्सील पूछी) फिर दर्याफ़्त फ़रमाया कि चलते हुए ज़मीन कैसी मालूम हो रही थी? मैंने अर्ज़ किया, जैसे दरिया की मौज कश्ती के नीचे मालूम होती है। *(रौज़)*

32. हज़रत सुफ़ियान बिन इब्राहीम रह० कहते हैं कि मैंने एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में मौलदुन्नबी के पास इब्राहीम बिन अदहम रह० को बहुत रोते हुए देखा। वह मुझे देख कर रास्ते से परे हट गये। मैंने उनको सलाम किया और वहां नमाज़ पढ़ी। फिर उनसे पूछा कि क्या बात हुई, क्यों रो रहे हो? वह कहने लगे, ख़ैरियत है, कुछ नहीं, मैंने दोबारा सेहबारा यही सवाल किया वह यही जवाब देते रहे। मैंने बार बार सवाल किया तो वह कहने लगे कि अगर मैं वजह बता दूँ तो तुम उसको पोशीदा रखोगे या लोगों पर ज़ाहिर कर दोगे? मैं ने कहा तुम शौक़ से कहो (यानी मैं मख़्फ़ी रखूँगा) कहने लगे कि तीस बरस से मेरा दिल सकबाज (एक क़िस्म का खाना, जिसमें सिरका और गोश्त और मेवाजात पड़ते हैं) खाने को चाहता था और मैं मुजाहदे के तौर पर उसको रोकता था, रात मुझ पर नींद का बहुत ग़लबा हुआ। मैंने ख़्वाब में एक जवान को देखा कि वह निहायत हसीन शख़्स है और उसके हाथ में एक सब्ज़ प्याला है, जिससे भाप उठ रही है और सकबाज की ख़ुश्बू उसमें से आ रही हैं मैंने अपने दिल को संभाला, उसने मेरे पास आकर कहा, इब्राहीम लो, इसको खा लो। मैंने कहा, जिस चीज़ को अल्लाह के वास्ते छोड़ दिया, उसको अब नहीं खाना है। वह कहने लगा, अगरचे अल्लाह जल्ल शानुहू ख़ुद खिलायें? मुझसे रोने के सिवा इसका कोई जवाब न बन पड़ा। वह कहने लगा अल्लाह तुझ पर रहम करे, इसको खाले। मैंने कहा, हमें यह हुक्म

है कि जब तक हमें पूरा हाल किसी चीज़ का मालूम न हो जाये (क्या चीज़ है, कहां से आयी है?) उस वक़्त तक अपने बरतन में न डालें, वह कहने लगे, अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे, इसको खा लो, यह मुझे (जन्नत के नाज़िम) रिज़वान ने दी है और यह कहा है कि ऐ ख़ाज़िर, यह इब्राहीम को खिला दो, उसने बहुत सब्र कर लिया और ख़्वाहिशात को बहुत रोक लिया। फिर उन्होंने कहा कि इब्राहीम, अल्लाह जल्ल शानुहू खिलाते हैं। और तुम इंकार करते हो। मैंने फ़रिश्तों से सुना है कि जो शख़्स बे तलब मिलने पर इंकार करता है, उसको तलब पर भी नहीं मिलता। मैंने कहा, अगर यह बात है तो मैं आपके सामने हाज़िर हूं। मैंने तो अपने अहद को अब तक नहीं तोड़ा। इतने में एक जवान और आया और उसने हज़रत ख़ाज़िर को कुछ देकर यह कहा कि इसका लुक़्मा बना कर इब्राहीम के मुंह में दे दो। वह मुझे अपने हाथ से खिलाते रहे और जब मेरी आंख खुली तो उसकी शीरीनी मेरे मुंह में थी और जाफ़रान का रंग मेरे होठों पर था, मैं ज़म ज़म के कुएं पर गया और मुंह को धोया, मगर न मुंह में से मज़ा जाता है, न होठों पर से रंग जाता है मैंने भी देखा तो वाक़ई उसका असर मौजूद था। मैंने अल्लाह जल्ल शानुहू से यह दुआ की, ऐ वह पाक ज़ात, जो ऐसे लोगों को खिलाती है, जो अपनी ख़्वाहिशात को रोकते हों, जबकि वे अपनी रोक को सही कर लें। ऐ वह पाक ज़ात जिसने अपने औलिया के दिलों के लिये सही रहना लाज़िम कर दिया, ऐ वह पाक ज़ात जिसने उनके दिलों को अपनी मुहब्बत की शराब से सैराब किया, तू अपने लुत्फ़ से सुफ़ियान को भी ये चीज़ें अता फ़रमा। फिर मैंने इब्राहीम बिन अदहम रह० का हाथ पकड़ कर उसको आसमान की तरफ़ उठाया और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह, इस हाथ की बरकत से और इस हाथ वाले की बरकत से और इसके उस मर्तबे के तुफ़ैल जो उसका तेरे नज़दीक है और तेरे इस जूद व अता के तुफ़ैल से जो उसने तुझ से पाया, तू अपने इस बंदे सुफ़ियान पर भी बख़्शिश फ़रमा, जो तेरी अता का इंतिहाई मुहताज है और तेरे एहसान का निहायत ज़रूरतमंद है या अर्हमर्राहिमीन, महज़ अपनी रहमत से, अगरचे ऐ रब्बुल आलमीन, यह सुफ़ियान इसका मुस्तहिक़ बिल्कुल नहीं है। *(रौज़)*

33. हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० ही का यह क़िस्सा है कि जब यह हज को तशरीफ़ ले गये, तो यह तवाफ़ कर रहे थे कि इनकी निगाह एक हसीन नौ जवान पर पड़ी, जिसके हुस्न व जमाल से लोग ताज्जुब कर रहे थे। हज़रत इब्राहीम रह० ने उसको बहुत ग़ौर से देखा और रोने लगे, उनके बाज़ साथी

(बदगुमानी से) कहने लगे:-

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ○

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन॰"

शैख़ पर तो ग़फ़लत तारी हो गयी (कि एक हसीन लड़के को देख कर घूरने लगे) फिर उस मोतरिज़ ने शैख़ से अर्ज़ किया, ऐ मेरे सरदार, यह देखना कैसा, जिसके साथ रोना भी है (जिससे यह ख़्याल होता है कि इस लड़के के इश्क़ ने पकड़ लिया) शैख़ ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह से एक अहद किया है, जिसके तोड़ने पर क़ुदरत नहीं, वरना इस लड़के को अपने पास बुलाता और इससे मिलता, इसलिये कि यह मेरा बेटा है और मेरी आंख की ठंडक है। मैं इसको बचपन में बहुत कम उम्र का छोड़कर घर से निकल गया था, अब यह जवान हो गया तुम देख ही रहे हो, मगर मुझे अल्लाह से शर्म आती है कि जिस चीज़ को उसके लिये छोड़ आया था, अब फिर उधर लौटूं।

इसके बाद हज़रत शैख़ इब्राहीम रह॰ ने तीन शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि जबसे मैंने उस पाक ज़ात को पहचाना है, उस वक़्त से अब तक जिधर भी मैंने नज़र की, अपने महबूब को उधर ही पाया। मुझे अपनी निगाह पर यह ग़ैरत है कि मैं उसके सिवा किसी को न देखूं। ऐ मेरे ज़ख़ीरे की इंतिहा। ऐ मेरे सवाल की ग़ायत, ऐ मेरे असासे की पूंजी, काश तेरी मुहब्बत हश्र तक मेरे दिल में रहे। फिर शैख़ ने मुझसे फ़रमाया कि तुम उस लड़के के पास जाओ और उसको सलाम करो, शायद इसी से मुझे तसल्ली हो। मैं उस लड़के के पास गया और मैंने उससे कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हारे वालिद को बरकत अता फ़रमाये। वह कहने लगा, चचा जान मेरे वालिद कहां? वह तो मेरे बचपन ही में अल्लाह के रास्ते में लग गये थे। काश मैं एक मर्तबा उनकी ज़ियारत कर लूं और फिर उसी वक़्त मेरी जान निकल जाये। हाय! अफ़सोस, यह कह कर वह रोने लगा और रोने की कसरत से उसका दम घुटने लगा। फिर उसने कहा कि वल्लाह, मेरी यह तमन्ना है कि मैं एक मर्तबा उनकी ज़ियारत कर लूं, फिर उसी वक़्त मर जाऊं। इसके बाद चंद शेअ्र ज़ौक़ व शौक़ के पढ़े। मैं हज़रत इब्राहीम के पास लौट कर आया, तो वह सज्दे में पड़े हुए थे और आंसुओं से सज्दे की जगह तर थी और अल्लाह के सामने आजिज़ी कर रहे थे। इसके बाद हज़रत इब्राहीम रह॰ ने दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि मैंने सारी दुनिया को तेरे इश्क़ में छोड़ा और अपने अयाल को यतीम बनाया ताकि तुझे देख लूं। अगर तू इश्क़ में मेरी हाजत रवाई न करेगा तो

यह दिल तेरे सिवा किसी जगह भी सुकून नहीं पायेगा। मैंने हज़रत इब्राहीम रह॰ से कहा, आप उस लड़के के लिये दुआ करें। हज़रत इब्राहीम रह॰ ने कहा कि हक़ तआला शानुहू उसको गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमाये और अपनी मरज़ियात पर अमल में उसकी इआनत फ़रमाये। (रौज़)

34. अबू बक्र दक़्क़ाक रह॰ कहते हैं कि मैंने बीस साल मक्का मुकर्रमा में क़ियाम किया। मेरा जी दूध को चाहता ही रहा (मगर जानबूझ कर नहीं पिया या मयस्सर न हुआ) जब मुझे ख़्वाहिश बहुत बढ़ी तो मैं अस्क़लान गया और वहां अरब के एक क़बीले का मेहमान बना। वहां मेरी निगाह एक हसीन लड़की पर पड़ गयी। इस क़दर हसीन थी कि उसने मेरे दिल को पकड़ लिया। वह लड़की मुझसे कहने लगी कि अगर तू सच्चा होता तो दूध की ख़्वाहिश तेरे दिल से निकल जाती। मैं यह सुन कर मक्का मुकर्रमा लौट आया और बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। मैंने ख़्वाब में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ियारत की। मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी, अल्लाह जल्ल शानुहू आपकी आंख को ठंडा रखे। आप ज़ुलैख़ा से ख़ूब बचे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, बल्कि ऐ मुबारक, अल्लाह जल्ल शानुहू तेरी आंख को ठंडा रखे, अस्क़लान की लड़की से बच गये, फिर हज़रत यूसुफ़ अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह आयत तिलावत फ़रमायी :-

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتَانِ ۝

"और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहे, उसके लिये दो जन्नतें हैं।"

एक बुज़ुर्ग का इर्शाद है कि आदमी नफ़्स के फंदे से नफ़्स के ज़रिये से नहीं निकल सकता, अलबत्ता नफ़्स के फंदे से अल्लाह तआला के ज़रिये से निकल सकता है। इन बुज़ुर्ग का यह भी इर्शाद है कि अल्लाह के साथ राहत पकड़ो। अल्लाह तआला से राहत न पकड़ो, जिस शख़्स ने अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ राहत पकड़ी, उसने निजात पाई और जिसने अल्लाह से अलाहिदा होकर राहत पकड़ी वह हलाक हो गया। अल्लाह के साथ राहत पकड़ना दिल का उसके ज़िक्र के साथ मुअत्तर होना और बस जाना है और अल्लाह से राहत पकड़ना दिल का ग़ाफ़िल रहना है। (रौज़)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब आदमी

की नज़र किसी औरत के हुस्न पर पड़ जाये और वह फ़ौरन अपनी नज़र को उससे हटा ले तो हक़ तआला शानुहू उसको किसी ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाते हैं, जिसकी लज़्ज़त उसको महसूस होती है। *(मिश्कात)*

35. हज़रत शैख़ अबू तुराब बख़्शी रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी ऐसे शख़्स को जो अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ मशग़ूल हो रहा है, किसी दूसरे शुग़ल में लगावे, उसी वक़्त हक़ तआला शहानुहू का ग़ुस्सा फ़ौरन उसकी पकड़ करता है, हक़ तआला शानुहू हमें अपने ग़ुस्से और अज़ाब से पनाह दे। *(रौज़)*

यह बहुत अहम चीज़ है। बहुत से लोग अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ की मशग़ूली की नाक़द्री करते हुए ऐसे हज़रात को जो ज़िक्र व शुग़ल में मशग़ूल होते हैं, आवाज़ें देने लगते हैं, इसका बहुत लिहाज़ रखना चाहिय, बिलख़ुसूस अह्लुल्लाह (अल्लाह वालों) के औक़ात की ख़ुसूसी रिआयत रखना चाहिये।

36. एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा नक़ल किया है कि उन्होंने तंहा हज किया, अज़ीज़ व अक़ारिब कोई साथ न था और यह अहद किया कि किसी से सवाल न करूंगा। चलते चलते रास्ते में एक ऐसा वक़्त आया कि एक ज़माने तक कहीं से कुछ न मिला, हत्ता कि ज़ोअ्फ़ की वजह से चलने से आजिज़ हो गये और दिल में यह ख़्याल आया कि अब इज़्तिरार का दर्जा पहुँच गया, अपने आपको हलाकत में डालने की अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुमानअत फ़रमायी है इसलिये अब मुझे सवाल कर लेना चाहिये। लेकिन फिर दिल में एक खटक पैदा हुई और आख़िर यह तै कर लिया कि अल्लाह तआला से जो अहद कर लिया, वह नहीं तोडूँगा, चाहे मर जाऊँ। चूंकि ज़ोअ्फ़ की वजह से चलने से आजिज़ हो गये थे, इसलिये रह गये और सारा क़ाफ़िला रवाना हो गया और यह मौत के इंतिज़ार में क़िबला रू हो कर एक जगह लेट गये। इतने में एक सवार उनके क़रीब आया, उसके पास एक बरतन में पानी था, वह उसने इनको पिलाया और जो हाजत थीं वह सब पूरी की। और फिर पूछा कि तुम क़ाफ़िला के साथ मिलना चाहते हो। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि क़ाफ़िला अब कहां, न मालूम कितनी दूर निकल चुका? उस सवार ने कहा कि खड़े हो और मेरे साथ चलो, यह चंद ही क़दम उसके साथ चले थे कि उसने कहा कि तुम यहां ठहर जाओ, क़ाफ़िला तुमसे आ मिलेगा। यह वहां ठहर गये तो क़ाफ़िला पीछे से आता हुआ उनको मिला। *(रौज़)*

37. अबुल हसन सिराज रह० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हज को गया,

मैं तवाफ़ कर रहा था। मेरी निगाह एक ऐसी हसीन औरत पर पड़ी, जिसके चेहरे का हुस्न चमक रहा था। मैंने कहा वल्लाह, ऐसी हसीन औरत मैंने आज तक नहीं देखी। यह उसके चेहरे की सारी रौनक़ इस वजह से है कि इसको कभी कोई रंज व ग़म नहीं पहुँचा। उसने मेरी यह बात सुन ली। कहने लगी, तुमने यह क्या कहा, वल्लाह, मैं ग़मों में जकड़ी हुई हूँ और मेरा दिल फ़िक्रों से और आफ़तों से ज़ख़्मी है और कोई भी मेरे ग़मों में मेरा शरीक नहीं रहा। मैंने पूछा क्या हुआ? कहने लगी कि मेरे ख़ाविंद ने क़ुर्बानी की एक बकरी ज़िब्ह की। मेरे दो छोटे छोटे बच्चे खेल रहे थे और एक बच्चा दूध पीता मेरी गोद में था। मैं गोश्त पकाने के लिये उठी तो उन दोनों लड़कों में से एक ने दूसरे से कहा कि मैं तुझे बताऊँ कि अब्बा ने बकरी किस तरह ज़िब्ह की। उसने कहा बता, तो उसने छोटे भाई को लिटा कर बकरी की तरह ज़िब्ह कर दिया। फिर वह उसको ज़िब्ह करके डर के मारे भाग गया और पहाड़ पर चढ़ गया वहां एक भेड़िये ने उसको खा लिया। बाप उसकी तालश में निकला और ढूंढते ढूंढते प्यास की शिद्दत से मर गया। मैं दूध पीते बच्चे को बिठा कर दरवाज़े तक गयी कि शायद ख़ाविंद का कुछ पता किसी से मिले तो वह बच्चा घसिटता हुआ हांडी के पास पहुँच गया जो चूल्हे पर रखी हुई जोश से पक रही थी। उस को जो उसने हिलाया, वह पकती पकती उस पर गिर गयी जिससे उस बच्चे का सारे बदन का गोश्त जल कर हड्डियों से अलग हो गया, मेरी एक बड़ी लड़की जो अपने ख़ाविंद के घर थी उसको जब इस सारे क़िस्से की ख़बर पहुँची, तो वह ख़बर सुनकर ज़मीन पर गिर गयी, इसी में उसकी भी मौत मुक़द्दर थी, वह भी मर गयी। मुक़द्दर ने उन सबके दर्मियान से मुझे अकेली को छोड़ दिया। मैंने कहा, इन सब मुसीबतों पर तुझे किस तरह सब्र आया। वह कहने लगी जो शख़्स सब्र और बेसब्री में अलग अलग ग़ौर करेगा, वह उनके दर्मियान बहुत बौने बओद पायेगा, सब्र का अंजाम महमूद है और बे सब्री पर कोई अज्र नहीं मिलता। फिर उसने तीन शेअ्र पढ़े और चल दी, जिनका तर्जुमा यह है कि मैंने सब्र किया, इसलिये कि सब्र बेहतरीन एतिमाद की चीज़ है और अगर बे सब्री से मुझे कोई फ़ायदा पहुँच सकता तो करती। मैंने ऐसी मुसीबतों पर सब्र किया कि अगर वे मसाइब सख़्त पहाड़ों पर पड़तीं तो वे पहाड़ भी टुकड़े टुकड़े हो जाते। मैंने अपने आंसुओं पर क़ुदरत पायी, पस उनको निकलने से रोक दिया, अब वे आंसू अंदर ही अंदर मेरे दिल पर गिर रहे हैं। *(रौज़)*

38. हज़रत शैख़ अली बिन मोवफ़्फ़क़ रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक साल

सवारी पर हज को जा रहा था। रास्ते में पैदल हज को जाने वालों का क़ाफ़िला मिला। मुझे वे लोग पैदल चलते हुए बहुत अच्छे लगे, मैं भी सवारी पर से उतर कर उनके साथ पैदल चलने लगा और अपनी सवारी पर एक और शख़्स को अपनी जगह बिठा दिया और हम मारूफ़ रास्ते से हट कर दूसरी तरफ़ को चल दिये। चलते चलते एक जगह जाकर हम सोने लेट गये तो मैंने ख़्वाब में देखा कि चंद लड़कियां आयीं, जिनके हाथ में सोने के तश्त और चांदी के आफ़ताब हैं। और वे पैदल चलने वालों के पांव धो रही हैं। और मेरे सिवा सबके पांव धोये। उनमें से एक ने कहा कि यह भी तो उन्हीं में है, बाक़ी सब कहने लगीं नहीं इसके पास सवारी मौजूद है। उस लड़की ने कहा, नहीं यह भी इनमें शामिल है, इसलिये कि इनके साथ चलने को इसने पसंद किया है, तो उन्होंने मेरे भी पांव धोए, इसकी वजह से पैदल चलने का जिस क़दर तकान और तअब मुझ पर था, सारा बिल्कुल जाता रहा। *(रौज़)*

39. हज़रत इब्राहीम ख़वास रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा जंगल में जा रहा था, मुझे बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ी और बड़ी मुसीबत पेश आयी, जिसको मैंने बर्दाश्त किया और खंदा पेशानी से उस पर सब्र किया। जब मैं मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुआ तो मुझमें इस कारनामे पर एक उज्ब सा पैदा हुआ। तवाफ़ ही की हालत में पीछे से एक बुढ़िया ने आवाज़ दी कि इब्राहीम, उस जंगल में यह बंदी भी तेरे ही साथी थी, मगर मैंने तुझसे इसलिये कोई बात नहीं की थी कि अल्लाह जल्ल शानुहू से तेरा ध्यान हट कर दूसरी तरफ़ लगेगा। यह वस्वसा जो तुझे इस वक़्त आ गया, इसको अपने दिल से निकाल दे। *(रौज़)*

40. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत समनून रह० को देखा कि तवाफ़ में झूमते हुए (मज़े लेकर) चल रहे हैं। मैंने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा, तुम्हें अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने खड़े होने की क़सम ! मुझे यह बताओ कि तुम किस तरीक़े से अल्लाह तक पहुँचे, जब उन्होंने अल्लाह के सामने खड़े होने का लफ़्ज़ सुना तो बेहोश होकर गिर पड़े।

जब होश आया तो दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि बहुत से मुसीबत ज़दा ऐसे हैं कि बीमारियां उनके बदन में घुसी हुई हैं और उनका दिल सब दिलों से ज़्यादा बीमार है। अगर वे ख़ौफ़ और हिरास से मर जाएं तो बर महल है, इसलिये कि यौमुल हिसाब में अल्लाह के सामने खड़ा होना बहुत सख़्त चीज़ है।

इसके बाद हज़रत समनून रह० ने फ़रमाया कि मैंने पांच बातें लाज़िम पकड़ ली थीं और अपने दिल पर उनको पक्का कर लिया है :-

1. अव्वल यह कि जो चीज़ मुझ में ज़िंदा थी यानी ख़्वाहिशे नफ़्स उसको मैंने मार दिया और जो चीज़ मुर्दा थी यानी मेरा दिल उसको ज़िंदा कर लिया।

2. दूसरी बात यह है कि जो चीज़ मुझ से ग़ायब थी, यानी आख़िरत उसको मैंने हर वक़्त अपनी आंखों के सामने कर लिया, और जो चीज़ मेरे सामने थी, यानी दुन्यवी अग़राज़, उनको मैंने अपने सामने से हटा दिया।

3. तीसरी बात यह है कि जो चीज़ मुझसे फ़ना हो रही थी, यानी तक़्वा उसको मैंने बाक़ी रखा, और जो मेरे पास जमा थी यानी ख़्वाहिशात, उनको फ़ना कर दिया।

4. चौथी चीज़ यह है कि जिससे तुम सबको वहशत होती है, उससे मैंने उंस पैदा कर लिया, और जिससे तुम सब को उंस है, उससे मैं भागने लगा, इसके बाद वह चंद शेअ्र पढ़ते हुए चल दिये, जिनका तर्जुमा यह है कि मेरी रूह पूरी की पूरी आपकी तरफ़ मुतवज्जह है। अगर इसमें वह हलाक हो जाये, तब भी मैं आपसे उसको जुदा नहीं कर सकता। मेरी रूह आपसे ख़ौफ़ में और अफ़सोस में रोती रहती है हत्ताकि कहा जाता है कि वह रोने से टुकड़े-टुकड़े हो जायेगी, पस एक करम की नज़र उस पर कर दीजिये, अगरचे दुनियावी मुनाफ़े आपने बहुत से अता फ़रमाये और उनसे हमेशा नफ़ा होता रहा। *(रौज़)*

शुरू में पांच बातें ज़िक्र की थीं, तफ़्सील में चार ही आयी हैं, लेकिन हक़ीक़त यह है कि इन सब की रूह भी एक ही चीज़ है, ख़्वाहिशाते नफ़्स को क़ाबू में रखना, इसीलिये शैख़ फ़रमाते हैं :-

बिअल्लिाहि अज़ दो क़दम राहे खुदा बेश नेस्त,
यक क़दम बर नफ़से खुद नह् दीगरे बर कूए दोस्त॥

"ख़ुदा की क़सम, अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां का रास्ता दो क़दम से ज़्यादा नहीं, पहला क़दम अपने नफ़्स पर रख दे, दूसरा महबूब की गली में रखा हुआ है।"

41. शैख़ अबू याक़ूब बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हरम

शरीफ़ में दस दिन तक भूखा रहा। मुझे बहुत ही ज़ोअ्फ़ हो गया। मेरे दिल ने मुझे मजबूर किया कि बाहर चलूँ, शायद कुछ मिल जाये, जिससे भूख में कुछ कमी हो। मैं बाहर निकला तो एक शलग़म सड़ा हुआ पड़ा हुआ मिला। मैंने उसको उठा लिया, मगर दिल में उससे एक वहशत सी हुई, गोया कोई यह कह रहा है कि दस दिन तक भूखा रहा और आख़िर में मिला तो यह सड़ा हुआ शलग़म, मैंने उसको फेंक दिया और फिर मस्जिदे हराम में आकर बैठ गया। इतने में एक शख़्स मेरे सामने आकर बैठा, एक जुज़दान मेरे सामने रखा और कहा, इसमें एक थैली है, जिसमें पांच सौ दीनार (अशर्फ़ियां) हैं। यह आप की नज़्र हैं। मैंने उससे पूछा कि मेरी क्या ख़ुसूसियत है, जिसकी वजह से ये मुझे दे रहे हो उसने कहा कि हम लोग दस दिन से समुन्दर में चक्कर खा रहे थे। हमारी कश्ती डूबने लगी थी, तो हममें से हर एक शख़्स ने अलग अलग कोई मन्नत मानी थी, मैंने यह नज़्र की थी कि अगर मैं ज़िंदा सलामत पहुँच जाऊँ तो यह थैली उस शख़्स को दूँगा, जिस पर मक्का में रहने वालों में सब से पहले मेरी निगाह पड़े। यहां पहुँच कर सबसे पहले आप पर नज़र पड़ी। मैंने कहा इसको खोलो, उसने खोला तो सफ़ेद मिस्री और एक कअ्क (एक ख़ास क़िस्म की रोटी होती है) और छिले हुए बादाम और शकर पारे थे मैंने हर एक में से एक एक मुट्ठी भर ली और मैंने कहा कि यह बाक़ी ले जाओ। मेरी तरफ़ से अपने बच्चों को तक़सीम कर देना। तुम्हारी नज़्र मैंने क़ुबुल कर ली, फिर मैंने अपने दिल में महा कि तेरा रिज़्क़ दस दिन से तेरे पास खिंचा हुआ आ रहा है और तू इसको यों ढूँढता फिरता है। *(रौज़)*

42. शैख़ बनान रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं मिस्र से हज को जा रहा था। मेरा तोशा मेरे साथ था, रास्ते में एक औरत मिली, कहने लगी, बनान, तुम भी हम्माल (मज़दूर) ही निकले, तोशा लादे लिये जा रहे हो, तुम्हें यह वहम है कि वह तुम्हें रोज़ी नहीं देगा। मैंने उसकी बात सुन कर अपना तोशा फेंक दिया। तीन दिन तक मुझे कुछ खाने को न मिला, रास्ते में चलते चलते मुझे एक पाज़ेब (पांव का ज़ेवर) पड़ा हुआ मिला। मैंने यह सोच कर उठा लिया कि इसका मालिक मिल जायेगा, तो उसको दूँगा। वह शायद इस पर मुझे कुछ दे दे, तो वह औरत फिर सामने आयी, कहने लगी, तुम तो दुकानदार ही निकले कि वह पाज़ेब के बदले में शायद कुछ दे दे। इसके बाद उस औरत ने मेरी तरफ़ कुछ दिरम फेंक दिये कि ले इन्हें ख़र्च करता रहियो। मैंने उनको ख़र्च करना शुरू किया और वापसी में मिस्र तक उन्होंने मुझे काम दिया, एक शायर ने कहा है :-

كم من قوى قوى فى تقلبه مهذب الرأى عنه الرزق منحرف

"कितने ही क़वी आदमी हैं जो अपने कारोबार में भी क़वी है और राय भी बहुत बेहतर रखते हैं, लेकिन रोज़ी उनसे हटी हुई है।"

وكم من ضعيف ضعيف فى تقلبه كأنه من خليج البحر يغترف

"और कितने ज़ईफ़ आदमी हैं, जो अपने कारोबार में भी ज़ईफ़ है, लेकिन रोज़ी ऐसी कमाते हैं, गोया समुन्दर से पानी भर रहे हैं।"

هذا دليل على ان الاله له فى الخلق سر خفى ليس ينكشف

"यह दलील है इस पर कि अल्लाह तआला की मख़्लूक़ के बारे में मख़्फ़ी भेद हैं, जो हर किसी पर ज़ाहिर नहीं होते"। *(रौज़)*

43. शैख़ अबू बक्र कत्तानी रह० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज के ज़माने में मक्का मुकर्रमा में मशाइख़ के दर्मियान इश्क़े इलाही के मस्अले में बहस हुई और बड़े बड़े मशाइख़ ने इसमें कलाम किया। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० भी मज्मे में तशरीफ़ रखते थे और वह इस मज्लिस के छोटों में थे। मशाइख़ ने उनसे फ़रमाया कि इराक़ी तुम भी कुछ कहो, हज़रत शैख़ जुनैद रह० ने सर झुकाया और आंसू आंखों से बहने लगे और फ़रमाया कि आशिक़ वह बंदा है जो अपने नफ़्स से जाता रहा हो, अपने रब के ज़िक्र में हर वक़्त लगा रहे, उस के हुक़ूक़ की अदाएगी में मुस्तइद रहे, अपने दिल से हर वक़्त उसको देखता रहे, मौला की हैबत के अनवार ने उसके दिल को जला रखा हो और उसकी मुहब्बत की शराबे ख़ालिस पी रखी हो, और जब्बार सुब्हानहू अपनी ग़ैबत के पर्दों से निकल कर उस पर ज़ाहिर हो गया हो, पस वह आशिक़ अगर कलाम करे तो अल्लाह ही के साथ हो, कोई हर्फ़ ज़बान से निकाले तो अल्लाह की तरफ़ से हो, कोई हरकत करे तो उसी के हुक्म से, और अगर साकिन हो, तो उसी के साथ सुकून हो। पस वह हर वक़्त अल्लाह ही से वाबस्ता है, अल्लाह ही के वास्ते है, अल्लाह ही के साथ है। इस तक़रीर पर सब मशाइख़ रोने लगे और फ़रमाने लगे कि इससे बेहतर ताबीर नहीं हो सकती, अल्लाह तेरी टूटी को बनाये ऐ आरिफ़ों के ताज। *(रौज़)*

44. हज़रत ज़ह्हाक़ बिन मुज़ाहिम रह० फ़रमाते हैं कि मैं जुमा की शब में कूफ़ा में जामा मस्जिद के इरादे से निकला। चांदनी रात थी। मस्जिद के सहन में एक जवान को मैंने देखा कि सज्दे में पड़ा हुआ बे तहाशा रो रहा है मैंने ख़्याल किया कि यह कोई वली है। मैं उसके क़रीब गया, ताकि उसकी बात सुनू, तो वह

यह कह रहा था :-

عليك يا ذا الجلال معتمدي   طوبى لمن كنت انت معناه

"ऐ इज़्ज़त वाले, तेरे ही ऊपर मुझको भरोसा है। ख़ुश्हाल है वह जिसका तू मक़्सूद है।"

طوبى لمن بات خائفا وجلا   يشكو الى ذى الجلال بلواه

"ख़ुशहाल है वह जो सारी रात ख़ौफ़ और डर में गुज़ार दे और इज़्ज़त वाले ही से अपनी मुसीबत का इज़्हार करे।"

ومابه علة ولا سقم   اكثر من حبه لمولاه

"और उसको इससे बढ़ कर कोई इल्लत और कोई मरज़ न हो कि उसको अपने मौला से इश्क़ है।"

اذا خلا فى الظلام مبتهلا   اجابه الله ثم لباه

"जब वह अंधेरी रात में तने तंहा आजिज़ी करने वाला हो तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उसकी पुकार का जवाब हो और लब्बैक हो"

वह शख़्स पहला मिसरा "अलै-क या ज़ुल जलालि मोअ्तमदी" बार बार पढ़ रहा था और रो रहा था। उसके बे इख़्तियार रोने से मुझे भी उस पर तरस खा कर रोना आ गया। फिर उसने ऐसे कलाम किया, जिससे मैं यह समझा कि उसको कोई ख़ास नूर नज़र आया और उसने किसी को ये दो शेअ्र पढ़ते हुए सुना, जिनका तर्जुमा यह है कि "मेरे बंदे, मैं मौजूद हूँ, तू मेरी हिफ़ाज़त में है और जो कुछ तू कह रहा है, हम उसको सुन रहे हैं। तेरी आवाज़ के मेरे फ़रिश्ते मुश्ताक़ हैं और तेरे सारे गुनाह हमने माफ़ कर दिये।"

हज़रत ज़ह्हाक़ रह० कहते हैं कि फिर मैंने उसको सलाम किया उसने जवाब दिया, मैंने कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हारी इस रात में बरकत अता फ़रमाये और तुममें बरकत फ़रमाये और तुम पर रहम करे, तुम कौन हो? कहने लगे, मैं राशिद बिन सुलैमान हूँ, मैंने नाम से उन को पहचान लिया, क्योंकि मैं पहले से उनके हालात सुनता रहता था और उनसे मिलने का मुश्ताक़ था। मगर इस पर क़ादिर न हो सका था। आज अल्लाह जल्ल शानुहू ने ऐसा सहल कर दिया। मैंने ख़िदमत में रहने की दर्ख़्वास्त की, तो फ़रमाया कि यह बहुत दुश्वार है। भला जो शख़्स रब्बुल आलमीन से मुनाजात की लज़्ज़त पाता हो, वह मख़्लूक़

से कब उंस रख सकता है, कहने लगे, वल्लाह, अगर हमारे ज़माने के आदमियों पर पहले मशाइख़ में से किसी का गुज़र हो तो वह कह देगा कि ये लोग तो आख़िरत के दिन पर ईमान भी नहीं रखते। यह कह कर राशिद रह० मेरी नज़र से ग़ायब हो गये, अल्लाह जाने वह आसमान पर चढ़ गये या ज़मीन में उतर गये। मुझे उनकी जुदाई से रंज हुआ और मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि मरने से पहले पहले उनसे फिर मुलाक़ात नसीब हो जाये। इत्तिफ़ाक़ से मैं एक मर्तबा हज को गया। तो काबे शरीफ़ की दीवार के साए तले उनको बैठे देखा और एक मज्मा उनके पास था, जो सूरः अन्आम उनको सुना रहा था। जब उन्होंने मुझे देखा तो तबस्सुम फ़रमाया कि यह उलमा की मेहरबानी है और वह औलिया की तवाज़ोअ् थी। फिर उठे और मुझसे मुसाफ़ा और मुआनक़ा किया और फ़रमाया कि तुमने अल्लाह से दुआ की कि मरने से पहले उनसे मुलाक़ात हो जाये। मैं ने अर्ज़ किया, जी हां दुआ की थी, फ़रमाया "अल हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालि क" मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह आप पर रहम करे। उस रात को जो कुछ आपने देखा था और सुना था, वह मुझे बता दीजिये। उन्होंने ज़ोर से एक ऐसी चीख़ मारी जिससे मैं यह समझा कि उनके दिल का परदा फट गया और बेहोश होकर गिर गये और जो मज्मा उनके पास था और पढ़ रहा था, वह चला गया। जब उनको होश आया तो फ़रमाया, मेरे भाई क्या तुझे यह मालूम नहीं कि अल्लाह के चाहने वालों के दिलों में किस क़दर ख़ौफ़ और हैबत उसके असरार के खोलने में होती है। मैंने पूछा, अच्छा ये कौन लोग थे जो आपके पास पढ़ रहे थे? फ़रमाया कि ये जिन्नात की जमाअत थी। क़दीम ताल्लुक़ात की बिना पर मैं इनका एहतिराम करता हूँ। ये हर साल मेरे साथ हज किया करते हैं और मुझ को क़ुरआन शरीफ़ सुनाया करते हैं। फिर उन्होंने मुझको रुख़्सत किया और फ़रमाया,हक़ तआला शानुहू जन्नत में तुमको मिलावे, जहां न जुदाई होगी, न मशक़्क़त, न ग़म होगा, न कुलफ़त। यह कह कर फिर मुझ से ग़ायब हो गये। इसके बाद मैंने उनको न देखा। *(रौज़)*

45. कहते हैं, हरम शरीफ़ के आबिदों में एक आबिद थे, जो हर वक़्त ख़ुदा तआला में मश्ग़ूल रहते, हमेशा रोज़ा रखते और शाम को रोज़ाना एक आदमी उनको दो रोटियां दे जाता। उनसे रोज़ा इफ़्तार कर लेते। एक दिन उनके दिल में यह ख़्याल आया कि तू अपनी रोज़ी में इस आदमी पर इत्मीनान रखता है और सारी मख़्लूक़ के राज़िक़ को भुला रखा है, यह बड़ी ग़फ़लत की बात है, जब शाम को हस्बे मामूल वह रोटी देने वाला आया तो उसकी रोटी वापस कर दी।

वह तो चला गया, लेकिन उस आबिद पर तीन दिन ऐसे गुज़रे कि कुछ खाने को न मिला। हक़ तआला शानुहू की बारगाह में इल्तिजा की तो रात को ख़्वाब में देखा कि हक़ तआला शानुहू की बारगाह में खड़ा हूँ। और हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे तूने वे रोटियां, जो मैंने अपने एक बंदे के हाथ भेजी थीं, क्यों वापस कर दी थीं? मैंने अर्ज़ किया या अल्लाह, मुझे यह ख़्याल पैदा हुआ कि इसमें तेरे ग़ैर की तरफ़ क़ल्ब को तमानीनत होती है। इर्शाद हुआ, उसको तेरे पास कौन भेजता था? मैंने अर्ज़ किया कि आप ही भेजते थे, इर्शाद हुआ कि तू किससे लेता था? अर्ज़ किया कि आप ही से लेता था, इशार्द हुआ कि उनको ले ले, फिर ऐसा न करना। इसके बाद ख़्वाब ही में देखा कि वह रोटी देने वाला भी हक़ तआला शानुहू की बारगाह में खड़ा है। उससे इर्शाद हुआ कि मेरे बंदे तूने मेरे बंदे की रोटी क्यों बंद कर दी? उसने अर्ज़ किया या अल्लाह तुझे ख़ूब मालूम है। इर्शाद हुआ कि तू वे रोटी किसको देता था? उसने अर्ज़ किया या अल्लाह आपही को देता था। इर्शाद हुआ कि तू वे रोटी हस्बे मामूल जारी कर दे। तुझे उसके बदले में जन्नत मिलेगी। *(रौज़)*

46. अहमद बिन अबिलहवारी रह० कहते हैं कि मैं अबू सुलैमान दारानी रह० के साथ मक्का मुकर्रमा के रास्ते में जा रहा था कि मेरा मश्कीज़ा गिर गया। मैंने अबू सुलैमान रह० से उसकी ख़बर की, उन्होंने कहा "या राद्दज़्ज़ाल्ल-ति उर्दुद् अलैनज़्ज़ाल्ल-ति" (ऐ गुमशुदा चीज़ के लौटाने वाले, हमारी गुमशुदा चीज़ हम पर लौटा दे।) थोड़ी देर भी न गुज़री थी कि एक शख़्स आवाज़ दे रहा था कि यह मश्कीज़ा किस का गिरा है? मैंने देखा तो वह मेरा ही था। मैंने ले लिया तो अबू सुलैमान कहने लगे कि ऐ अहमद क्या तुझे यह गुमान हुआ कि हक़ तआला शानुहू हमें बग़ैर पानी ही के रखेंगे। इसके बाद हम थोड़ी दूर चले। सर्दी बड़ी सख़्त पड़ रही थी और हम पोस्तीनें पहन रहे थे। हमने एक आदमी को देखा कि उस पर दो पुरानी चादरें हैं और उस को पसीना आ रहा है। उसकी अबू सुलैमान ने तवाज़ोअ् की कि हम सर्दी के कपड़ों से कुछ तुम्हारी मदद करें तो उसने यह जवाब दिया कि गर्मी और सर्दी दोनों अल्लाह जल्ल शानुहू की मख़्लूक़ हैं। अगर वह हुक्म करे तो ये मुझ पर मुसल्लत हो सकती हैं और वह इर्शाद फ़रमा दे तो मुझे छोड़ देंगी मैं तो इस जंगल में तीस वर्ष से फिरता रहता हूँ, न सर्दी से कभी मुझे कपकपी हुई, न गर्मी में पसीना आया, वह अपनी मुहब्बत की गर्मी का लिबास मुझे सर्दी के ज़माने में पहना देता है और गर्मी के ज़माने में अपनी मुहब्बत

की ठंडक के ज़ौक़ में लपेट देता है, ऐ दारानी, तुम कपड़ों की तरफ़ इशारा करते हो और ज़ोहद को छोड़ते हो, इसलिये सर्दी तुमको सताती है। ऐ दारानी तुम रोते और चिल्लाते हो और पंखों से राहत पाते हो। अबू सुलैमान दारानी रह० कहते हैं कि मुझे हक़ीक़त में उस शख़्स के सिवा किसी ने नहीं पहचाना, यानी मेरी कमी पर मुतनब्बेह किया। *(रौज़)*

47. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने तवाफ़ में एक अधेड़ उम्र के आदमी को देखा कि इबादत की कसरत ने उसको ज़ईफ़ कर रखा है। उसके हाथ में लकड़ी थी, जिसके सहारे से वह तवाफ़ कर रहा था मैंने उससे उसका शहर पूछा, उसने ख़ुरासान बताया। फिर उसने मुझसे पूछा कि तुम्हारे शहर का रास्ता यहां से कितनी दूर का है? मैंने कहा कि दो तीन माह का। कहने लगा कि फिर भी तुम हर साल हज को नहीं आते? मैंने पूछा कि तुम्हारे शहर से यहां तक का रास्ता कितने दिन का है? कहने लगा कि पांच साल का (उस ज़माने में रास्तों की सहूलत के ये अस्बाब हासिल न थे जो अब हैं।) मैंने कहा कि वल्लाह, यह हक़ तआला शानुहू का खुला फ़ज़्ल है और उसके साथ सच्ची मुहब्बत का असर है (कि इतना लंबा सफ़र तै कर के हाज़िरी मयस्सर हो जाये) इस पर वह हंसा और दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है, "जिससे तुझे इश्क़ है, उसकी ज़ियारत कर, अगरचे तेरा घर दूर हो, और उस तक हाज़िरी में बंदिशें और मानेअ् हों, तेरे घर की दूरी उसकी ज़ियारत से मानेअ् न होना चाहिये, इसलिये कि आशिक़ अपने माशूक़ का बड़ी कसरत से ज़ियारत करने वाला होता है"। *(रौज़)*

48. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने मक्का के रास्ते में एक जवान को देखा, वह ऐसी मज़े की चाल चल रहा है, अकड़ता हुआ, जैसा अपने घर में टहल रहा हो। मैंने पूछा कि यह कैसी चाल है? कहने लगा कि यह चाल उन जवानों की है जो रहमान के ख़ादिम हैं और दो शेअ्र पढ़े, जिनका यह तर्जुमा है, "मैं तेरी वजह से फ़ख़्र करता हुआ हैरान व सरगरदां फिरता हूँ, मगर जब तेरा ज़िक्र हो तो ख़ौफ़ की वजह से पिघलने लगता हूँ। अगर मुझमें मरने की क़ुदरत होती तो तेरे इश्तियाक़ में और तेरे अज़ीम मर्तबे के इकराम में मर जाता"। फिर मैंने पूछा कि, तेरी सवारी और तोशा कहां है? तो उसने बुरी तरह मुझे घूरा। फिर कहने लगा, अरे ग़ौर तो कर, अगर कोई ज़ईफ़ ग़ुलाम किसी करीम आक़ा के दौलतकदे पर ज़ियारत की ग़रज़ से हाज़िर हो और अपना खाना पीना बांध कर साथ लाये तो वह आक़ा अपने ग़ुलामों को हुक्म देगा कि इसको यहां से निकाल दो। मेरे आक़ा

जल्ल जलालुहू ने जब मुझे अपने घर बुलाया तो अपने ऊपर तवक्कुल और एतिमाद मुझे अता फ़रमा दिया, यह कह कर वह गायब हो गया। *(रौज़)*

49. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था। एक फ़क़ीर को देखा कि उसने तवाफ़ किया। इसके बाद अपनी जेब से एक परचा निकाला और उसको पढ़ा, दूसरे और फिर तीसरे दिन भी ऐसा ही किया। इसके बाद एक दिन उसने तवाफ़ किया और ज़ेब से निकाल कर परचा पढ़ा और थोड़ी दूर चला और मर के गिर गया। मैंने उसकी ज़ेब से परचा निकाल कर देखा तो उसमें लिखा था:-

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا (طور ع ٢)

"तू अपने परवरदिगार के हुक्म का मुन्तज़िर रह, क्योंकि तू हमारी आंखों के सामने है।" *(रौज़)*

असल आयते शरीफ़ा में तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़िताब है, जिस का ऊपर से बयान है कि आप के इन ज़ालिम मुख़ालिफ़ीन के लिये अज़ाब तज्वीज़ है। आप अपने रब की इस तज्वीज़ पर सब्र से बैठे रहें (और कुछ फ़िक्र न करें) इसलिये कि आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं, मगर आयते शरीफ़ा के उमूम का तर्जुमा वह है जो ऊपर लिखा गया।

50. हज़रत बिश्र हाफ़ी रह० की ख़िदमत में एक मज्मा हाज़िर हुआ और सलाम किया। हज़रत ने दर्याफ़्त फ़रमाया, तुम कौन लोग हो? उन्होंने अर्ज़ किया, हम शाम के रहने वाले हैं, हज के इरादे से जा रहे हैं। आपकी ख़िदमत में सलाम के लिये हाज़िर हुए हैं। फ़रमाया, हक़ तआला शानुहू तुम्हें जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाये। उन्होंने अर्ज़ किया, हमारी यह तमन्ना है कि आप भी हमारे साथ तशरीफ़ ले चलें, ताकि आपकी बरकात से हम मुन्तफ़ेअ् हों। आपने इंकार फ़रमा दिया। उन लोगों ने जब बहुत ज़्यादा इसरार किया तो फ़रमाया कि जब तुम ने यही तै कर रखा है, तो तीन शर्तों के साथ मैं चल सकता हूँ :-

1. अव्वल यह कि हमारे साथ न कुछ सामान हो,

2. दूसरे यह कि हम रास्ते में किसी से सवाल न करें,

3. तीसरे यह कि अगर रास्ते में कोई हमको कुछ दे तो हम क़ुबूल न करें।

लोगों ने अर्ज़ किया कि पहली दो शर्तें कि हम न कुछ साथ रखें और

न किसी से सवाल करें, यह तो हो सकता है, लेकिन बावजूद एहतियाज के कोई शख़्स कुछ दे, उसको हम क़ुबूल न करें, इसकी ताक़त हममें नहीं है, फ़रमाने लगे कि इसका मतलब तो यह हुआ कि तुम अपने घर से दूसरों के तोशों पर भरोसा करके निकलते हो। अल्लाह जल्ल शानुहू पर भरोसा नहीं है। मैं इस हालत में तुम्हारे साथ नहीं जा सकता, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। और तुम जाओ, अपना काम करो, फिर फ़रमाया कि बेहतरीन फ़ुक़रा तीन क़िस्म के हैं:-

1. अव्वल वह जो खुद सवाल न करे और अगर दिया जाये तो क़ुबूल न करे। यह रूहानी लोगों में से है या यह कहा कि रूहानिय्यीन के साथ है।

2. दूसरी क़िस्म वह कि खुद तो सवाल न करे, लेकिन अगर दिया जाए तो क़ुबूल कर ले। इसके लिये हज़रते क़ुदुस में दस्तरख़्वान बिछाये जाते हैं।

3. तीसरी क़िस्म यह कि सवाल करें और बक़द्रे ज़रूरत ले ले। इसकी सदाक़त उसके फ़ेअ्ल का कफ़्फ़ारा हो जाती है। *(रौज़)*

51. हज़रत शैख़ अबू जाफ़र हद्दाद रह॰ जो हज़रत शैख़ जुनैद बग़दादी रह॰ के उस्ताद हैं, फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में था, मेरी हजामत बहुत बढ़ गयी और पैसा पास न था कि हजामत बनवाता। मैं एक हज्जाम के पास जो चेहरे से भला आदमी मालूम होता था, गया और उससे कहा कि अल्लाह के वास्ते मेरी हजामत बना दोगे। कहने लगा हां हां, बड़े इक्राम के साथ वह एक दुनियादार की हजामत बना रहा था। उसको दर्मियान में रोक कर पहले मेरी हजामत बनायी और फिर मुझे एक कागज़ की पुड़िया दी। उसमें चंद दराहिम थे। मैंने वे ले लिये और यह इरादा किया कि जब मुझे सबसे पहले कुछ मिलेगा, तो इस हज्जाम को दूँगा। मैं मस्जिद में गया। वहां मेरा एक भाई मिला, उसने कहा कि तुम्हारे एक भाई बसरा से एक थैली तुम्हारे वास्ते लाये हैं, उसमें तीन सौ अशर्फ़ियां हैं, वह अल्लाह के वास्ते तुम्हें दे गये हैं। मैंने वह थैली ले ली और हज्जाम के पास जाकर कहा कि ये तीन सौ अशर्फ़ियां हैं, इनको तुम अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर लेना। हज्जाम ने कहा, शैख़ तुम्हें शर्म न आयी, अव्वल तो तुमने यह कहा कि अल्लाह के वास्ते हजामत बनाओ, फिर मैं उस पर उजरत ले लूँ? जाओ तुम्हें अल्लाह तआला माफ़ करे। *(रौज़)*

हज़रत शिबली रह॰ का भी इस क़िस्म का एक क़िस्सा मशहूर है। *(रौज़)*

52. हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० ने एक शख़्स से तवाफ़ की हालत में फ़रमाया कि यह बात समझ ले कि तू सालिहीन के दर्जे को उस वक़्त तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि छ: घाटियों को पार न कर ले :-

1. अव्वल यह कि तू नेअ्मत के दरवाज़े को बंद कर ले और सख़्ती का दरवाज़ा खोले।

2. दूसरे यह कि इ़्ज़्ज़त के दरवाज़े को बंद करे और ज़िल्लत के दरवाज़े को खोले।

3. तीसरे यह कि राहत के दरवाज़े को बंद करे और मशक़्क़त के दरवाज़े को खोले।

4. चौथे यह कि सोने के दरवाज़े को बंद करे और जागने के दरवाज़े को खोले।

5. पांचवे यह कि ग़िना के दरवाज़े को बंद करे और फ़क्र के दरवाज़े को खोले।

6. छठे यह कि उम्मीदों के दरवाज़े को बंद करे और मौत की तैयारी के दरवाज़े को खोले। *(रौज़)*

53. मुहम्मद बिन हुसैन बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक साल हज को गया। मैं इत्तिफ़ाक़ से मक्का के बाज़ार से गुज़र रहा था कि एक बूढ़ा आदमी एक लड़की का हाथ पकड़े हुए था, लड़की का रंग मुतग़य्यर हो रहा था, बदन बहुत लाग़र, लेकिन उसके चेहरे पर एक नूरानी चमक थी, वह बूढ़ा पुकार रहा था कि कोई इस लड़की का ख़रीदार है, कोई है जो इसको पंसद करे, कोई है जो बीस अशर्फ़ी से इसकी क़ीमत ज़्यादा दे, इस शर्त पर कि मैं इसके हर ऐब से बरी हूँ। मैंने उस शैख़ के क़रीब जाकर पूछा कि इस बांदी की क़ीमत का हाल तो मालूम हो गया, इसमें ऐब क्या है? वह कहने लगा कि यह लड़की पागल है, हर वक़्त ग़म्ज़दा रहती है रात भर नमाज़ पढ़ती है, दिन भर रोज़ा रखती है, न खाती है न पीती है, हर जगह बिल्कुल तंहाई पसंद करती है। जब मैंने उसकी बात सुनी तो वह लड़की मुझे पसंद आ गयी। और मैंने उसको ख़रीद लिया और अपनी क़ियामगाह पर ले गया। मैंने उसको देखा कि वह ज़मीन की तरफ़ सर झुकाए बैठी है, फिर उसने सर उठाया और कहने लगी कि मेरे छोटे आक़ा, आप का वतन कहां है? अल्लाह तआला आप पर रहम करे। मैंने कहा, इराक़ है, कहने लगी

कौन सा इराक़? बसरा या कूफ़ा? मैंने कहा कि दोनों नहीं, कहने लगी तो क्या आप बग़दाद के रहने वाले हैं? मैंने कहा, हां, कहने लगी वाह वाह, वह तो आबिदों का शहर है। ज़ाहिदों का शहर है। मुझे ताज्जुब हुआ कि यह बांदी एक कोठरी से दूसरी कोठरी में जाने वाली इसको आबिदों और ज़ाहिदों की क्या ख़बर। मैंने उससे दिल्लगी के तौर पर पूछा कि तू उनमें से किन किन आबिदों को जानती है, कहने लगी, मालिक बिन दीनार को, बिश्र हाफ़ी को, सालिह मुर्री को, अबू हातिम सजिस्तानी को, मारूफ़ कर्ख़ी को, मुहम्मद बिन हुसैन बग़दादी को, राबिआ अद्वीया को, शअवाना को, मैमूना को। मैंने उससे पूछा कि तुझे इन सब का हाल किस तरह मालूम हुआ? कहने लगी कि ऐ जवान मैं इन को कैसे न जानूँ? खुदा की क़सम ये लोग दिलों के तबीब हैं। ये वे लोग हैं, जो आशिक़ को माशूक़ का रास्ता बताते हैं। फिर उसने चार शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

यह क़ौम वे लोग हैं, जिनके फ़िक्र अल्लाह के साथ वाबस्ता हो गये। पस उनके लिये कोई फ़िक्र ही किसी और का नहीं रहा। इन लोगों का मक़्सद सिर्फ़ उनका मौला और उनका सरदार है, क्या ही बेहतरीन मक़्सद है, जो सिर्फ़ एक बे नियाज़ ज़ात के वास्ते है, न तो दुनिया उनसे उलझती है और न खानों की उम्दगी, न दुनिया की लज़्ज़तें, न औलाद, न उनसे अच्छा लिबास झगड़ता है, न माल की रोज़ अफ़ज़ूं ज़्यादती, न तायदाद की कसरत। इसके बाद मैंने कहा ऐ लड़की मैं मुहम्मद बिन हुसैन ही हूँ, कहने लगी मैंने अल्लाह तआला से दुआ की थी कि तुम से मेरी कहीं मुलाक़ात हो जाये। तुम्हारी वह दिलकश आवाज़ क्या हुई, जिससे तुम मुरीदीन के दिलों को ज़िंदा किया करते थे और सुनने वालों की आंखें उससे भर आया करती थीं। मैंने कहा, बिहालिही मौजूद है, कहने लगी, खुदा की क़सम! मुझे क़ुरआन पाक कुछ सुना दो, मैंने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ी, तो उसने बहुत ज़ोर से एक चीख़ मारी और बेहोश हो गयी। मैंने उस पर पानी छिड़का, जिससे उसको इफ़ाक़ा हुआ तो कहने लगी, जिसके नाम का यह असर है अगर मैं उसको पहचान लूँ और जन्नत में उसको देख लूँगी तो क्या हाल होगा? फिर कहने लगी, अच्छा पढ़िए। अल्लाह जल्ल शानुहू आप पर रहम करे। मैंने यह आयत पढ़ी :-

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَوَاۤءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاۤءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (جاثیہ ع ۲)

"जो लोग बुरे काम करते हैं, क्या वे यह गुमान करते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर कर देंगे जो ईमान लाये और अच्छे अमल किये कि उन सब का जीना मरना एक सा हो जाये (जो ऐसा गुमान करते हैं) बहुत बुरी तज्वीज़ कर रहे हैं।"

यह आयत सुनकर वह कहने लगी कि अल्लाह का शुक्र है, हमने कभी किसी की न परिस्तश की, न किसी सनम को बोसा दिया और कुछ पढ़िए। अल्लाह आप पर रहम करे। मैंने पढ़ा :-

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ (كهف ع ٤)

"बेशक हमने ज़ालिमों के लिये आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातें उनको चारों तरफ़ से घेरे हुए होंगी और अगर वे लोग फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद रसी की जायेगी, जो तेल की तलछट की तरह (बदहैअत) होगा (और ऐसा सख़्त गर्म) कि मुंहों को पका देगा, क्या ही बुरा पानी होगा और (जहन्नम) क्या ही बुरा ठिकाना होगा।"

वह कहने लगी कि तुमने अपने दिल पर ना उम्मीदी लाज़िम कर दी, अपने दिल को उम्मीद और ख़ौफ़ के दर्मियान मुअत्तर करो,

"कुछ और पढ़ो अल्लाह जल्ल शानुहू आप पर रहम करे" तो मैंने पढ़ा:-

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ (عبس)

"बहुत से चेहरे उस दिन ख़ंदा व शादां होंगे और यह पढ़ा:-

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ (قيمه ع ١)

"बहुत से चेहरे उस दिन बा रौनक़ होंगे और अपने रब की तरफ़ देखते होंगे"।

इस पर वह कहने लगी, हाय, मुझे उस दिन उसकी मुलाक़ात का कितना इश्तियाक़ होगा, जिस दिन वह अपने दोस्तों के लिये तजल्ली फ़रमायेगा, कुछ और पढ़िए, अल्लाह तआला आप पर रहम करे, मैंने यह आयात पढ़ीं :-

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ ۝ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ۝ (واقعه ع ١)

कुछ आयतें:-

لِاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ٥

तक, यानी सूरः वाक़िआ के पहले रूकूअ् के ख़त्म तक पढ़ीं, जिनका तर्जुमा यह है। कि

"इन (आला दर्जे वालों) के पास ऐसे लड़के, जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, ये चीज़ें लेकर हमेशा आते जाते रहेंगे, आबख़ोरे और आफ़ताबे और ऐसे गिलास जो बहती हुई शराब से भरे गये हों, कि न इस शराब से उनको सर का दर्द होगा (यानी चक्कर आएगा) न अक़्ल में फ़ुतूर आयेगा और ऐसे मेवे लेकर आयेंगे, जिनको ये लोग पसंद करें और परिंदों का गोश्त जो उनको मर्ग़ूब हो, और उनके लिये ख़ूबसूरत बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी, जैसा कि (हिफ़ाज़त से) पोशीदा रखा हुआ मोती, यह सब कुछ बदला है उन आमाल का जो वे (दुनिया में) किया करते थे, (ये लोग जन्नत में) न बक बक सुनेंगे, न कोई और बेहूदा बात, बस सलाम ही सलाम की आवाज़ (हर तरफ़) से आयेगी और (नम्बर दो के हज़रात) जो दाहिने वाले हैं (यानी उनके आमालनामे दाहिने हाथ में मिले हैं) वे दाहिने वाले भी कैसे अच्छे आदमी हैं। वे उन बाग़ों में रहेंगे, जहां बग़ैर कांटों की बेरियां होंगी, और तेह ब तेह केले लगे हुए होंगे और बहुत लम्बा साया होगा और बहता हुआ पानी होगा और बहुत कसरत से मेवे होंगे, जो न ख़त्म होंगे और न उनमें किसी क़िस्म की रोक टोक होगी (जितना जिसका दिल चाहे खाये) और ऊँचे ऊँचे फ़र्श होंगे (और उनके लिये भी औरतें होंगी जिनको) हमने ख़ास तौर से बनाया यानी ऐसा बनाया कि वे (हमेशा हमेशा) कुंवारियां ही रहेंगी (यानी सोहबत के बाद फिर कुंवारी बन जायेंगी) और (नाज़ व अंदाज़ के लिहाज़ से) महबूबा होंगी और (जन्नत वालों की) हम उम्र होंगी और ये सब चीज़ें दाहिने वालों के लिये हैं।

(तर्जुमा ख़त्म हुआ।)

फिर वह लड़की मुझसे कहने लगी, मेरा ख़्याल है कि तुमने भी हूरों से मंगनी की है, कुछ उनके महरों के वास्ते भी ख़र्च किया है? मैंने पूछा कि मुझे बता दे, उनका महर क्या होगा? मैं तो फ़क़ीर आदमी हूँ, कहने लगी, रात को तहज्जुद पढ़ना दिन को रोज़ा रखना और फ़क़ीरों व मसाकीन से मुहब्बत रखना, इसके बाद उस बांदी ने छः शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है :-

"ऐ वह शख़्स जो हूरों से उनके पर्दे में मंगनी करता है और उनके आ़ली

मर्तबा के बावजूद उनका तालिब है, कोशिश के साथ खड़ा हो जा, सुस्ती हरगिज़ न कर, नफ़्स से मुजाहदा कर, उसको सब्र का आदी बना, रात को तहज्जुद पढ़ा कर, दिन को रोज़ा रखा कर, यह उनका महर है। अगर तेरी दोनों आंखें उनको इस हाल में देख लें, जबकि वे तेरी तरफ़ मुतवज्जह हो रही हों और उनके सीनों पर अनारों की तरह से उनके पिस्तान उभर रहे हों और वे अपनी हम उम्र लड़कियों के साथ चल रही हों और उनके सीनों पर चमकते हुए हार पड़े हुए हों तो उस वक़्त तेरी निगाह में यह दुनिया की जितनी ज़ेब व ज़ीनत है, सारी ही सुबुक बन जाये। ये अश्आर पढ़ कर उसको बेहोशी तारी हो गयी। मैंने फिर उसके चेहरे पर पानी वग़ैरह छिड़का तो उसको इफ़ाक़ा हुआ और उसने ये शेअ्र पढ़े :-

اِلٰهِی لَا تُعَذِّبْنِی فَاِنِّیْ   مُقِرٌّ بِالَّذِیْ قَدْ کَانَ مِنِّیْ

"ऐ अल्लाह तआला, तू मुझे अज़ाब से बचाईयो। बेशक मैं अपने गुनाहों का जो मुझ से सादिर हुए, इक़रार करने वाली हूँ।"

فَکَمْ مِنْ زَلَّةٍ فِی الْخَطَایَا   غَفَرْتَ وَاَنْتَ ذُوْفَضْلٍ وَّمَنٍّ

"तूने कितनी कसरत से मेरी ख़ताओं की लग़्ज़िशें माफ़ फ़रमायी हैं, तू बड़े फ़ज़्ल वाला है, बड़े एहसान वाला है।"

یَظُنُّ النَّاسُ بِیْ خَیْرًا وَّاِنِّیْ   لَشَرُّ النَّاسِ اِنْ لَّمْ تَعْفُ عَنِّیْ

"लोग मुझे अच्छा आदमी गुमान करते हैं, लेकिन अगर तू मेरी ख़ताएं माफ़ न कर दे तो मैं बदतरीन आदमी हूँ।"

وَمَالِیْ حِیْلَةٌ اِلَّا رَجَائِیْ   لِعَفْوِكَ اِنْ عَفَوْتَ وَحُسْنُ ظَنِّیْ

"मेरे लिये कोई तदबीर नहीं, इसके सिवा कि तेरी बख़्शिश की उम्मीद है और तेरे साथ मुझे हुस्ने ज़न है (कि तू ज़रूर करम करेगा)।

ये अश्आर पढ़ कर उस बांदी को फिर ग़शी हो गयी, मैं जो उसके क़रीब पहुँचा तो मर चुकी थी। मुझे उसके इंतिक़ाल का बेहद सदमा हुआ। मैं उठ कर बाज़ार गया कि उसके तज्हीज़ व तक्फ़ीन का सामान ख़रीद लाऊँ। जब मैं बाज़ार से लौटा तो वह कफ़नी, कफ़्नाई ख़ुश्बू लगी हुई मुअत्तर नाश (लाश) रखी हुई थी, दो सब्ज़ कपड़ों में उसका कफ़न था, जो जन्नत का लिबास था, कफ़न में दो सतरें नूर से लिखी हुई थीं, पहली सतर (लाइन) पर :-

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

लिखा हुआ था, दूसरी पर यह आयत :-

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

"ख़बरदार रहो कि अल्लाह के वलियों को न तो ख़ौफ़ होता है, न ग़मगीन होते हैं।"

मैं और मेरे साथी उसके जनाज़े को उठा कर ले गये। जनाज़े की नमाज़ पढ़ कर दफ़्ना दिया और उसकी क़ब्र पर सूर: यासीन शरीफ़ पढ़ कर अपने हुजरे में चला गया। मेरी आंखों से आंसू बह रह थे। दिल उसके फ़िराक़ से ग़मगीन था। वापस आकर मैंने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और सो रहा। ख़्वाब में देखा कि वह लड़की जन्नत में फिर रही है, निहायत महकते हुए जाफ़रान के बग़ीचे में है। रेशम के और इस्तबरक़ के जोड़े पहन रही है उसके सर पर एक मोतियों से जड़ा हुआ ताज है और पावों में सुर्ख़ याक़ूत के जूते हैं, मुश्क व अंबर की ख़ुश्बू उससे महक रही है, उसका चेहरा शम्स व क़मर से ज़्यादा रोशन है। मैं ने कहा, ऐ लड़की, ज़रा ठहर तू यह तो बता दे कि यह मर्तबा किस अमल की बदौलत तुझे मिला। कहने लगी कि फ़ुक़रा और मसाकीन की मुहब्बत से और इस्तिग़फ़ार की कसरत से और मुसलमानों के रास्ते में से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ हटा देने से। फिर उसने तीन शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

"मुबारक है वह शख़्स जिसकी आंखें रातों को जागती हों और अपने मालिक के इश्क़ की बेचैनी में रात गुज़ार दे और किसी दिन अपनी कोताहियों पर नोहा कर लिया करे और अपनी ख़ताओं पर रो लिया करे और शब को अकेला खड़ा हो, अल्लाह के अज़ाब के ख़ौफ़ से अख़्तर शुमारी करता हो, इस हाल की हक़ तआला शानुहू की निगाह हिफ़ाज़त कर रही हो। (रौज़)

54. हज़रत शैख़ इब्राहीम ख़्वास रह० का मामूल था कि जब कहीं सफ़र को तशरीफ़ ले जाते, न किसी से तज़्किरा करते, न किसी को ख़बर होती, एक लोटा हाथ में लिया और चल दिये।

हामिद अस्वद रह० कहते हैं कि एक मर्तबा मैं भी मास्जद में हाज़िरे ख़िदमत था। आप हस्बे मामूल लोटा लेकर चल दिये मैं भी पीछे पीछे हो लिया। जब हम क़ादसिया में पहुँचे तो आपने दर्याफ़्त फ़रमाया हामिद, कहां का इरादा है?

मैंने अर्ज़ किया कि मैं तो हम रिकाबी के लिये चल पड़ा। फ़रमाया कि मेरा इरादा मक्का मुकर्रमा जाने का है, मैंने अर्ज़ किया मैं भी इन् शाअल्लाह वहीं चलूँगा। जब हमको चलते चलते तीन दिन हो गये तो एक नौ जवान हमारे साथ और भी हो लिया और एक दिन रात वह हमारे साथ चलता रहा, लेकिन उसने एक भी नमाज़ न पढ़ी। मैंने शैख़ से अर्ज़ किया कि यह तीसरा आदमी जो हमारे साथ मिल गया, नमाज़ नहीं पढ़ता। शैख़ ने उससे पूछा कि तू नमाज़ क्यों नहीं पढ़ता? उसने कहा मेरे ज़िम्मे नमाज़ नहीं है, आपने फ़रमाया कि क्यों? क्या तू मुसलमान नहीं है? उसने कहा, नहीं! मैं तो नसरानी हूँ, लेकिन मैं नसरानियत में भी तवक्कुल पर गुज़र करता हूँ। मेरे नफ़्स ने यह दावा किया था कि वह तवक्कुल में पुख़्ता हो गया। मैंने इसको झुठलाया और उस जंगल बयाबान में जहां माबूद के सिवा कोई भी नहीं है, ला डाला, ताकि उसके दावे का इम्तिहान करूँ। शैख़ उसकी यह बात सुनकर चल दिये और मुझ से फ़रमाया कि इससे तअर्रूज़ न करो, तुम्हारे साथ पड़ा चलता रहे। वह हमारे साथ चलता रहा, यहां तक कि हम बले मर्व पर पहुँचे, वहां शैख़ ने अपने मैले कपड़े बदन से उतारे और उनको धोया, फिर उस लड़के से पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है? उसने कहा, अब्दुल मसीह। शैख़ ने फ़रमाया कि अब्दुल मसीह, यह मक्का की दहलीज़ है यानी हरम आ गया और अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुश्रिकों का दाख़िला इसमें ममनूअ् क़रार दिया है। चुनांचे इर्शाद है :-

إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ

"मुश्रिकीन नापाक हैं ये मस्जिदे हराम के क़रीब भी न हों, और अपने नफ़्स का जो तू इम्तिहान करना चहाता था, वह तुझ पर ज़ाहिर हो गया। पस ऐसा न हो कि तू मक्का में दाख़िल हो जाये, अगर हम तुझे वहां देखेंगे तो ऐतिराज़ करेंगे"।

हामिद रह० कहते हैं कि हम उसको वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गये, मक्का मुकर्रमा पहुँचे। इसके बाद हम अरफ़ात पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि वह लड़का एहराम बांधे हुए लोगों के मुंह देखता हुआ हमारे पास पहुँच गया और शैख़ के ऊपर गिर पड़ा। शैख़ ने पूछा, अब्दुल मसीह, क्या गुज़री? क्या हुआ? कहने लगा कि ऐसा न कहो। अब मैं अब्दुल मसीह नहीं हूँ, बल्कि उसका ग़ुलाम हूँ। जिसके हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम भी ग़ुलाम थे। हज़रत इब्राहीम रह० ने पूछा कि अपनी सरगुज़िश्त तो सुनाओ। कहने लगे कि जब तुम मुझे वहां छोड़ कर चले आये तो

मैं उसी जगह बैठ गया और जब मुसलमानों का एक और क़ाफ़िला आया तो मैं भी मुसलमानों की तरह एहराम बांध कर अपने आपको मुसलमाना ज़ाहिर करके उनके साथ हो लिया। जब मक्का मुकर्रमा पहुँच कर बैतुल्लाह पर मेरी नज़र पड़ी, तो इस्लाम के अलावा जितने मज़ाहिब थे वे सब एक दम मेरी निगाह से गिर गये। मैंने गुस्ल किया, मुसलमान हुआ और एहराम बांधा और आज सुबह से तुम को ढूढँता फिरता हूँ। इसके बाद से हम और वह साथ ही रहे, यहां तक कि सूफ़िया ही की जमाअत में उसका इंतिक़ाल हुआ। *(रौज़)*

55. हज़रत अबू सईद ख़ज़्ज़ाज़ रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था। एक मर्तबा बाबे बनी शब्बीर से गुज़र रहा था कि मैंने एक नौ जवान की लाश रखी हुई देखी, जो निहायत हसीन चेहरे वाला था। मैंने जो उसके चेहरे को ग़ौर से देखा, तो वह तबस्सुम करते हुए कहने लगा, अबू सईद, तुम्हें मालूम नहीं कि उश्शाक़ मरते नहीं, बल्कि वे ज़िंदा ही रहते हैं, अगरचे ज़ाहिर में मर जायें। उनकी मौत एक आलम से दूसरे आलम में इंतिक़ाल होता है।

शैख़ अबू याक़ूब सुनौसी रह॰ फ़रमाते हैं कि मेरे पास एक मुरीद मक्का मुकर्रमा में आया और कहने लगा कि ऐ उस्ताद, मैं कल को ज़ुहर के वक़्त मर जाऊँगा। यह अशर्फ़ी ले लीजिये। इसमें से निस्फ़ तो क़ब्र खोदने वाले की उजरत है और निस्फ़ कफ़न वग़ैरह की क़ीमत है। जब दूसरे दिन ज़ुहर का वक़्त आया वह मस्जिदे हराम में आया और तवाफ़ किया और थोड़ी दूर जाकर मर गया। मैंने उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन की जब उसको क़ब्र में रखा तो उसने आंखें खोल दीं। मैंने कहा, क्या मरने के बाद भी ज़िन्दगी है? कहने लगा, हां मैं ज़िंदा हूँ, और अल्लाह जल्ल शानुहू का हर आशिक़ ज़िंदा होता है। *(रौज़)*

हमारे अकाबिर में हज़रत हाफ़िज़ मुहम्मद ज़ामिन साहिब शहीद थानवी रह॰ के साहिबज़ादे हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब रह॰ बड़े साहिबे तसर्रुफ़ बुज़ुर्ग थे। उनके तसर्रुफ़ात और ज़ूदअसर तावीज़ों के बहुत से क़िस्से मैंने अपने अकाबिर से, जिन्होंने उनकी ज़ियारत की और उनके तसर्रुफ़ात देखे बकसरत सुने हैं। यह क़िस्सा मैंने अपने मामू मौलवी महमूद साहिब रामपूरी रह॰ से सुना है कि उन्होंने इंतिक़ाल से एक दिन क़ब्ल मौलवी महमूद साहिब से फ़रमाया कि हमें बहुत से चुटकुले मालूम हैं। एक तुम्हें भी बता देंगे। घर बैठे दो सौ रूपये माहवार मिलते रहेंगे। किसी वक़्त पूछ लेना। मैंने कहा बेहतर है। ख़्याल किया कि किसी दिन

फ़ुर्सत के वक़्त पूछा लूँगा। शाम को अस्र की नमाज़ के वक़्त जब तक्बीर हो रही थी, सफ़ से ज़रा आगे मुंह निकाल कर मेरी तरफ़ चुपके से इशारा करके फ़रमाया कि वह बात याद रखना, फिर हम चले जायेंगे। मुझे बड़ी हैरत हुई, यह क्या वक़्त था उसका। दूसरे दिन सुबह को देवबंद वग़ैरह मुतअद्दद जगह अहबाब को ख़ुतूत लिखवाये, जिसमें मुख़्तलिफ़ उमूर के साथ यह लफ़्ज़ भी था कि मेरा आज सफ़र का इरादा है। हम लोग यह समझते रहे कि अक्सर भोपाल कियाम रहता है, वहां तशरीफ़ ले जाने का इरादा होगा या कहीं और, रौअब की वजह से हर शख़्स हर वक़्त बात करने की जुर्रत न करता था। अगरचे तबए मुबारक में मिज़ाह बेहद था, लेकिन उसके साथ ही जलाल भी बहुत था। शाम को अस्र की नमाज़ पढ़ कर जब हम सब घर की तरफ़ चले, वह अक्सर औक़ात मस्जिद में तशरीफ़ रखा करते थे, इसलिये मस्जिद में रह गये, चंद ही क़दम बाहर चले थे कि एक शख़्स पीछे से दौड़ा हुआ आया कि हज़रत हाफ़िज़ साहिब का विसाल हो गया हम लोग हैरत से वापस हुए कि अभी सबके साथ नमाज़ पढ़ी है मस्जिद में आकर देखा तो चारपाई पर क़िब्ला रूख़ लेटे हुए हैं, लुंगी जो हमेशा का मामूल थी, बंध रही है और कुरता निकला हुआ सिरहाने रखा है। रहिम-हुल्लाहु रह्म-तन् वासिअ-तन्।

56. सईद बिन अबी अरूबा रह० फ़रमाते हैं कि हज्जाज सक़फ़ी (जिसका ज़ुल्म व सितम शोहरा-ए-आफ़ाक़ है) जब हज को गया तो रास्ते में एक जगह मंज़िल पर ख़ादिमों से नाश्ता तलब किया और अपने दरबान से कहा कि देख यहां कोई मक़ामी आदमी हो तो उसको मेरे साथ खाना खाने के लिये बुला ला, ताकि मैं उससे यहां के हालात की तहक़ीक़ करूँ। वह गया और पहाड़ पर एक बद्दू दो चादरों में पड़ा हुआ सो रहा था, उसको लात मार कर उठाया कि चल, तुझ को अमीर बुला रहे हैं, वह आया तो हज्जाज ने कहा कि हाथ धोकर मेरे साथ खाने में शरीक हो जाओ, उस बद्दू ने कहा कि मुझे उसने दावत दे रखी है, जो तुझ से भी अफ़ज़ल है। हज्जाज ने कहा, वह कौन? कहने लगा कि हक़ तआला शानुहू ने मुझे रोज़े की दावत दी है। हज्जाज कहने लगा, ऐसी सख़्त गर्मी में रोज़ा? बद्दू ने कहा कि हां ऐसे दिन के लिये जो इससे भी ज़्यादा सख़्त गर्म होगा। हज्जाज ने कहा, आज इफ़्तार कर लो, कल क़ज़ा रख लेना। बद्दू ने कहा, अगर तुम इसका ज़िम्मा लो कि मैं कल तक ज़िंदा रहूँगा तो मैं इफ़्तार कर लूं। हज्जाज ने कहा, इसका कौन ज़िम्मा ले सकता है? कहने लगा, तो फिर नक़्द को ऐसे उधार पर महव्वल करता है, जिसका ज़िम्मा भी नहीं लेता। हज्जाज

ने कहा, यह खाना बहुत लज़ीज़ है, बद्दू ने कहा कि न तुमने इसको लज़ीज़ बनाया, न बावरची ने, बल्कि तन्दुरूस्ती ने इसको अच्छा कर रखा है।

मुसन्निफ़ ने दो शेअ्रों में इसकी तौज़ीह की है कि खाने को बावर्ची अच्छा नहीं करता, बल्कि तन्दुरूस्ती से खाना अच्छा होता है। अगर मेरी सेहत अच्छी नहीं तो कोई भी खाना लज़ीज़ नहीं और सेहत अच्छी है तो सारी खाने की चीज़ें लज़ीज़ हैं। *(रौज़)*

57. हज्जाज बिन यूसुफ़ जब हज को गया तो एक शख़्स को देखा कि उसकी मौजूदगी में काबे के गिर्द ज़ोर से लब्बैक कहता हुआ तवाफ़ कर रहा है, हज्जाज ने कहा कि इस शख़्स को मेरे पास पकड़ कर लाओ। वह हाज़िर किया गया। हज्जाज ने पूछा कि तू किन लोगों में से है? उसने कहा मुसलामनों में से। हज्जाज ने कहा, मैं यह नहीं पूछता। उस ने कहा और क्या मक़्सद है? हज्जाज ने कहा, किस शहर का रहने वाला है? उसने कहा यमन का। हज्जाज ने पूछा कि तूने मुहम्मद बिन युसूफ़ (जो हज्जाज का हक़ीक़ी भाई था) को किस हाल में छोड़ा? वह कहने लगा, बहुत मोटा ताज़ा, कसरत से कपड़े पहनने वाला, बहुत कसरत से सवारी पर फिरने वाला, कभी शहर के अंदर कभी शहर के बाहर घूमने वाला, हज्जाज ने कहा, मेरा यह सवाल नहीं, उसने कहा और क्या मक़्सद है? हज्जाज ने कहा, उसकी आदतें कैसी हैं? कहने लगा, बड़ा ज़ालिम, बड़ा जाबिर, मख़्लूक़ का मुतीअ्, ख़ालिक़ का गुनाहगार, हज्जाज ने कहा तुझे ऐसी सख़्त बातें कहने की हिम्मत कैसे हुई? जबकि तू उसका मर्तबा मेरी निगाह में (रिश्तेदारी की वजह से) जानता है। उसने कहा, क्या उसका मर्तबा तेरी निगाह में उससे ज़्यादा है, जो मेरा मर्तबा अल्लाह जल्ल शानुहू की निगाह में है? मैं उसके घर की ज़ियारत के वास्ते आया हूँ, उसके नबी की तस्दीक़ करने वाला हूँ, उसका फ़र्ज़ अदा कर रहा हूँ, उसके दीन की इताअत कर रहा हूँ। यह सुनकर हज्जाज चुप हो गया, कुछ जवाब न दे सका। वह आदमी वापस चला गया और काबे का परदा पकड़ कर कहने लगा, ऐ अल्लाह तुझी से पनाह मांगता हूँ और तुझी को जाए पनाह बनाता हूँ। ऐ अल्लाह तेरी कशाइश ही क़रीब है और तेरा ही एहसान क़दीम है, और तेरी ही आदात बेहतरीन हैं। *(रौज़)*

58. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा तवाफ़ कर रहा था, दफ़्अतन मैंने एक लड़की को देखा कि उसके कांधे पर एक बच्चा बहुत कमसिन बैठा है और वह यह निदा कर रही है, ऐ करीम, ऐ करीम, तेरा गुज़रा हुआ ज़माना,

(यानी कैसा मूजिबे शुक्र है) मैंने पूछा, वह क्या चीज़ है जो तेरे और मौला के दर्मियान गुज़री। कहने लगी कि मैं एक मर्तबा कश्ती पर सवार थी और ताजिरों की एक जमाअत हमारे साथ थी। तूफ़ानी हवा ऐसी ज़ोर से आयी कि वह कश्ती ग़र्क़ हो गयी और सबके सब हलाक हो गये। मैं और यह बच्चा एक तख़्ते पर रह गये और एक हबशी आदमी दूसरे तख़्ते पर। हम तीन के सिवा कोई भी उनमें से न बचा। जब सुबह का चांदना हुआ तो उस हबशी ने मुझे देखा और पानी को हटाता हटाता मेरे तख़्ते के पास पहुँच गया और जब उसका तख़्ता मेरे तख़्ते के साथ मिल गया, तो वह भी मेरे तख़्ते पर आ गया और मुझसे बुरी बात की ख़्वाहिश करने लगा। मैंने कहा अल्लाह से डर, हम किस मुसीबत में मुब्तला हैं, इससे ख़लासी उसकी बंदगी से भी मुश्किल हो रही है, चे जाए कि उसका गुनाह ऐसी हालत में करें। कहने लगा, इन बातों को छोड़, ख़ुदा की क़सम यह काम तो होकर रहेगा। यह बच्चा मेरी गोद में सो रहा था। मैंने चुपके से एक चुटकी इसके भर ली, जिससे यह एकदम रोने लगा। मैंने उससे कहा, अच्छा ज़रा ठहर जा, मैं इस बंच्चे को सुला दूँ फिर जो मुक़द्दर में होगा, हो जायेगा। उस हब्शी ने इस बच्चे की तरफ़ हाथ बढ़ा कर इसको समुन्दर में फेंक दिया। मैंने अल्लाह पाक से कहा, ऐ वह पाक ज़ात जो आदमी के और उसके दिली इरादे में भी हाइल हो जाती है, मेरे और इस हब्शी के दर्मियान तू ही अपनी ताक़त और क़ुदरत से जुदाई कर, वेतरद्दुद तू हर चीज़ पर क़ादिर है। ख़ुदा की क़सम। मैं इन अल्फ़ाज़ को पूरा भी न करने पायी थी कि समुन्दर से एक बहुत बड़े जानवर ने मुंह खोले हुए सर निकाला और उस हब्शी का एक लुक़्मा बना कर समुन्दर में घुस गया और मुझे अल्लाह जल्ल शानुहू ने महज़ अपनी ताक़त और क़ुदरत से उस हब्शी से बचाया। वह हर चीज़ पर क़ादिर है, पाक है, उसकी बड़ी शान है, उसके बाद समुन्दर की मौजें मुझे थपेड़ती रहीं, यहां तक कि वह तख़्ता एक जज़ीरे के किनारे से लग गया। मैं वहां उतर पड़ी और सोचती रही कि यहां घास खाती रहूँगी। पानी पीती रहूँगी, जब तक अल्लाह जल्ल शानुहू कोई सहूलत की सूरत पैदा करे। उसी की मदद से कोई सूरत हो सकती है। चार दिन मुझे उस जज़ीरे में गुज़र गये। पांचवे दिन मुझे एक बड़ी कश्ती समुन्दर में चलती हुई नज़र आयी। मैंने एक टीले पर चढ़ कर उस कश्ती की तरफ़ इशारा किया और जो कपड़ा मेरे ऊपर था, उसको खूब हिलाया। उसमें से तीन आदमी एक छोटी नाव पर बैठ कर मेरे पास आये। मैं उनके साथ उस नाव पर बैठकर कश्ती पर पहुँची तो मेरा यह बच्चा जिस को

हब्शी ने समुन्दर में फेंक दिया था, उनमें से एक आदमी के पास था। मैं इसको देख कर इस पर गिर पड़ी। मैंने इसको चूमा, गले से लगाया, और मैंने कहा, यह मेरा बच्चा है, मेरा जिगर पारा है। वे कश्ती वाले कहने लगे, तू पागल है, तेरी अक़्ल मारी गयी है। मैंने कहा, न मैं पागल हूँ, न मेरी अक़्ल मारी गयी, मेरा अजीब क़िस्सा है। फिर मैंने उनको अपनी सरगुज़िश्त सुनाई।

यह माजरा सुनकर सब ने हैरत से सर झुका लिया और कहने लगे, तूने बड़ी हैरत की बात सुनाई और अब हम तुझे ऐसी ही बात सुनायें जिससे तुझे ताज्जुब होगा। हम उस कश्ती में बड़े लुत्फ़ से चल रहे थे। हवा मुवाफ़िक़ थी। इतने में एक जानवर समुन्दर के पानी से ऊपर आया, उसकी पुश्त पर यह बच्चा था और उसके साथ ही एक ग़ैबी आवाज़ हमने सुनी कि अगर इस बच्चे को उसकी पुश्त पर से उठा कर अपने साथ न लिया तो तुम्हारी कश्ती डुबो दी जायेगी। हममें से एक आदमी उठा और इस बच्चे को उसकी पुश्त पर से उठा लिया और वह जानवर फिर पानी के अंदर चला गया। तेरा वाक़िआ और यह वाक़िआ दोनों बड़ी हैरत के हैं और अब हम सब अहद करते हैं कि आज के बाद से अल्लाह जल्ल शानुहू हमें कभी किसी गुनाह पर न देखेगा, इसके बाद उन सब ने तौबा की। वह पाक ज़ात कितनी मेहरबान हैं बंदों के अहवाल की ख़बर रखने वाली है, बेहतरीन एहसानात करने वाली है, वह पाक ज़ात मुसीबत ज़दों की मुसीबत के वक़्त मदद को पहुँचने वाली है। *(रौज़)*

59. हज़रत अबू अम्र ज़ज्जाजी रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज के इरादे से चला और हज़रत जुनैद रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उन्होंने एक दिरम मुझे अता फ़रमाया। मैंने उसको अपने कमरबंद में बांधा लिया। इसके बाद जिस जगह भी पहुँचा, खुद ब खुद मेरा इंतिज़ाम होता चला गया। जब हज से फ़ारिग़ होकर हज़रत जुनैद रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने हाथ फैला दिया और फ़रमाया कि लाओ हमारा दिरम। मैंने ख़िदमत में पेश कर दिया। फ़रमाया, इसकी मुहर कैसी पायी? मैं ने कहा, बड़ी चालू। *(रौज़)*

60. शैख़ युसूफ़ बिन हमदान रह० फ़रमाते हैं कि मैं बसरा के रास्ते से मक्का मुकर्रमा को चला। फ़ुक़रा की एक जमाअत मेरे साथ थी, उनमें एक जवान था, जिसकी बेहतरीन सोहबत और औक़ात की हिफ़ाज़त और ज़िक्र में हर वक़्त की मश्ग़ूली से मुझे उस पर रश्क आता था। वह हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र व

मुनाजात में मश्गूल रहता। जब हम मदीना तैयबा में पहुँचे तो वह जवान बीमार हुआ और सख़्त बीमार होकर हमसे जुदा हो गया। एक दिन मैं अपने चंद रूफ़क़ा को साथ लेकर उसकी बीमार पुर्सी को गया। हमने जब उसकी हालत और बीमारी की शिद्दत देखी तो हममें से बाज़ ने मश्वरा दिया कि इस वक़्त किसी तबीब की तरफ़ रूजूअ् करना चाहिये कि इसकी बीमारी की तश्ख़ीस करे, शायद कोई दवा मुफ़ीद हो जाये, उस जवान ने यह गुफ़्तगू सुनकर आंखें खोल दीं और मुस्कुराया और कहने लगा, बुज़ुर्गों, और दोस्तों, मुवाफ़क़त के बाद मुख़ालफ़त किस क़दर बुरी चीज़ है, जब अल्लाह जल्ल शानुहू किसी बंदे के लिये एक हाल को पसंद करे और बंदा दूसरी हालत की कोशिश करे तो क्या यह अल्लाह के इरादे की मुख़ालफ़त नहीं है? हम लोग उसकी बात से शर्मिन्दा हुए, फिर उसने हमें देखा और कहने लगा कि अगर इश्क़ के मारे हुए की बीमारी के लिये कोई दवा किसी सेहत पाये हुए के पास तुम्हें मिले, तो इश्क़ के बीमार के लिये दवा तलब करो, बाक़ी ये बीमारियां तो बदन की पाकी और गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं, आख़िरत को याद दिलाने वाली हैं और इश्क़ के मारे हुए को बीमारी नफ़्स का मुशाहदा और ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ् है, फिर उसने तीन शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

तर्जुमाः- अल्लाह के हाथ में मेरी दवा है और वही मेरी बीमारी से वाक़िफ़ है। मैं अपने नफ़्स पर ख़्वाहिशात के इत्तिबाअ से ज़ुल्म कर रहा हूँ, जब किसी बीमारी की दवा करता हूँ तो मर्ज़ मेरी दवा पर ग़ालिब हो जाता है।

(रौज़)

61. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मुझ पर एक मर्तबा क़ब्ज़ (दिल तंगी) और ख़ौफ़ का शदीद ग़लबा हुआ, मैं परेशान हाल होकर बग़ैर सवारी और तोशे के मक्का मुकर्रमा चल दिया। तीन दिन तक इसी तरह बग़ैर खाए पीए चलता रहा। चौथे दिन मुझे प्यास की शिद्दत से अपनी हलाकत का अंदेशा हो गया और जंगल में कहीं साएदार दरख़्त का भी पता न था। कि उसके साए में ही बैठ जाता। मैंने अपने को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया और क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके बैठ गया और मुझे नींद सी आ गयी, तो मैंने ख़्वाब में एक शख़्स को देखा कि मेरी तरफ़ हाथ बढ़ा कर फ़रमाया, लाओ हाथ बढ़ाओ, मैंने हाथ बढ़ाया। उन्होंने मुझसे मुसाफ़ा किया और फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि तुम सही सालिम हज भी करोगे और क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत भी करोगे। मैंने कहा, अल्लाह आप पर रहम करे, आप कौन हैं, फ़रमाया मैं ख़ाज़िर हूँ। मैंने अर्ज़ किया कि मेरे लिये दुआ

कीजिये, फ़रमाया ये अल्फ़ाज़ तीन मर्तबा कहो :-

يَا لَطِيْفًا بِخَلْقِهٖ يَا عَلِيْمًا بِخَلْقِهٖ يَا خَبِيْرًا بِخَلْقِهٖ

اُلْطُفْ بِيْ يَا لَطِيْفُ يَا عَلِيْمُ يَا خَبِيْرُ

"ऐ वह पाक ज़ात,जो अपनी मख़्लूक़ पर मेहरबान है, अपनी मख़्लूक़ के हाल को जातना है, उनकी ज़रूरियात से बा ख़बर है, तू मुझ पर लुत्फ़ व मेहरबानी फ़रमा, ऐ लतीफ़, ऐ अलीम, ऐ ख़बीर।"

फिर फ़रमाया कि यह एक तोहफ़ा है, जो हमेशा काम आने वाला है जब तुझे कोई ज़ीक़ पेश आये या कोई आफ़त नाज़िल हो तो इनको पढ़ लिया कर, तो तंगी रफ़अ् हो जायेगी और आफ़त से ख़लासी होगी। यह कह कर वह तो ग़ायब हो गया मुझे एक शख़्स ने "या शैख़, या शैख़" कह कर आवाज़ दी। मैं उसकी आवाज़ से नींद से जागा तो वह शख़्स ऊँटनी पर सवार था। मुझसे पूछने लगा कि ऐसी सूरत में ऐसे हुलिये का कोई नौ जवान तो तुमने नहीं देखा मैंने कहा कि मैंने तो किसी को नहीं देखा। कहने लगा हमारा एक नौ जवान सात दिन हो गये, घर से चला गया। हमें यह ख़बर मिली कि वह हज को जा रहा है। फिर उस सवार ने मुझसे पूछा कि तुम कहां का इरादा कर रहे हो। मैंने कहा, जहां अल्लाह तआला ले जाये। उसने अपनी ऊँटनी बिठायी और उससे उतर कर एक तोशेदान में से दो रोटियां सफ़ेद, जिनके दर्मियान में हलवा रखा हुआ था, निकालीं और ऊँट पर से पानी का मश्कीज़ा उतारा और मुझे दिया। मैंने पानी पिया और एक रोटी खायी। वही मुझे काफ़ी हो गयी। फिर उसने मुझे अपने पीछे ऊँट पर सवार कर लिया। हम दो रात और एक दिन चले तो क़ाफ़िला हमें मिल गया। वहां उसने क़ाफ़िलों वालों से उस जवान का हाल दर्याफ़्त किया। मालूम हुआ कि वह क़ाफ़िले में है। वह मुझे वहां छोड़ कर तलाश में गया। थोड़ी देर के बाद जवान को साथ लिये हुए मेरे पास आया और उससे कहने लगा कि बेटा, इस शख़्स की बरकत से अल्लाह जल्ल शानुहू ने तेरी तलाश मुझ पर आसान कर दी। मैं उन दोनों को रूख़्सत करके क़ाफ़िले के साथ चल दिया। फिर मुझे वह आदमी मिला और मुझे एक लिपटा हुआ काग़ज़ दिया और मेरे हाथ चूम कर चला गया। मैंने जो उसको देखा तो उसमें पांच अशर्फ़ियां थीं। मैंने उसमें से ऊँट किराया किया और उसी से खाने पीने का इंतिज़ाम किया और हज किया। और इसके बाद मदीना तैयबा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ा-ए-अतहर की

ज़ियारत की। इसके बाद हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की और जब कभी कोई तंगी या आफ़त पेश आयी तो हज़रत ख़ाज़िर की बतायी हुई दुआ पढ़ी। मैं उनकी फ़ज़ीलत और उनके एहसान का मोअ्तरिफ़ हूँ और इस नेअ्मत पर अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार हूँ। (रौज़)

62. एक बुज़ुर्ग हज़रत ख़ाज़िर से अपनी मुलाक़ात का बहुत तवील क़िस्सा नक़ल करते हैं। आख़िर में हज़रत ख़ाज़िर ने फ़रमाया कि मैं सुबह की नमाज़ मक्का मुकर्रमा में पढ़ता हूँ और तुलूए आफ़ताब तक हतीम में रूक्ने शामी के क़रीब बैठता हूँ और ज़ुहर की नमाज़ मदीना तैयबा में पढ़ता हूँ और अस्र की बैतुल मक़्दिस में और मग़रिब की तूरे सीना पर और इशा की सद्दे सिकन्दरी पर। (रौज़)

63. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं बाज़ रूफ़क़ा के साथ अदन से चला। जब रात हुई तो मेरे पांव में कोई चीज़ लग गयी, जिसकी वजह से मैं चल न सका। तंहा समुन्दर के किनारे बैठा रह गया। मैं दिन भर का रोज़ेदार था और खाने पीने की कोई चीज़ मेरे पास न थी, मैंने इसी हाल में सोने का इरादा कर लिया। दफ़्अतन मेरे सामने दो रोटियां, उनमें एक परिंदा भुना हुआ रखा था, आयीं। मैंने परिंदे को उठा कर अलग को रख दिया कि एक काला हब्शी मेरे सामने आया, उसके हाथ में लोहे का गज़ था, मुझसे कहने लगा ओ रियाकार खा ले। मैंने एक रोटी और थोड़ा सा परिंदा खाया, और बाक़ी एक कपड़े में लपेट कर अपने सरहाने रख कर सो गया, जब मेरी आंख खुली तो देखा, कपड़ा उसी तरह मेरे सर के नीचे रखा हुआ है, और ख़ाली है न रोटी है न परिंदा। (रौज़)

64. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि सुलहा की एक जमाअत के साथ मैं एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में बैठा हुआ था। हम में एक हाशिमी बुज़ुर्ग भी थे उन पर ग़शी सी तारी हुई। जब उनको इफ़ाक़ा हुआ तो कहने लगे कि मैंने जो कुछ देखा वह तुम ने भी देखा। हमने कहा, हमें तो कुछ नज़र नहीं आया। कहने लगे कि मैंने फ़रिश्तों को देखा कि एहराम बांधे हुए तवाफ़ कर रहे हैं। मैंने उनसे पूछा कि तुम कौन हो? कहने लगे कि हम फ़रिश्ते हैं। मैंने पूछा कि तुम्हारी मुहब्बत हक़ तआला शानुहू से कैसी है? कहने लगे कि हमारी मुहब्बत अंदर से है, और तुम्हारी मुहब्बत बाहर से है। (रौज़)

65. शैख़ अबू सुलैमान दारानी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने एक साल तज्रीद

के साथ हज का और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत का इरादा किया। मैं चल रहा था, रास्ते में एक नौ जवान इराक़ी मिला, जिसकी जवानी ज़ोरों पर थी। वह भी इसी तरह सफ़र का इरादा कर रहा था, लेकिन जब वह क़ाफ़िले के साथ चलता, तो क़ुरआन पाक की तिलावत करता रहता और जब मंज़िल पर क़ाफ़िला ठहरता, तो वह नमाज़ में मश्गूल हो जाता, रात भर नमाज़ पढ़ता, दिन भर रोज़ा रखता। उसने सारा रास्ता इसी तरह तै किया, हत्ताकि हम मक्का मुकर्रमा पहुँच गये तो वह जवान मुझसे रूख़्सत होने लगा, मैं ने उससे पूछा कि बेटा, किस चीज़ ने तुझे ऐसे सख़्त मुजाहदे पर आमादा किया, जो मैं सारे रास्ते देखता चला आया। कहने लगा, अबू सुलैमान। मैंने ख़्वाब में जन्नत का एक महल देखा कि वह सारा इस तरह बना हुआ था कि उसकी एक ईंट सोने की, फिर एक ईट चांदी की ऊपर तक, उसके बाला ख़ाने भी इसी तरह बने हुए थे और उनमें हर दो बुर्जियों के दर्मियान एक एक हूर ऐसी थी कि उसका सा हुस्न व जमाल और उसकी सी चेहरे की रौनक़ किसी ने न देखी होगी, उनकी ज़ुल्फें सामने लटक रही थीं, उनमें से एक मुझे देख कर हंसने लगी तो उसके दांतों की रोशनी से जन्नत चमकने लगी। उसने कहा, ऐ जवान, अल्लाह जल्ल शानुहू के लिये मुजाहदा कर, ताकि मैं तेरे लिये हो जाऊँ, तू मेरे लिये, फिर मेरी आंख खुल गयी। यह मेरा क़िस्सा है। अब मुझ पर ज़रूरी है कि मैं इंतिहाई कोशिश करूँ और जो कोशिश करता है वह पा लेता है। यह तुमने जो कुछ मेरा मुजाहदा देखा है, उस हूर से मंगनी के वास्ते है। मैंने उससे दुआ की दर्ख़्वास्त की। वह मेरे लिये दुआ करके चला गया। अबू सुलैमान रह० कहते हैं कि उसके जाने के बाद मैं ने अपने नफ़्स को कहा कि एक हूर की तलब में अगर इतनी कोशिश हो सकती है तो हूर के रब की तलब में कैसी कोशिश होना चाहिये। *(रौज़)*

66. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा के इरादे से एक जंगल में चल रहा था। मुझे प्यास की ऐसी सख़्त शिद्दत हुई कि मैं उससे आजिज़ हो गया क़रीब ही एक क़बीला बनी मख़्ज़ूम में गया। वहां मैंने एक बहुत कमसिन लड़की को, जो निहायत ही हसीन थी, देखा कि वह अश्आर के साथ गुनगुना रही थी, मुझे उसकी उम्र के लिहाज़ से इससे बहुत ताज्जुब हुआ, इसलिये कि वह बहुत कम उम्र थी।

मैंने उससे कहा कि तुझे हया नहीं आती, यों गा रही है। कहने लगी,

जुन्नून चुप रहो, रात मैंने ख़ुशी ख़ुशी शराबे इश्क़ का एक गिलास पिया है, जिससे मैं अपने मौला के इश्क़ में नशा में हूँ। मैंने कहा, तू तो बड़ी हकीम मालूम होती है। मुझे कुछ नसीहत कर। कहने लगी, ज़ुन्नून चुप रहने को लाज़िम कर लो, और दुनिया में से सिर्फ़ इतनी रोज़ी पर क़नाअत करो, जिससे आदमी ज़िंदा रहे, ताकि जन्नत में उस पाक ज़ात की ज़ियारत हो सके जिसको कभी फ़ना नहीं। मैंने पूछा यहां पीने का पानी भी है? कहने लगी, तुझे पानी की जगह बताऊँ? मैंने सोचा कोई कुआं, चश्मा वग़ैरह बतायेगी। मैंने कहा, हां बताओ। कहने लगी, क़ियामत में पानी पीने वालों के चार दर्जे होंगे:-

1. एक जमाअत तो वह होगी, जिसको फ़रिश्ते पानी पिलायेंगे, जिसको हक़ तआला शानुहू ने :-

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ

(बैज़ा-अ लज़्ज़-तिल्लिश्शारिबी-न) में इर्शाद फ़रमाया (सूरः साफ़्फ़ात रूकूअ 2) में है कि उनके पास बहती हुई शराब का गिलास लाया जायेगा, जो सफ़ेद होगी, पीने वालों के लिये लज़ीज़ होगी।

2. दूसरी जमाअत को रिज़वान (जन्नत के नाज़िम) पिलायेंगे जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने "मिज़ाजुहू मिन तस्नीम" से ताबीर फ़रमाया (जो अम्-म के पारे में सूरः तत्फ़ीफ़ में है कि उसकी आमेज़िश तस्नीम से होगी जो एक चश्मा है, जिससे मुक़र्रब आमदी पीते हैं।)

3. और तीसरा फ़िर्क़ा वह है, जिसको ख़ुद हक़ सुब्हानुहू व तक़द्दुस पिलायेंगे, जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने

وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝

से ताबीर फ़रमाया है। (जो सूरः दह्र में है कि उनका रब उनको पाकीज़ा शराब पिलायेगा) वह लड़की कहने लगी कि ज़ुन्नून, तुम अपना भेद दुनिया में अपने मौला के सिवा किसी से न कहो, ताकि हक़ तआला शानुहू तुम्हें आख़िरत में ख़ुद पानी पिलायें।

मुसन्निफ़ कहते हैं कि शुरू में चार जमाअतों का ज़िक्र था, आख़िर में तीन ही ज़िक्र की गयीं।

4. शायद चौथी जमाअत वह है जिनको नौ उम्र लड़के पिलायेंगे

जिसको:-

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ

से ताबीर किया जो सूरः वाक़िआ में है कि उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, ये चीज़ें लेकर आमद व रफ़्त रखेंगे, आबख़ोरे और आफ़ताबे और ऐसा जामे शराब जो बहती हुई शराब से भरा जायेगा। *(रौज़)*

67. हज़रत उमर रज़ि॰ के दरवाज़े पर एक मर्तबा चंद लोग हाज़िर थे, एक बांदी गुज़री। लोगों ने कहा कि यह अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि॰ की बांदी है। आपने फ़रमाया कि नहीं, यह अमीरूल मोमिनीन की नहीं है, न उसके लिये हलाल है, यह बैतुलमाल की है, उसको बैतुलमाल से सिर्फ़ यह चीज़ जायज़ है, एक जोड़ा गर्मी का, एक सर्दी का और वह चीज़ जिससे हज और उमरा कर सके और एक मुतवस्सित आदमी की रोज़ी जो न ज़्यादा अमीर हो, न ज़्यादा ग़रीब।

असलम हज़रत उमर रज़ि॰ के ग़ुलाम फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि॰ की रग़बत ताज़ा मछली की मालूम हुई। आपके ग़ुलाम यरफ़ा रज़ि॰ अपनी ऊँटनी पर सवार होकर समुन्दर के किनारे से मछली ख़रीद कर लाये और तेज़ आमद व रफ़्त की वजह से ऊँटनी को पसीना आ गया। उन्होंने वापस आकर ऊँटनी को ख़ूब धो दिया कि पसीना मालूम न हो। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि चलो, तुम्हारी ऊँटनी को देखें, तशरीफ़ लाये तो उसके कान के नीचे पसीना था जो धोने से रह गया था। उसको देख कर फ़रमाया कि यह धोना भूल गये (गोया यह तअ्ना था कि इसका पसीना साफ़ कर दिया) इसके बाद फ़रमाया कि एक आदमी की ख़्वाहिशे नफ़्स के वास्ते तुमने इस जानवर को अज़ाब में मुब्तला किया। उमर इस मछली को वल्लाह, बिल्कुल नहीं चखेगा। अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि॰ कहते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ि॰ के साथ हज को गया। आपके लिये न ख़ेमा लगता था, न छोलदारी, एक चादर या चमड़ा किसी दरख़्त के नीचे डाल दिया जाता, उसके साए में आप तशरीफ़ रखते। *(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)*

68. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह॰ मशहूर बुज़ुर्ग हैं, अरफ़ात के मैदान में लोग तो सब के सब कसरत से दुआयें मांग रहे थे और वह ऐसी बुरी तरह रो रहे थे, जैसे किसी औरत का बच्चा मर गया हो और वह आग में जल रही हो। जब ग़ुरूब का वक़्त होने लगा, तो अपनी दाढ़ी पकड़ कर आसमान की तरफ़ मुंह

उठाया, और फ़रमाने लगे कि अगर तू माफ़ भी कर दे तब भी मेरी बदहाली पर इंतिहाई अफ़सोस है। *(एह्या)*

इब्ने अरबी रह० ने भी मुहाज़रात में इस क़िस्से को नक़ल किया और इस पर यह इज़ाफ़ा किया कि मुतर्रिफ़ रह० यह दुआ कर रहे थे, "ऐ अल्लाह, मेरी मौजूदगी की वजह से इन सब को तू महरूम न फ़रमा और बक्र बिन अब्दुल्लाह रह० यह कह रहे थे, यह अरफ़ात का मैदान किस क़दर अशरफ़ मक़ाम है और इसके हाज़िरीन के लिये किस क़दर बाइसे रिज़ा है, अगर मेरा वजूद यहां न होता"।

69. रबीअ् बिन सुलैमान रह० कहते हैं कि मैं हज के लिये जा रहा था। मेरे साथ मेरे भाई थे और एक जमाअत थी। जब हम कूफ़े में पहुँचे तो वहां ज़रूरियाते सफ़र ख़रीदने के लिये बाज़ारों में घूम रहा था कि एक वीरान सी जगह में एक ख़च्चर मरा हुआ पड़ा था और एक औरत जिसके कपड़े बहुत पुराने, बोसीदा थे चाकू लिये हुए उसके टुकड़े गोश्त के काट काट कर एक ज़ंबील में रख रही थी। मुझे यह ख़्याल हुआ कि यह मुर्दार गोश्त लिये जा रही है, इस पर सुकूत करना हरगिज़ न चाहिये, अजब नहीं, यह कोई भटियारी औरत है। यही पका कर लोगों को खिला देगी। मैं चुपके से उसके पीछे हो लिया, इस तरह कि वह मुझे न देखे। वह औरत एक बड़े मकान में पहुँची, जिसका दरवाज़ा भी ऊँचा था। उसने जाकर दरवाज़ा खटखटाया। अंदर से आवाज़ आयी कौन है? उसने कहा, खोलो मैं ही बद हाल हूँ। दरवाज़ा खोला गया और उसमें से चार लड़कियां आयीं, जिनके चेहरे से बदहाली और मुसीबत के आसार ज़ाहिर हो रहे थे। वह औरत अंदर गयी और वह ज़ंबील उन लड़कियों के सामने रख दी। मैं किवाड़ों की दराज़ों से झांक रहा था। मैंने देखा, अंदर से घर बिल्कुल बर्बाद ख़ाली था। उस औरत ने रोते हुए लड़कियों को आवाज़ दी कि लो, इसको पका लो और अल्लाह का शुक्र अदा करो। अल्लाह तआला का अपने बंदों पर इख़्तियार है, उसी के क़ब्ज़े में लोगों के क़ुलूब हैं। वे लड़कियां उसको काट काट कर आग पर भूनने लगीं। मुझे बहुत ज़ीक़ हुई। मैंने बाहर से आवाज़ दी, ऐ अल्लाह की बंदी! अल्लाह के वास्ते इसको न खाओ। वह कहने लगी तू कौन है? मैंने कहा मैं एक परदेसी आदमी हूँ, कहने लगी ऐ परदेसी तू हमसे क्या चाहता है? हम ख़ुद ही मुक़द्दर के क़ैदी हैं। तीन साल से हमारा न कोई मुईन, न मदद गार, तू हमसे क्या चाहता है? मैंने कहा, मजूसियों के एक फ़िर्क़े के सिवा मुर्दार का खाना किसी मज़हब में

जायज़ नहीं।

वह कहने लगी, हम ख़ानदाने नुबुव्वत के शरीफ़ (सैय्यद) हैं। इन लड़कियों का बाप बड़ा शरीफ़ था। वह अपने ही जैसों से इनका निकाह करना चाहता था, इसकी नौबत न आयी, उसका इंतिक़ाल हो गया जो तर्का उसने छोड़ा था, वह ख़त्म हो गया। हमें मालूम है कि मुरदार का खाना जायज़ नहीं, लेकिन इज़्तिरार में जायज़ हो जाता है। हमारा चार दिन का फ़ाक़ा है।

रबीअ् रह० कहते हैं कि उसके हालात सुनकर मुझे रोना आ गया और मैं रोता हुआ दिल बेचैन वहां से वापस हुआ और मैंने अपने भाई से आकर कहा कि मेरा इरादा तो हज का नहीं रहा। उसने मुझे बहुत समझाया, हज के फ़ज़ाइल बताये कि हाजी ऐसी हालत में लौटता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं रहता वग़ैरह वग़ैरह। मैंने कहा, बस लम्बी चौड़ी बातें न करो। यह कह कर मैंने अपने कपड़े और एहराम की चादरें और जो सामान मेरे साथ था वह सब लिया और नक़द छः सौ दिरम थे, वे लिये और उनमें से सौ दिरम का आटा ख़रीदा और सौ दिरम का कपड़ा ख़रीदा और बाक़ी दिरम जो बचे वे आटे में छुपा कर उस बुढ़िया के घर पहुँचा और यह सब सामान और आटा वग़ैरह उसको दे दिया। उस औरत ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और कहने लगी, ऐ इब्ने सुलैमान, जा अल्लाह जल्ल शानुहू तेरे अगले पिछले सब गुनाह माफ़ करे और तुझे हज का सवाब अता करे और अपनी जन्नत में तुझे जगह अता फ़रमाये, और इसका ऐसा बदल अता फ़रमाये, जो तुझे भी ज़ाहिर हो जाये। सबसे बड़ी लड़की ने कहा, अल्लाह जल्ल शानुहू तेरा अज्र दो चंद करे और तेरे गुनाह माफ़ करे, दूसरी ने कहा, अल्लाह जल्ल शानुहू तुझे इस से बहुत ज़्यादा अता फ़रमाये, जितना तूने हमें दिया। तीसरी ने कहा, हक़ तआला शानुहू हमारे दादे के साथ तेरा हश्र करे। चौथी ने, जो सबसे छोटी थी कहा, ऐ अल्लाह, जिसने हम पर एहसान किया, तू उसका नेअ्मल बदल उसको जल्दी अता कर और उसके अगले पिछले सब गुनाह माफ़ कर।

रबीअ् रह० कहते हैं कि हुज्जाज का क़ाफ़िला रवाना हो गया। मैं कूफ़ा ही में मजबूरन पड़ा रहा कि वे सब हज से फ़ारिग़ होकर लौट भी आये। मुझे ख़्याल हुआ कि इन हुज्जाज का इस्तिक़बाल करूँ, उनसे अपने लिये दुआ कराऊं किसी की मक़बूल दुआ मुझे भी लग जाये। जब हुज्जाज का एक क़ाफ़िला मेरी आंखों के सामने आ गया तो मुझे अपने हज से महरूमी पर बहुत अफ़सोस हुआ और रंज की वजह से मेरे आंसू निकल आये। जब मैं उनसे मिला तो मैंने कहा,

अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हारा हज क़ुबूल करे और तुम्हारे इख़्राजात का बदल अता फ़रमाये, उनमें से एक ने कहा कि यह दुआ कैसी? मैंने कहा ऐसे शख़्स की दुआ, जो दरवाज़े तक की हाज़िरी से महरूम हो रहा हो, वे कहने लगे, बड़े ताज्जुब की बात है, अब तू वहां जाने से इंकार करता है, तू हमारे साथ अरफ़ात के मैदान में नहीं था? तूने हमारे साथ रमी-ए-जमरात नहीं की? तूने हमारे साथ तवाफ़ नहीं किए? मैं अपने दिल में सोचने लगा कि यह अल्लाह का लुत्फ़ है, इतने में खुद मेरे शहर के हाजियों का क़ाफ़िला आ गया। मैंने कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हारी सई मश्कूर फ़रमाये, तुम्हारा हज क़ुबूल फ़रमाये। वह भी यही कहने लगे कि तू हमारे साथ अरफ़ात पर नहीं था या रमी-ए-जमरात नहीं की, अब इंकार करता है? उनमें से एक शख़्स आगे बढ़ा और कहने लगा कि भाई, अब इंकार क्यों करते हो? क्या बात है? आख़िर तुम हमारे साथ मक्का में नहीं थे या मदीना में नहीं थे? जब हम क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत करके बाबे जिब्रील से बाहर को आ रहे थे, उस वक़्त इज़्दिहाम की कसरत की वजह से तुमने यह थैली मेरे पास अमानत रखवायी थी, जिसकी मोहर पर लिखा हुआ है (मन आ-म-लना रब्बि-ह) "हमसे जो मामला करता है, नफ़ा कमाता है" यह तुम्हारी थैली वापस है।

रबीअ् रह० कहते हैं कि वल्लाह, मैंने उस थैली को कभी इससे पहले देखा भी न था, उसको लेकर घर वापस आया, इशा की नमाज़ पढ़ी, अपना वज़ीफ़ा पूरा किया, इसके बाद इसी सोच में जागता रहा कि आख़िर यह क़िस्सा क्या है? इसी में मेरी आंख लग गयी, तो मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की, मैंने हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया और हाथ चूमे। हुज़ूर सल्ल० ने तबस्सुम फ़रमाते हुए सलाम का जवाब दिया और इर्शाद फ़रमाया कि ऐ रबीअ्, आख़िर हम कितने गवाह इस पर क़ायम करें कि तूने हज किया, तू मानता ही नहीं, सुन बात यह है कि तूने उस औरत पर, जो मेरी औलाद थी, सदक़ा किया और अपना ज़ादे राह ईसार करके अपना हज मुलतवी कर दिया, तो मैंने अल्लाह जल्ल शानुहू से दुआ की कि यह इसका नेअ्मल बदल तुझे अता फ़रमाये, तो हक़ तआला शानुहू ने एक फ़रिश्ता तेरी सूरत का बना कर उसको हुक्म फ़रमा दिया कि वह क़ियामत तक हर साल तेरी तरफ़ से हज किया करे और दुनिया में तुझे यह अिवज़ (बदल) दिया कि छः सौ दिरम के बदले छ सौ दीनार (अशर्फ़ियां) अता कीं, तू अपनी आंख को ठंडी रख। फिर हुज़ूर सल्ल० ने भी यही अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए :-

"मन आ-म-लना रबि-ह"

रबीअ् रह॰ कहते हैं कि जब मैं सोकर उठा तो उस थैली को खोला, उसमें छ: सौ अशर्फ़ियां थीं। *(रूश्फ़तुस्साबी)*

70. सैय्यद समहौदी रह॰ ने जवाहर में इसी क़िस्म का दूसरा क़िस्सा लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह॰ का मामूल यह था कि वह एक साल हज किया करते और एक साल जिहाद किया करते। वह फ़रमाते हैं कि एक साल जबकि मेरा हज का साल था, मैं पांच सौ अशर्फ़ियां लेकर हज के इरादे से चला और कूफ़े में जिस जगह ऊँट फ़रोख़्त होते हैं, पहुँचा ताकि ऊँट ख़रीदूँ। वहां मैंने देखा कि कूड़ी पर एक बत्त (बतख़) मरी पड़ी हुई है और एक औरत उसके पास बैठी हुई उसके पर नोच रही है। मैं उस औरत के क़रीब गया और उससे पूछा, यह क्या हरकत कर रही है? वह कहने लगी, जिस काम से तुम्हें कोई वास्ता नहीं, उसकी तहक़ीक़ की क्या ज़रूरत ? मुझे उसके कहने से कुछ सोच सा हुआ, तो मैंने पूछने पर इसरार किया। वह कहने लगी, तुम्हारे इसरार ने मुझे अपना हाल ज़ाहिर करने पर मजबूर ही कर दिया। मैं सैयदानी हूँ। मेरे चार लड़कियां हैं। उनके बाप का अभी इंतिक़ाल हो गया है। आज चौथा दिन है कि हमने कुछ नहीं चखा। ऐसी हालत में मुर्दार हलाल है। मैं यह बत्त ले जाकर उन लड़कियों को खिलाऊँगी।

इब्ने मुबारक रह॰ कहते हैं कि मुझे अपने दिल में नदामत हुई और मैंने उस औरत से कहा अपनी गोद फैला। उसने फैलायी, मैंने पांच सौ अशर्फ़ियां उसकी गोद में डाल दीं। वह सर झुकाये बैठी रही। मैं वह अशर्फ़ियां डाल कर घर चला आया और हज का इरादा मुलतवी कर दिया और अपने घर वापस हो गया।

जब हुज्जाज फ़रागत के बाद आये मैं उनसे मिला, तो जिससे मैं मिलता और यह कहता कि हक़ तआला शानुहू तुम्हारा हज क़ुबूल करे, वही यह कहता कि अल्लाह तआला तुम्हारा भी हज क़ुबूल करे, और जब मैं कोई बात करता तो वे कहते कि हां हां फ़लाँ जगह जब तुमसे मुलाक़ात हुई थी। मैं बड़ी हैरत में था, यह क्या मामला है? मैंने रात को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अब्दुल्लाह, ताज्जुब की बात नहीं है कि तूने मेरी औलाद में से एक मुसीबतज़दा की मदद की थी, मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि तेरी तरफ़ से एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दे, जो

हर साल तेरी तरफ़ से क़ियामत तक हज करता रहे, अब तुझे इख़्तियार है चाहे हज करना चाहे न करना। (रश्फ़ा)

उश्शाक़ और मुख़्लिसीन के वाक़िआत की न कोई हद है न कोई इंतिहा। पौने चौदह सौ साल में से हर साल में कितने उश्शाक़ और मुख़्लिसीन ऐसे होंगे जिनके अजीब वाक़िआत गुज़रे। कोई लिखे तो कहां तक लिखे। सत्तर का अदद अहादीस में भी कसरत पर दलालत करता है, इसलिये इसी अदद पर इस सिलसिले को ख़त्म करता हूँ, अलबत्ता इन वाक़िआत में तीन अम्र क़ाबिले लिहाज़ हैं :-

1. अव्वल यह कि ये अह्वाल और वाक़िआत जो गुज़रे हैं वे इश्क़ और मुहब्बत पर मब्नी हैं और इश्क़ के क़वानीन आम क़वानीन से बालातर हैं :-

"मक्तबे इश्क़ के अंदाज़ निराले देखे,
उसको छुट्टी न मिली, जिसने सबक़ याद किया।।"

इश्क़ के ज़वाबित किसी उसूल के मातहत नहीं होते, न ये पढ़ने लिखने से आते हैं, बल्कि इश्क़ पैदा करने से आते हैं :-

"मुहब्बत तुझ को आदाबे मुहब्बत खुद सिखा देगी"

अपना काम कोशिश और सई करके इस समुन्दर में कूद पड़ना है, इसके बाद हर मेहनत आसान है और हर मशक़्क़त लज़ीज़ है, हर वह चीज़ जो इश्क़ से बे बहरा है लोगों के लिये मुसीबत और हलाकत है, वह इस समुन्दर के ग़ोता लगाने वाले के लिये आसान और लुत्फ़ व फ़रहत की चीज़ है। इस समुन्दर में ग़ोता लगाने वाले अंजाम और अवाक़िब की मस्लहत बीनियों से बालातर होते हैं:-

"अबस है जुस्तुजू बह्रे मुहब्बत के किनारे की,
बस उसमें डूब ही जाना है ऐ दिल, पार हो जाना।।

लिहाज़ा इन वाक़िआत को इसी ऐनक से देखने की ज़रूरत है और इस रंग में रंग जाने की कोशिश करना चाहिये, लेकिन जब तक इश्क़ पैदा न हो, उस वक़्त तक न तो इन वाक़िआत से इस्तिदलाल करना चाहिए और न इन पर ऐतिराज़ करना चाहिए, इसलिये कि वे इश्क़ के ग़लबे में सादिर होते हैं।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मुहब्बत का प्याला पी लेता

है, वह मख़्मूर हो जाता है, उसके कलाम में भी वुस्अत आ जाती है, अगर उसका वह नशा ज़ाइल हो जाए तो वह देखे कि जो कुछ उसने ग़लबे में कहा है, वह एक हाल है, हक़ीक़त नहीं, और उश्शाक़ के कलाम से लज़्ज़त तो हासिल की जाती है, उस पर एतिमाद नहीं किया जाता। *(एह्या, 3)*

2. दूसरा अम्र यह है कि इन क़िस्सों में अक्सर मवाक़े में तवक्कुल की वे मिसालें गुज़री हैं जो हम जैसे ना अह्लों के अमल तो दर किनार ज़ेहनों से भी बालातार हैं। उनके मुताल्लिक़ यह बात ज़ेहन में रखना चाहिए कि तवक्कुल का मुन्तहा यही है, जो इन वाक़िआत से ज़ाहिर होता है और वह पसंदीदा भी है और उसके कमाल पर पहुँचने की सई और कम से कम तमन्ना तो होना ही चाहिए, लेकिन जब तक यह दर्जा हासिल न हो उस वक़्त तक तर्के असबाब न करना चाहिए।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यहया रह० से पूछा कि तवक्कुल की हक़ीक़त क्या है? उन्होंने फ़रमाया कि अगर बहुत बड़े अज़दहे के मुंह में तू हाथ दे दे और वह पहुँचे तक उसको खा ले तो उस वक़्त भी तुझे अल्लाह जल्ल शानुहू के सिवा किसी का ख़ौफ़ न हो, मैं इसके बाद बा यज़ीद रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ कि उनसे इसके मुताल्लिक़ दर्याफ़्त करूँ, उनके किवाड़ बंद थे। मैंने दरवाज़ा खटखटाया, उन्होंने अंदर ही से जवाब दे दिया कि तुझे अब्दुर्रहमान रह० के जवाब से किफ़ायत न हुई, जो मेरे पास पूछने के वास्ते आया है। मैंने अर्ज़ किया कि किवाड़ तो खोल दीजिये। फ़रमाया तुम इस वक़्त मुलाक़ात के लिये तो आये नहीं, बात पूछने आये थे, उसका जवाब मिल गया और किवाड़ न खोले। एक साल के बाद मैं दोबारा उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो फ़ौरन किवाड़ खोल दिये और फ़रमाया कि इस वक़्त तुम मिलने के लिये आये हो। *(रौज़)*

मुल्ला अली क़ारी रह० ने शरहे मिश्कात में लिखा है कि अस्बाब का इख़्तियार करना तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं है, और अगर कोई शख़्स ख़ालिस तवक्कुल का इरादा करे तो इसमें भी मुज़ाईक़ा नहीं है, बशर्ते कि मुस्तक़ीमुल हाल हो, अस्बाब छोड़ कर परेशान न हो, बल्कि अल्लाह जल्ल शानुहू के सिवा किसी दूसरे का ख़्याल भी उसको न आवे, और जिन हज़रात ने तर्के अस्बाब की मज़म्मत फ़रमायी है, उसकी वजह यह है कि लोग उसका हक़ अदा नहीं करते, बल्कि दूसरे लोगों के तोशादानों पर निगाह रखते हैं। *(मिर्क़ात, 3)*

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अगर तुम अल्लाह जल्ल शानुहू पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा कि उसका हक़ है तो तुम को ऐसी तरह रिज़्क़ अता फ़मराये जैसे परिंदों को देता है कि सुबह को भूखे घोंसलों से निकलते हैं और शाम को पेट भरे वापस होते हैं।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ बिल्कुल्लिया मुन्क़तेअ् हो जाये तो हक़ तआला शानुहू उसकी हर ज़रूरत को पूरा करते हैं और ऐसी तरह रोज़ी पहुँचाते हैं कि जिसका उसको गुमान भी नहीं होता।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स यह चाहता है कि वह सबसे ज़्यादा मुस्तग़नी हो, वह ऐसा बन जाए कि उसको अल्लाह जल्ल शानुहू की अता पर इससे ज़्यादा भरोसा हो जितना उस माल पर होता है जो अपने पास मौजूद है। *(एह्या, 4)*

इसका अंदाज़ा दो क़िस्सों से होता है, जो अहादीस में मशहूर हैं :-

एक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का मशहूर क़िस्सा कि जब हुज़ूर सल्ल० ने ग़ज़्वा-ए-तबूक के लिये चंदा किया तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० जो कुछ घर में था, सब कुछ ले आये और जब हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि घर में क्या छोड़ा तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू और उसका रसूल सल्ल०। हिकायाते सहाबा रज़ि० में यह क़िस्सा नक़ल भी कर चुका हूँ।

दूसरा वाक़िआ यह है कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और एक सोने की डली अंडे के बराबर पेश की और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह, मुझे एक मादिन (कान) से मिल गयी, मैं इसको अल्लाह के रास्ते में देता हूँ। इसके सिवा मेरे पास कोई चीज़ नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने उससे ऐराज़ फ़रमाया। उन साहब ने दूसरी और तीसरी मर्तबा इसी तरह इसरार से पेश किया। हुज़ूर सल्ल० ने उसको लेकर ऐसे ज़ोर से फेंका कि अगर उनके लग जाती तो ज़ख़्मी कर देती और यह इर्शाद फ़रमाया कि बाज़ आदमी अपना सारा माल सदक़ा कर देते हैं, फिर लोगों के सामने हाथ फैलाने के वास्ते बैठ जाते हैं। *(अबूदाऊद)*

इन साहब का एतिमाद अलल्लाह और तवक्कुल हज़रत सिद्दीके अकबर के मुक़ाबले में क्या हो सकता था, इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० ने वहां सब कुछ क़ुबूल फ़रमा लिया और यहां नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया।

इस सिलसिले में हमारे अकाबिर का तर्जे अमल बहुत ही अजीब और पसंदीदा है, और वह वह है, जिसको हज़रते अक़्दस सैय्यिदुत्ताइफ़: शैख़ुल मशाइख़ शाह वलिय्युल्लाह साहब रह० ने अपने उस रिसाले में तहरीर फ़रमाया है, जिसमें अपने मुबश्शिरात को जमा किया है, फ़रमाते हैं कि मैंने एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रूहानी सवाल किया कि अस्बाब के इख़्तियार करने में और उसके छोड़ने में अफ़ज़ल चीज़ कौन सी है, तो मुझ पर हुज़ूर सल्ल० का एक रूहानी फ़ैज़ हुआ, जिस की वजह से मेरा क़ल्ब अस्बाब और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से बिल्कुल सर्द पड़ गया। उसके थोड़ी देर बाद यह हालत ज़ायल हुई तो मैंने अपनी तबीअत को अस्बाब की तरफ़ माइल पाया और अपनी रूह को अस्बाब से हटा कर अल्लाह को सौंप देने की तरफ़ माइल पाया।

(दुर्रे समीन)

हक़ीक़त में यह बेहतरीन सूरत है कि इसमें वे इश्कालात भी पैदा नहीं होते जो तर्के अस्बाब में अक्सर पैदा हो जाते हैं। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि ग़िना माल की कसरत से नहीं होता, बल्कि ग़िना हक़ीक़त में दिल का ग़िना है।

(मिश्कात)

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि तवक्कुल के तीन दर्जे हैं :-

1. पहला दर्जा तो ऐसा है जैसा कि कोई शख़्स किसी मुक़दमे में किसी होशियार माहिर तजुर्बेकार को वकील बनाले कि वह हर चीज़ में उस वकील की तरफ़ रूजुअ् करता है, लेकिन उसका यह तवक्कुल फ़ानी है, कसबी है, उसके अपने तवक्कुल का शऊर और एहसास है।

2. दूसरा दर्जा जो पहले से आला है, वह ऐसा है जैसा कि ना समझ बच्चे का अपनी मां की तरफ़, कि वह हर बात में उसी को पुकारता है और जब कोई घबराहट या तक्लीफ़ की बात उसको पेश आती है तो सबसे पहले उसके मुंह से अम्मां निकलता है, इन ही दोनों की तरफ़ हज़रत सहल रज़ि० ने इशारा किया है जबकि उनसे किसी ने पूछा कि तवक्कुल का अदना दर्जा क्या है? फ़रमाया कि उम्मीदों का ख़त्म कर देना। फिर साइल ने पूछा कि दर्मियानी दर्जा क्या है? फ़रमाया कि इख़्तियार का छोड़ देना। फिर साइल ने पूछा कि आला दर्जा क्या है? फ़रमाया कि उसको वह पहचान सकता है, जो दूसरे दर्जे पर पहुँच जाये।

3. इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि तीसरा दर्जा जो सबसे आला है,

वह यह कि अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ ऐसा हो जाए जैसा कि मुर्दा नहलाने वाले के हाथ में है कि उसको अपनी कोई हरकत रहती ही नहीं। इसी दर्जे पर पहुँच कर अल्लाह जल्ल शानुहू से मांगने का भी मुहताज नहीं रहता, वह खुद ही बिला तलब उसकी ज़रूरियात का तकफ़्फुल करता है जैसा कि नहलाने वाला खुद ही मय्यत की ज़रूरियाते ग़ुस्ल को पूरा करता है। *(एहया 4)*

इस पर यह इश्काल कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आम तरीक़ अस्बाब के इख़्तियार का था, सही है लेकिन हक़ यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के शायाने शान वही हालत थी जिसको हुज़ूर सल्ल० ने इख़्तियार फ़रमाया। अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात इन वाक़िआत की नौइयत के होते तो उम्मत बड़े सख़्त इब्तिला में पड़ जाती। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उम्मत पर शफ़्क़त की वजह से इसका बहुत एहतिमाम था कि ऐसी चीज़ इख़्तियार न फ़रमायें जिसमें उम्मत को मशक़्क़त हो।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाश्त की नमाज़ न पढ़ते थे और मैं पढ़ती हूँ। बेशक हुज़ूर सल्ल० बाज़ अमल बावजूद कि हुज़ूर सल्ल० की ख़्वाहिश उसके करने की होती थी, इस ख़ौफ़ से छोड़ देते थे कि कहीं उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाये। *(अबू दाऊद)*

हज़रत आइशा रज़ि० के इस इर्शाद का मतलब कि हुज़ूर सल्ल० नहीं पढ़ते थे और मैं पढ़ती हूँ एहतिमाम और दवाम है, कि जिस शिद्दते एहतिमाम से हज़रत आइशा रज़ि० पढ़ती थीं, हुज़ूर सल्ल० उतने एहतिमाम से न पढ़ते थे, वरना बीसयों रिवायात में हुज़ूर सल्ल० का चाश्त की नमाज़ पढ़ना वारिद हुआ है और यक़ीनन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रूही फ़िदाहु अबी व उम्मी, अगर इतने शदीद एहतिमाम से पढ़ते, तो यही चीज़ उसको वाजिब बना देती।

तरावीह के बारे में बड़ी कसरत से रिवायात में वारिद हुआ है कि हुज़ूर सल्ल० ने चंद रात पढ़ीं और फिर छोड़ दीं। सहाबा-ए-किराम रज़ि० को इसका इश्तियाक़ इतना बढ़ा कि हद नहीं। जब चंद रातों के बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ख़ेमे से बाहर तशरीफ़ नहीं लाए तो सहाबा-ए-किराम रज़ि० को यह ख़्याल हुआ कि शायद नींद की वजह से आंख लग गयी, इसलिये

ऐसी चीज़ें इख़्तियार कीं, जिनसे बग़ैर जगाए आंख खुल जाये। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हारी हकरतें देखता रहा और बिहम्दिल्लाह उस रात मैं ग़ाफ़िल भी न था, लेकिन मुझे इसके सिवा कोई चीज़ निकलने से मानेअ् न हुई कि मैं इससे डरा कि तुम पर फ़र्ज़ न हो जाये। अगर तुम पर फ़र्ज़ हो जाती तो इसका निभाना तुम्हें मुश्किल हो जाता। *(मिश्कात-अबू दाऊद)*

और जब यह हालत है कि हुज़ूर सल्ल॰ बावजूद ख़्वाहिश के अ-म-दन (जानबूझ कर) रूख़्सत पर अमल फ़रमाते थे, तो हुज़ूर सल्ल॰ के लिये उसका सवाब भी वाजिब और अज़ीमत ही का होता था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैंने यह सुना कि बैठ कर नमाज़ पढ़ने का सवाब खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से आधा तो है। मैं हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक मर्तबा हाज़िर हुआ तो हुज़ूर सल्ल॰ बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे थे। मैं सर पर हाथ रख कर बैठ गया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अब्दुल्लाह बिन अम्र, तुम्हें क्या हो गया? उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ मैंने यह सुना था कि आप ने यह इर्शाद फ़रमाया है कि बैठकर नमाज़ पढ़ने का सवाब खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से आधा है। अब मैंने देखा कि आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुमने सही सुना, लेकिन मैं इसमें तुम जैसा नहीं हूँ। हुज़ूर सल्ल॰ के इस पाक इर्शाद का मतलब कि "तुम जैसा नहीं हूँ" यही हैं कि मेरे लिये आधा सवाब नहीं है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान तो बहुत आला व अरफ़अ् है। इसमें उलमा का दर्जा भी मशाइख़े सुलूक से मुम्ताज़ है और दोनों जमाअतों की दो अलाहिदा शानें हैं।

एक हदीस में इस क़िस्म का मज़्मून वारिद हुआ है कि जब कोई शख़्स किसी को हदया दे और उसके पास और लोग भी हों तो वह हदया मुश्तरक है। इस हदीस का क्या मतलब है? और किस क़िस्म का हदया इससे मुराद है? और मुहद्दिसाना हैसियत से यह हदीस किस दर्जे की है? ये मुस्तक़िल बहसें अपनी जगह पर हैं, लेकिन इस हदीस की बिना पर अह्ले इल्म की ज़बान पर अल् हदाया मुश्त-र-क-तुन "हद्या में शिर्कत है," शाये है।

एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में किसी शख़्स ने कोई हदया भेजा। हाज़िरीन में से किसी ने मिज़ाहन कह दिया कि "अल हदाया मुश्त-र-क-तुन्"। उन बुज़ुर्ग ने इर्शाद फ़रमाया कि शिर्क ही से बचने के वास्ते तो इतने दिनों से मुजाहदे कर रहे

हैं, शिर्कत हमें गवारा नहीं। यह तुम्हारी नज़्र है और जब वह चीज़ उनसे न उठी तो ख़ादिम से फ़रमा दिया कि यह इनके घर दे आओ।

हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह० की ख़िदमत में किसी ने हद्या भेजा, वहां भी किसी ने मज्मे में से कहा "अल् हदाया मुश्त-र-क-तुन," हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह० ने फ़रमाया कि यह हद्या इससे मुराद नहीं है, यह कह कर ख़ादिम से फ़रमा दिया कि इस को मेरे घर दे आओ।

उलमा का इर्शाद है कि दोनों क़िस्से अपनी अपनी जगह पर निहायत मौज़ूं हैं। एक ज़ाहिद बुज़ुर्ग की वही शान थी और एक फ़क़ीह के लिये यही मुनासिब था, इसलिये कि अगर यह मुश्तरक क़रार देते तो फ़िक़्ह के एतिबार से एक इमाम का मज़हब बन जाता और उम्मत के लिये दिक़्क़त होती।

साहिबे रौज़ लिखते हैं कि जल्बे मन्फ़अत और दफ़्-ए मज़र्रत के अस्बाब का इख़्तियार करना ही तरीक़ा जम्हूर अंबिया और जम्हूर औलिया का है, लेकिन इससे उन औलिया-ए-किराम पर जो मज़र्रतों से न बचते थे और अपने लिये अस्बाब इख़्तियार न फ़रमाते थे, एतिराज़ नहीं हो सकता, इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शरीअते मुतहहरा पर चलाने वाले थे, इसलिये ऐसे सहल रास्ते पर चलाते थे, जिस पर अवाम व ख़वास सब चल सकें, और अगर क़ाफ़िलों का चलाने वाला किसी ऐसे मुश्किल रास्ते पर क़ाफ़िले को ले जाए जिस पर वह ख़ुद तो अपनी क़ुव्वत से चल सकता हो लेकिन काफ़िले की अक्सरियत उस रास्ते की मुतहम्मिल न हो तो वह क़ाफ़िले वालों के ऊपर मेहरबान शुमार न होगा और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आलीशान ख़ुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ने यह बतायी :-

عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ٥(توبه)

पूरी आयते शरीफ़ा का तर्जुमा और मतलब यह है :-

"(ऐ लोगों) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाये हैं, जो तुम्हारी जिन्स से हैं, जिनको तुम्हारी मज़र्रत की बात निहायत गरां गुज़रती है, तुम्हारी मन्फ़अत के बड़े ख़्वाहिशमंद रहते हैं। (यह बात तो सब के साथ है, फिर बिल ख़ुसूस) मोमिनीन के साथ तो बड़े शफ़ीक़ और मेहरबान हैं।"

पस अगर क़ाफ़िले के क़वी लोग किसी मस्लहत से सख़्त रास्ते को

इख़्तियार कर लें तो क़ाफ़िले का ले जाने वाला उनको न रोकेगा। (रौज़)

यही वजह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इमामों को तवील नमाज़ पढ़ाने पर निहायत शिद्दत से डांटते थे, और यह इर्शाद फ़रमाते थे कि जो इमाम बने वह ज़रूर हल्की नमाज़ पढ़े और जो अपनी तंहा नमाज़ पढ़े, वह जितनी चाहे लंबी नमाज़ पढ़े।

3. तीसरी बात जो इन वाक़िअता में क़ाबिले लिहाज़ है और वह भी हक़ीक़त में पहली ही बात पर मुतफ़र्रेअ् है, वह यह है कि बाज़ वाक़िआत में ऐसी शिद्दत मिलती है, जो सरसरी नज़र में अपने आप को हलाकत में डालना है, और बज़ाहिर यह नाजायज़ मालूम होता है। इसके मुताल्लिक़ यह बात ज़रूर समझ लेना चाहिए कि ये वाक़िआत बमंज़िला दवा के हैं और दवा में तबीबे हाज़िक़ बसा औक़ात संखिया भी इस्तेमाल कराया करता है, लेकिन इसका इस्तेमाल तबीब की राय के मुवाफ़िक़ तो मुनासिब है, बल्कि बसा औक़ात ज़रूरी, लेकिन बिना उसके मश्वरे के नाजायज़ और मूजिबे हलाकत।

इसी तरह इन वाक़िआत में जिन हाज़िक़ तबीबों ने इन दवाओं का इस्तेमाल किया है, उन पर ऐतिराज़ अपनी नादानी और फ़न से नावाक़फ़ियत पर मब्नी (आधारित) है, लेकिन जो ख़ुद तबीब न हो और किसी तबीब का उस को मश्वरा हासिल न हो उसको ऐसे उमूर जो शरीअते मुतहहरा के ख़िलाफ़ मालूम होते हों, इख़्तियार करना जायज़ नहीं हैं, अलबत्ता फ़न के अइम्मा पर क़वाइद से वाक़िफ़ लोगों पर ऐतिराज़ में जल्दी करना, बिल ख़ुसूस ऐसे लोगों की तरफ़ से जो ख़ुद वाक़फ़ियत न रखते हों, ग़लत चीज़ है और हलाकत में अपने आप को डालना हर हाल में नाजायज़ नहीं है। अगर दीनी मस्लहत उसकी मुतक़ाज़ी हो तो फिर मुबाह से भी आगे बढ़ जाता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू दो शख़्सों पर बड़ा ताज्जुब फ़रमाते हैं, यानी उनसे बहुत राज़ी होते हैं :-

1. एक वह शख़्स जो अपने नर्म नर्म बिस्तर पर लिहाफ़ के अंदर महबूबा बीवी के साथ लिपटा हो और एकदम बशाशत के साथ वहां से उठ कर नमाज़ के लिये खड़ा हो जाये। हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों के सामने उस शख़्स पर तफ़ाख़ुर फ़रमाते हैं।

2. दूसरा वह शख़्स जो एक लश्कर के साथ मिलकर जिहाद में शिर्कत कर रहा हो और वह लश्कर शिकस्त खाकर भागने लगे और उसमें से कोई शख़्स भागने में अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ौफ़ करे और तने तंहा वापस होकर मुक़ाबला करे, हत्ताकि शहीद हो जाये, तो हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़रमाते हैं कि देखो, मेरा यह बंदा मेरे इनामात में रग़्बत और मेरी नाराज़ी के ख़ौफ़ से लौटा, हत्ता कि उस का खून भी बहा दिया गया। *(मिश्कात)*

अब यह शख़्स जो वहां लौटा है, ज़ाहिर है कि मरने ही के वास्ते लौटा है कि जब पूरा लश्कर शिकस्त खाकर भागने लगा, तो उसमें एक आदमी क्या कर सकता है। इसके बावजूद हक़ तआला शानुहू इस पर तफ़ाख़ुर फ़रमाते हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमियों की ज़िन्दगी में बेहतरीन ज़िन्दगी उस शख़्स की है, जो अपने घोड़े की बाग हाथ में रखे, अल्लाह के रास्ते में उसकी कमर पर उड़ा उड़ा फिरे, जहां कहीं कोई घबराहट और ख़ौफ़ की बात सुन ले, फ़ौरन उसकी तरफ़ उड़ जाए, मौत और क़त्ल को ढूढ़ँता फिरता हो, जहां कहीं उसका गुमान हो, वहीं पहुँच जाए। *(मिश्कात)*

अगर ये हज़रात अल्लाह के रास्ते में अपने आपको ख़तरात में डाल दें, तो इन पर ऐतिराज़ मुश्किल है, बिलख़ुसूस जबकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद ये भी है :-

المجاهد من جاهد نفسه

"कामिल जिहाद करने वाला वह है, जो अपने नफ़्स से जिहाद करे" *(मिश्कात)*

दूसरी हदीस के अल्फ़ाज़ ये हैं :-

المجاهد من جاهد هواه

"असल मुजाहिद वह है जो अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सानी से जिहाद करे (और उसको मग़्लूब करे)। *(अत्-तशर्रुफ़)*

इसी लिये सूफ़िया की इस्तिलाह में इस का नाम जिहाद अक्बर है। खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी इस क़िस्म का मज़्मून नक़ल किया गया।

अल्लामा शामी रह॰ फ़रमाते हैं कि जिहाद की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है और क्यों न हो, जबकि उसका हासिल आदमी की सबसे ज़्यादा महबूब चीज़ जान को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना है, और अल्लाह की रिज़ा के वास्ते उस पर सख़्त मशक़्क़तें डालना है, और इस जिहाद से बढ़ कर नफ़्स को ताआत की पाबंदी पर मजबूर करना है और उसको उसकी ख़्वाहिशात से बचाना है। इसीलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब एक ग़ज़वे से वापस तशरीफ़ ला रहे थे, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया था :-

رجعنا من الجهاد الاصغر الى الجهاد الاكبر

"हम लोग छोटे जिहाद से अब बड़े जिहाद की तरफ़ लौट रहे हैं।"

एक दूसरी हदीस में हज़रत जाबिर रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ लोग ग़ज़वा करने वाले हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया, तुम बहुत अच्छा आना आए, क्योंकि जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर की तरफ़ आए यानी मुजाहदा करना बंदे का अपनी हवा-ए-नफ़्सानी से। *(अत्-तशर्रुफ़, 2)*

पस अगर ये हज़रात इस जिहादे अक्बर में अपने आपको मशक़्क़तों में डालें तो इसमें कोई इश्काल नहीं है। दुश्मन के मग़लूब करने के वास्ते अपने आप को मशक़्क़तों में डालना बाइसे अज्र है, न कि बाइसे ऐतिराज़। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है :-

"तेरा सबसे बड़ा दुश्मन तेरा नफ़्स है जो तेरे दो पहलुओं के दर्मियान में है।"

लिहाज़ा इस बड़े दुश्मन को मग़्लूब करने के वास्ते भूखा रहना, प्यासा रहना, ख़तरात में अपने को डालना, मशक़्क़तों को बर्दाश्त करना, जहां तक किसी दूसरे अहम दीनी काम के नुक़्सान का सबब न बने, मर्ग़ूब है, हक़ तआला शानुहू इन मरमिटों के तुफ़ैल से उनके फ़ुयूज़ व बरकात का कुछ हिस्सा इस नापाक सियहकार को भी अता फ़रमावे, तो उसकी अता व करम से बईद नहीं कि वह करीम जिसको चाहे नवाज़ दे।

यह रिसाला शव्वाल सन् 1366 हि॰ में निज़ामुद्दीन के क़ियाम में लिखा